इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD

आज़ादी का अमृत महोत्सव

इंड छवि

अंक : 24, मार्च 2023

महिला विशेषांक

महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी

द्रौपदी मुर्मू न केवल भारतीय अपितु, संपूर्ण विश्व की महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। उन्होंने अपने जीवन की विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए न केवल सफलता हासिल की अपितु अपने जीवन को उस मुकाम तक पहुँचाया जो केवल महिला जगत के लिए ही नहीं बल्कि संपूर्ण मानव समाज के लिए भी सपना मात्र ही होता है।

20 जून, 1958 को ओडिशा के मयूरभंज जिले के उपरबेड़ा गांव में एक संथाली आदिवासी परिवार में जन्मी श्रीमती मुर्मू का प्रारंभिक जीवन कठिनाइयों और संघर्षों से भरा हुआ था। निजी जीवन के संघर्षों ने उन्हें थकाया नहीं बल्कि और भी मजबूत बनाया जैसे अग्नि में स्वर्ण की शुद्धता निखरती है वैसे ही जीवन की कठिनाइयों ने उनके व्यक्तित्व को निखारा और प्रभावशाली बनाया। आर्थिक रूप से देश के अल्प विकसित क्षेत्र से होने के बावजूद भी उन्होंने जागरूकता और शिक्षा के बल पर जीवन के विभिन्न संघर्षों का सामना करते हुए देश के सर्वोच्च पद तक के सफर को तय किया और अपने गरिमामय एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व से इस पद की शोभा बढ़ाई।

वे 1979 से 1983 तक ओडिशा सरकार के सिंचाई और बिजली विभाग में कनिष्ठ सहायक के रूप में कार्यरत रहीं। तदुपरांत, 1994 से 1997 तक उन्होंने, श्री अरबिंद इंटीग्रल एजुकेशन सेंटर, रायरंगपुर में मानद शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दीं। वर्ष 2000 में, वे रायरंगपुर निर्वाचन क्षेत्र से ओडिशा विधान सभा की सदस्य के रूप में चुनी गई और 2009 तक, दो कार्यकालों के लिए विधायक रहीं। उन्होंने 6 मार्च, 2000 से 6 अगस्त, 2002 तक ओडिशा सरकार के वाणिज्य और परिवहन विभाग की राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के रूप में तथा 6 अगस्त, 2002 से 16 मई, 2004 तक मत्स्य पालन और पशु संसाधन विभाग की राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के रूप में कार्य किया। उन्हें 18 मई, 2015 को झारखंड का राज्यपाल नियुक्त किया गया। वे, उस आदिवासी बहुल राज्य की पहली महिला आदिवासी राज्यपाल बनीं और अन्ततः उन्होंने देश के सर्वोच्च पद पर 25 जुलाई, 2022 को भारत की 15वीं राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण की।

उन्होंने, अपने गहन प्रशासनिक अनुभव और आदिवासी समाज के उत्थान हेतु, विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयासों के बल पर, अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। विधायक के रूप में उनकी विशिष्ट सेवाओं को ध्यान में रखते हुए, वर्ष 2007 में उन्हें ओडिशा विधान सभा द्वारा 'पंडित नीलकंठ दास – सर्वश्रेष्ठ विधायक सम्मान' से विभूषित किया गया। झारखंड के राज्यपाल के रूप में उनके द्वारा अनुकरणीय कार्य किए गए। संविधान की गरिमा को अक्षुण्ण रखने तथा जनजातीय समुदायों के अधिकारों का समर्थन करने के लिए व्यापक रूप से उनकी सराहना की गई।

देश के सर्वोच्च पद पर होते हुए भी उन्होंने अपनी उपस्थिति एवं भाषणों में सादगी और सरलता बरकरार रखी है। उनके शांत एवं सौम्य व्यक्तित्व में हमारी संपूर्ण भारतीय संस्कृति परिलक्षित होती है। उनका जीवन भारतीय महिलाओं के आत्मबल को प्रोत्साहित करने वाला है। समस्त महिलाएं उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा पाती हैं कि वे भी अपने जीवन को सामान्य व हेय दृष्टि से न देखकर उस शक्ति का आभास करें जो उनके जैसे उच्च स्थान तक पहुँचने के लिए अपेक्षित है। महामहिम राष्ट्रपति मुर्मू जी का व्यक्तित्व संपूर्ण स्त्री जगत के लिए पथ प्रदर्शक, अनुकरणीय एवं प्रेरणादायी है। यह हमारे लिए गौरव की बात है कि उनके जैसा श्रेष्ठ व्यक्तित्व हमारे देश के सर्वोच्च पद को सुशोभित कर रहा है। वे भारतीय महिला जगत के लिए एक उच्च आदर्श का प्रतिमान स्थापित करती हैं।

आपके संघर्षशील एवं गरिमामय व्यक्तित्व से संपूर्ण भारतीय महिला जगत आत्मगौरव की अनुभूति कर रहा है तथा जीवन की विषम परिस्थितियों में भी अदम्य साहस से संघर्ष करते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

इंडियन बैंक

इंड छवि

अंक - 24, मार्च 2023

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक

श्री एस.एल. जैन
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक

श्री इमरान अमीन सिद्दीकी : कार्यपालक निदेशक
श्री अश्वनी कुमार : कार्यपालक निदेशक
श्री महेश कुमार बजाज : कार्यपालक निदेशक

उप संरक्षक

श्री धनराज टी. : महाप्रबंधक (सीडीओ/राभा)

प्रधान संपादक

श्री अजयकुमार : सहायक महाप्रबंधक (राभा)

संपादक

श्री भूपेश बारोट : प्रबंधक (राभा)

संपादन सहयोग

श्रीमती एम. सुमति : मुख्य प्रबंधक (राभा)
श्री केदार पंडित : वरिष्ठ प्रबंधक (राभा)
सुश्री आलोचना शर्मा : वरिष्ठ प्रबंधक (राभा)
श्री चंदन प्रकाश मेंढे : वरिष्ठ प्रबंधक (राभा)
श्री राजेश गोंड : वरिष्ठ प्रबंधक (राभा)
सुश्री श्वेता गंगिरेड्डी : प्रबंधक (राभा)
श्री सूरज प्रसाद साव : प्रबंधक (राभा)
श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : प्रबंधक (राभा)

मुद्रक : आर एन ग्राफिक - 8010872289

पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं रचनाओं में व्यक्त विचार, लेखकों के अपने हैं। इंडियन बैंक का उनसे सहमत होना जरूरी नहीं है।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों/रचनाओं के लेखकों/रचनाकारों से मौलिकता प्रमाणपत्र प्राप्त कर लिया गया है।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश	
2.	संपादकीय: सहायक महाप्रबंधक (राभा)	
3.	किसी की खिलखिलाहटों पे हो निसार	4
4.	भारत की अग्निपुत्री	5
5.	पांडिचेरी के रंग	8
6.	बेटियाँ	10
7.	लोकल ट्रेन का महिला डिब्बा	11
8.	क्या हर बार कहना जरूरी है?	12
9.	शासकोत्तम राज्ञी	13
10.	मैराथन और मैं	16
11.	फिर भी सदा रही आभारी	17
12.	उसने विश्वास किया... वह कर सकती थी और इसलिए उसने किया	18
13.	वैदिक भारत के नारीवाद के प्रतीक	19
14.	हाड़ी रानी	22
15.	कल्पना दत्त - वीर महिला	23
16.	महिला सशक्तिकरण	24
17.	महाश्वेता देवी	25
18.	मेहरुन्निसा परवेज और नारी उत्थान संघर्ष	26
19.	अहमियत	28
20.	एक कहानी मेरी भी...	29
21.	गीतांजलि श्री - हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर..	31
22.	नई पी.ओ.	32
23.	संस्मरण - अविस्मरणीय क्षण	33
24.	महिला सशक्तिकरण - अवधारणा एवं आवश्यकता....	35
25.	स्वाधीन स्त्री की पराधीनता	36
26.	नारी हूँ मैं	38
27.	ऐ स्त्री	38
28.	वो नारी है...	39
29.	मैं नारी हूँ	39
30.	स्त्री	40
31.	नारी भाव	40

सम्पर्क सूत्र :-
इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय,
राजभाषा विभाग, 254-260, अव्वै षण्मुगम सालै,
रॉयपेट्टा, चेन्नै - 600 014
वेबसाइट : www.indianbank.co.in
ई-मेल : hoolc@indianbank.co.in

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश ....

इंड-छवि का "महिला विशेषांक" आप सब के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

मानव जीवन की केंद्रीय भूमिका में नारी है। सामान्यत: पेशेवर महिलाएं निष्ठावान एवं समर्पित होती हैं। समाज के पूर्ण विकास एवं सभ्य स्वरूप का पूरा दारोमदार महिलाओं पर निर्भर है। स्त्री संस्कार एवं शिक्षा की जननी है। वे दुनिया को जोड़ने वाली सबसे ताकतवर शक्ति है।

आज के युग में नारी सामर्थ्यशाली है तथा समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी गरिमामयी उपस्थिति दिखाई देती है। हमारे देश की महामहिम राष्ट्रपति महोदया से लेकर राजनीति, खेलकूद, कारोबार, प्रशासन एवं अन्य कई उच्च पदों पर महिलाएं कुशलतापूर्वक अपने नेतृत्व का निर्वहन कर रहीं हैं। चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों यथा रक्षा, पुलिस, अनुसंधान इत्यादि में भी ये अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहीं हैं।

आज पारंपरिक उद्योगों से लेकर नवीन तकनीक आधारित व्यवसायों में भी नारियों की शीर्ष भूमिका है। ऐसी कई महिलाओं के उदाहरण हैं जो केवल भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में विभिन्न क्षेत्रों में दिए गए महत्वपूर्ण योगदानों के लिए जानी जाती हैं। वे घर एवं कार्यस्थल, दोनों स्थानों पर अपनी जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निर्वहन कर रहीं हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि महिलाओं की आबादी में, कामकाजी महिलाओं को प्रेरणास्त्रोत के रूप में देखा जाता है किन्तु इनका जीवन चुनौतियों से भरा हुआ होता है। यदि बैंकिंग क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की बात करें तो आप पाएंगे कि चाहे वे शाखा प्रबंधक हों, लिपिकीय संवर्ग की हों या अन्य किसी संवर्ग की, प्रत्येक क्षेत्र में महिला अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण कर्मठता एवं समर्पण से निभाया जा रहा है। ये महिलाएं बड़ी निपुणता से कार्यालय प्रबंधन का कार्य कर रही हैं। उनके सामने चुनौती होती है, कार्यालय और घर के बीच संतुलन बनाना लेकिन इसका निर्वाह भी वह बखूबी करती हैं। हमारे बैंक में महिलाओं को बराबर का दर्जा दिया जाता है और बैंक के प्रबंधन में उनका अद्वितीय योगदान है।

हमारे बैंक में महिलाओं की सुरक्षा एवं सम्मान का पूरा ध्यान रखा जाता है। बैंक की सभी गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में बैंक की महिलाकर्मियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। हमारे बैंक द्वारा विशेष रूप से महिलाओं के लिए जमा एवं ऋण उत्पाद तैयार किये गए हैं जिसमें 'इंड महिला शक्ति', 'एसएचजी शक्ति' (ऋण उत्पाद) 'एसएचजी निर्मल' (ऋण उत्पाद), 'एसएचजी गृहलक्ष्मी' (ऋण उत्पाद) एवं 'आईबी एमएसएमई सखी' (ऋण उत्पाद) प्रमुख है। हमारा बैंक महिला उन्नयन पर विशेष जोर देता है तथा उनके हितों का ध्यान रखता है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

एस.एल. जैन

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संपादकीय

हिंदी पत्रिका 'इंड-छवि' के महिला विशेषांक के माध्यम से आप सभी के समक्ष अपने विचार साझा कर रहा हूँ।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'

संस्कृत भाषा की उपरोक्त सूक्ति हम सभी बाल्यकाल से सुनते, पढ़ते एवं समझते आए है तथा यह नारी महात्म्य का केन्द्र बिन्दु भी है।

समाज ने इसके महत्त्व को बहुत पहले ही समझ लिया था इसीलिए एक सभ्य, सुसंस्कृत एवं विकसित समाज के लिए नारी के प्रति श्रद्धा भाव के दृष्टिकोण को अपनाया गया। हम सभी अपने जीवन का प्रारंभ मातृशक्ति के स्नेह एवं लालन-पालन के आश्रय में ही करते हैं अर्थात् सृष्टि में जीवन को गति प्रदान करने में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। स्त्री, माता, बहन, मित्र, जीवनसाथी आदि कई रूपों में अपने स्नेह, सहयोग एवं मार्गदर्शन से हम सभी के जीवन को एक नई दिशा प्रदान करती है।

यदि पृथ्वी पर नारी शक्ति नहीं होती तो हम एक सभ्य एवं सुसंस्कृत जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। अनादिकाल से स्त्रियां समाज एवं सभ्यताओं की उन्नति एवं विकास के लिए अपनी विशिष्ट भूमिका निभाती आ रही हैं। नारी सहनशीलता एवं शक्ति का अद्‌भुत समन्वय है जो विकट से विकट परिस्थितियों में धैर्य के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करती हुई, समाज को नई दिशा प्रदान करती है। नारियों ने संघर्ष करते हुए राजनीति, साहित्य, शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित की हैं।

आज नारियां पुरुषों से किसी भी मायनों में कम नहीं है और घर की चारदीवारी में कैद भी नहीं हैं। वे उच्च शिक्षा प्राप्त करके, डॉक्टर, बैंकर, इंजीनियर, वैज्ञानिक व अंतरिक्ष यात्री हैं तथा हर क्षेत्र में उच्चतम पदों पर भी आसीन हैं। नारियों ने साबित कर दिया है कि वे पुरुषों के समकक्ष नहीं, बल्कि उनसे बेहतर हैं।

इस अंक में हमने हमारे बैंक की महिलाकर्मियों की रचनाओं एवं विचारों को शामिल किया है तथा यह विशेषांक नारी केन्द्रित विचारों एवं विषयों पर आधारित है।

अजयकुमार
सहायक महाप्रबंधक (राभा)

किसी की खिलखिलाहटों पे हो निसार

रश्मि कुशवाहा
प्रबंधक, (एम ए पी सी)
दिल्ली साउथ

महिला सशक्तिकरण एक ऐसा विषय है, जिस पर शायद तब से लिखा जा रहा है, जब से लिपि का विकास हुआ। लेकिन अब भी बहुत कुछ ऐसा है जो कहा जाना बाकी है। कहते हैं कि एक स्त्री का मन समंदर की तरह गहरा होता है, जिसकी टोह लेना आसान नहीं है परन्तु यह भी सच है कि इस समंदर में आने वाले ज्वार-भाटा पूर्णत: बाहरी ग्रहण पर निर्भर करते है या यूँ कहें कि उन्हीं ग्रहण की प्रतिक्रिया होती है।

अपने अंदर की ऐसी ही एक लहर मैं आपसे साझा करना चाहती हूँ। मेरे बचपन में टेलीविजन पर आने वाला एक शो मुझे याद है। जिसमें सभी प्रतिभागियों को एक नियत समय सीमा में लोगों को हंसाना होता था। वो शायद पहला स्टेण्डअप कॉमेडी शो था। तकरीबन 10 एपीसोड और 120-130 प्रतिभागियों के बाद उसमें पहली महिला प्रतिभागी आई, सबने इसे बड़े सहज ढंग से लिया। जबकि गाने, अभिनय, नृत्य किसी भी और कार्यक्रम में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग पुरुषों के बराबर ही रहती है। यहाँ मजे की बात यह है, उस शो में भी एंकर एक महिला ही थी। अगर हम सिनेमा की बात करें तो आपको कितनी हास्य महिला कलाकारों के नाम याद हैं? या कितनी स्टेण्डअप कामेडियन प्रसिद्ध हुई हैं? कुछ ही नाम जिन्हें हम उंगलियों पर गिन सकते हैं, जैसे- भारती सिंह, सुगंधा मिश्रा। जबकि मनोरंजन जगत में महिला-पुरूष अनुपात लगभग बराबर पर आ पहुँचा है। तब प्रश्न यह है कि क्या वाकई महिलाओं में सहज हास्य की कला नहीं होती है। जिसे हम आसान शब्दों में सेंस-ऑफ-ह्यूमर कहते हैं।

जी नहीं जनाब। ह्यूमर का जेंडर से कोई खास संबंध नहीं है। इसकी जड़ में कई कारण हैं। पहला है, हमारी सामाजिक व्यवस्था। बेटियों की खिलखिलाहटों से हमारे घर रोशन हैं, जब तक वो बाल सुलभ कहकहें हो। पर युवा होती बेटी को मुँह खोल कर हँसने पर फटकारा जाता है। बोलने से पहले सोचा करो, अपने आस-पास तो देखो, जो बोला है उसके और क्या-क्या मतलब निकलते हैं, पता है? इतनी जोर से मत हँसो, दांत क्यों निकाल रही हो। ये सब वाक्य गाहे-बगाहे हमें सुनाई दे जाते हैं। खुल कर हँसना जो कि एक सहज प्रतिक्रिया है, बहुओं को सीधे बदतमीजी का तमगा देती है। सार्वजनिक स्थानों पर खिलखिलाने को तो ध्यान आकर्षण का पर्याय ही समझा जाता है, ज्यादा निष्ठुर शब्दों में "आमंत्रण"।

यहाँ महिलाओं की अपनी असहजताएं भी हैं। चेहरे पर हाथ रख कर हँसने को, हम लड़कियों की तरह हँसना कहते हैं। गोया कि लड़कियां हमेशा मुहँ पर हाथ रख कर हसँती हैं। क्योंकि वे नहीं चाहती कि वे किसी भी पल बेढंगी लगें। कहीं दांत ना ज्यादा दिखें, आँखें न बंद हो जाए, होंठ अजीब ना लगे। मतलब..... दिमाग प्रतिक्रिया देते समय भी इस चीज पर केन्द्रित है कि हम "खूबसूरत" दिखें। हम खुद पर मजाक नहीं बना सकते। हर समय अपनी उपस्थिति और सुंदरता को लेकर सतर्क हैं।

हास्य, जो इंसान पर खुदा की रहमत है, उसे कैसे जाया होने दे सकते हैं? हमारी मुस्कुराहटों पर तो जाने कितने गीतकारों, गजलकारों ने कलमें घिस दी। पर मुस्कुराहटें बनावटी भी होती हैं, शातिर भी, कुटिल भी, दर्दभरी भी। मैं यहाँ बात कर रही हूँ, एक रोकी ना जा सकने वाली एक दिल खोल खिलखिलाहट की, जिस पर सबका हक है। यूँ भी कहते हैं, खुल के हँसने से खून बढ़ता है। विश्व की 85 प्रतिशत महिलाएं सारी जिंदगी खून की कमी से जूझती रहती हैं। इसी खून को सहेज लीजिए, जीवन सृजन के काम आएगा। तो अब खिलखिलाइये! क्योंकि ये आपका हक है और जरूरत भी।

भारत की अग्निपुत्री

सिंधु पी एस
मुख्य प्रबंधक(राभा)
इमेज

श्रीमती टेस्सी थॉमस भारत की प्रसिद्ध महिला वैज्ञानिक हैं। उन्हें 'भारत की अग्निपुत्री' और 'मिसाइल वुमन ऑफ इण्डिया' कहा जाता है। उन्होंने अपना अब तक का सारा जीवन भारत की अग्नि मिसाइल के अनेक उन्नत एवं परिष्कृत संस्करणों के लिए अनुसन्धान करने एवं उन्हें विकसित करने में ही बिता दिया है। भारत की 3500 कि.मी. तक मार करने वाली अग्नि-4 मिसाइल के सफल परीक्षण के बाद से ही रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की महिला वैज्ञानिक डॉ. टेस्सी थॉमस को 'अग्निपुत्री' के नाम से ही सम्बोधित किया जाने लगा था।

परिचय

डॉ. टेस्सी थॉमस का जन्म अप्रैल, 1964 में केरल के एक कैथोलिक परिवार में हुआ था। इनका नाम शांति की दूत नोबेल पुरस्कार विजेता मदर टेरेसा के नाम पर रखा गया। टेस्सी थॉमस जब स्कूल में पढ़ा करती थीं, उन दिनों 'नासा' का अपोलो यान चाँद पर उतरने वाला था। इन्हें रोजाना उस यान के बारे में सुनकर प्रेरणा मिल रही थी। उन्होंने सोचा कि एक दिन ऐसा एक रॉकेट बनाया जाए, जो इसी तरह आसमान की ऊंचाई को छू सके। उन दिनों यह टेस्सी थॉमस का एक सपना था। अग्नि-5 की सफलता से केवल टेस्सी थॉमस की मेहनत, लगन और प्रतिभा का ही सपना पूरा नहीं हुआ है बल्कि एक वह सपना भी पूरा हुआ है जो इस देश को स्वदेशी रॉकेट और मिसाइल तकनीक से वैज्ञानिक और सामरिक रूप से अपने पैरों पर खड़ा देखने के लिए बरसों पहले भारत के शीर्ष वैज्ञानिकों विक्रम साराभाई और सतीश धवन ने देखा था।

शिक्षा

टेस्सी थॉमस ने त्रिचुर इंजीनियरिंग कॉलेज, कालीकट (केरल) से बी. टेक. किया और इसके बाद एम. टेक. के लिए पुणे स्थित 'डिफेन्स इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस टेक्नोलॉजी' की प्रवेश परीक्षा पास की। वे ये परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले तीन विद्यार्थियों में से एक थीं और ऐसा करने वाली प्रथम महिला भी थी। उनकी इसी प्रतिभा के कारण उन्हें 'गाइडेड मिसाइल एंड वेपन टेक्नोलॉजी' के विशेष कोर्स के लिए चुना गया। 1985 में राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा में प्रथम आकर टेस्सी थॉमस ने 21 वर्ष की आयु में ही देश के 'रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन' में कदम रखा और इस क्षेत्र में पुरुषों के प्रभुत्व को भी तोड़ा।

अग्नि-5 की परियोजना निदेशक

विश्व ने डॉ. टेस्सी थॉमस को तब केवल पहचाना ही नहीं बल्कि इनका लोहा भी माना, जब इन्होंने 19 अप्रैल, 2012 को देश की सामरिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण और महत्वाकांक्षी मिसाइल परियोजना में अग्नि-5 की प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रूप में अग्नि-5 की स्ट्राइक रेंज 5,000 किलोमीटर की मिसाइल का सफल परीक्षण कर दिखाया। भारत के लिए यह मात्र एक वैज्ञानिक उपलब्धि ही नहीं थी अपितु देश की सामरिक शक्ति और रक्षा कवच का भी पूरे विश्व को परिचय दिया गया था। आज भारत 'अंतर महाद्वीपीय मिसाइल प्रणाली' की क्षमता से लैस विश्व में ऐसा पांचवा देश है जो 5000 कि.मी. तक अपनी मिसाइल की मार से किसी भी शत्रु को उसके घर में ही ढेर कर सकता है और अपने नागरिकों को सुरक्षित रखने में सक्षम है। इसका सारा श्रेय डॉ. टेस्सी थॉमस को ही जाता है।

अग्नि-2 और अग्नि-5 तक के सभी संस्करणों को विकसित करने में डॉ. टेस्सी थॉमस की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किसी संस्करण में उन्हें असिस्टेंट डायरेक्टर तो किसी में एसोसिएट डायरेक्टर तो कभी एडिशनल डायरेक्टर के रूप में काम करने का मौका दिया गया और अग्नि-5 के संस्करण के लिए उन्हें मिशन-डायरेक्टर के रूप में कार्य करने का मौका दिया गया जिसे उन्होंने सफलता के साथ पूरा किया। आज वे अग्नि परियोजना की निदेशक हैं। अग्नि-5 के परीक्षण के लिए डॉ. टेस्सी थॉमस को मिशन डायरेक्टर नियुक्त किया गया था जिसमें इसका डिजाईन, निर्माण और अचूक परीक्षण का पूर्ण कार्यभार उन्हीं के कंधों पर रखा गया था। इस जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए टेस्सी थॉमस ने लगातार तीन वर्षों तक काम किया। इस प्रोजेक्ट में देश में फैली लगभग दर्जन भर रक्षा और सार्वजनिक क्षेत्र की प्रयोगशालाओं के छोटे-बड़े लगभग 1000 वैज्ञानिकों के साथ समन्वय करके जोखिम भरी तकनीकों पर काम के साथ डॉ. टेस्सी थॉमस ने सफलता पूर्वक उनका नेतृत्व किया।

अग्नि मिसाइल परियोजना देश की एक बहुत बड़ी वैज्ञानिक परियोजना है जिसमें देश की दर्जनों प्रयोगशालाएँ शामिल हैं। इसमें एक हजार से भी ज्यादा वैज्ञानिक शामिल हैं। लगभग 200 महिला वैज्ञानिक भी अपनी विशेषज्ञताओं के साथ इस परियोजना में शामिल हैं और उनमें से लगभग आधा दर्जन महिला वैज्ञानिक, इंजीनियर तो डॉ. टेस्सी थॉमस के साथ सीधे उसी प्रयोगशाला में कार्यरत हैं जहाँ से ये इस महत्वपूर्ण परियोजना का नेतृत्व कर रही हैं। उनकी प्रयोगशाला हैदराबाद में 'एडवांस सिस्टम लेबोरेटरी', भारत ही नहीं, दुनिया की सबसे संवेदनशील प्रयोगशालाओं में गिनी जाती है। डॉ. टेस्सी थॉमस वैसे तो मिसाइल परियोजना से 1988 में जुड़ी थीं लेकिन वे वर्ष 2008 से इस परियोजना की डायरेक्टर हैं। जब अग्नि-5 परियोजना पर अंतिम चरण में काम चल रहा था तो उनकी कोर टीम के कई सदस्य और वे स्वयं लगभग महीनों तक अपने घर नहीं गए थे जिनमें आधा दर्जन वे महिला वैज्ञानिक भी शामिल थीं जो टेस्सी थॉमस के साथ सीधे जुड़ी थीं। इसका एक बड़ा कारण यह भी था कि अग्नि-3 का पहला परीक्षण विफल हो चुका था और उस विफलता की पुनरावृत्ति ये वैज्ञानिक दुबारा नहीं होने देना चाहते थे।

एक विनम्र और साधारण सी लगने वाली डॉ. टेस्सी थॉमस, अग्नि प्रयोगशाला में अपने विषय 'सालिड प्रोपेलेट्स सिस्टम' (ठोस प्रणोदक प्रणाली) की देश में चोटी की विशेषज्ञ हैं। इसी विशेषता के कारण ही वे इस परियोजना की निर्देशक होने का गौरव पाती हैं। डॉ. टेस्सी थॉमस को अग्नि के परिष्कृत संस्करण विकसित करने की सम्पूर्ण जिम्मेदारियाँ इसलिए भी दी गईं क्योंकि उनकी रॉकेट (ठोस प्रणोदक प्रणाली) में जो विशेषज्ञता है, उसके बिना किसी रॉकेट या मिसाइल को हवा में नहीं उड़ाया जा सकता है। साथ ही टेस्सी थॉमस की 'गाइडेड मिसाइल सिस्टम' में भी विशेषज्ञता है। यही विशेषता किसी रॉकेट को मिसाइल में बदलती है और उसे अचूक निशाने के लिए तैयार करती है। इन दोनों विशेषज्ञताओं का एक साथ मिलन विश्व के एक दो वैज्ञानिकों में ही मिलता है। उनमें से एक डॉ. टेस्सी थॉमस भी हैं। ये भारत के लिए लाभान्वित होने का ही नहीं बल्कि गौरवान्वित होने का भी विषय है।

आरईवीएस तकनीक का विकास

टेस्सी थॉमस के अनुसार एक गरीब देश की जनता के गाढ़े खून-पसीने की कमाई को सभी वैज्ञानिक किसी भी कीमत पर व्यर्थ नहीं होने देने के लिए कृत संकल्पित थे। उनकी पूरी टीम ने अथक प्रयास किए। एक-एक तकनीक को कई बार कई अलग-अलग टीम ने जांचा-परखा, तब जाकर सभी में एक विश्वास का संचार हो पाया। अग्नि-5 की हर तकनीकी जाँच की अग्निपरीक्षा इतनी कठोर थी कि इसमें कभी कोई भी तकनीकी दिक्कत नहीं आई लेकिन जिस दिन इसका परीक्षण/लांच निर्धारित किया गया, उस दिन मौसम का हाल बुरा हो गया और सभी वैज्ञानिकों को निराशा ने घेर लिया। डॉ. टेस्सी के अनुसार, उनकी माँ खुद बार-बार फोन करके पूछती रहीं कि उड़ान में देरी का कारण क्या है? लेकिन मिशन टीम का हर सदस्य 'मिशन कमांड कण्ट्रोल सेंटर' से हिला नहीं, जो कई महीने से घर नहीं गए थे। अचानक उन सबकी हठ के आगे मौसम ने हार मान ली और मौसम ठीक हो गया। कुछ घंटों की देरी के बाद अग्नि-5 का सफल परीक्षण होकर रहा और इस सफलता ने देश को आईसीबीएम क्षमता धारक देशों के क्लब की प्रथम पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया। ये सब देश की अग्निपुत्री डॉ. टेस्सी थॉमस के संकल्प से ही संभव हो पाया।

टेस्सी थॉमस को इस मौसम की मार के अनुभव ने एक और प्रेरणा दे डाली और उसका परिणाम यह हुआ कि टेस्सी ने एक महत्वपूर्ण मिसाइल तकनीक 'Re Entry Vehicle System' (आरईवीएस) का भी स्वदेश में ही विकास कर लिया जो भारत को विश्व के एक-दो देशों के पास होने पर इसलिए उपलब्ध नहीं हो पा रही थी कि उन देशों ने पोखरण परमाणु परीक्षण के बाद भारत की कई प्रयोगशालाओं के प्रयोगों

को उपकरण और तकनीक देने पर प्रतिबंध लगा दिए थे। यह अत्याधुनिक आरईवीएस तकनीक मिसाइल को विपरीत मौसम की परिस्थितियों में भी अनुकूल बना देती है और 3000 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान में भी सक्रिय और अचूक निशाने तक पहुँचने से नहीं रोक सकती है। यह तकनीक लम्बी दूरी की मिसाइल को वायुमंडल से बाहर जाकर फिर से वायुमंडल में आकर अपने लक्ष्य को भेदने में सक्षम बनाती है जिससे शत्रु को मौसम खराब होने पर भी सर्दी, गर्मी और बरसात के किसी भी मौसम में उसी के पाले में जाकर सबक सिखाया जा सके। ये सभी मिसाइल तकनीक भारत की केवल वैज्ञानिक उपलब्धियां ही नहीं हैं, बल्कि ये सब मिलकर भारत को एक सामरिक सुरक्षा कवच प्रदान करती हैं। जबकि भारत एक परमाणु शस्त्र संपन्न देश है। उसे कभी भी किसी भी स्थिति में अपने परमाणु शस्त्र को इन मिसाइलों के जरिये हजारों कि.मी. तक मार करने के लिए प्रयोग करना पड़ सकता है। तब यही तकनीक इस देश के हर नागरिक की सुरक्षा की गारंटी होगी जो अग्निपुत्री के करकमलों से प्राप्त हुई है।

अग्निपुत्री

जिस प्रकार डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम को "भारत का मिसाइल मेन" कहा जाता है क्योंकि उन्होंने अपना सारा जीवन देश के मिसाइल कार्यक्रम के अंतर्गत- पृथ्वी, आकाश, अग्नि, नाग, धनुष, त्रिशूल और ब्रह्मोस जैसी मिसाइलों के अनुसन्धान और विकास को समर्पित किया है। उसी प्रकार डॉ. टेस्सी थॉमस के लिए 'अग्निपुत्री' का नाम एकदम उपयुक्त है क्योंकि उन्होंने इसी मिसाइल परियोजना में अग्नि मिसाइल के लगभग सभी संस्करणों को जन्म दिया है। वे डॉ. अब्दुल कलाम को अपना गुरु मानती हैं जो भारत के मिसाइल कार्यक्रम और परियोजना के जनक रहे थे।

अपनी प्रतिभा, मेहनत एवं लगन से 1988 में डॉ. टेस्सी थॉमस भारत की मिसाइल परियोजना में शामिल हुई तब डॉ. अब्दुल कलाम इस परियोजना का नेतृत्व कर रहे थे। टेस्सी थॉमस जो डॉ. कलाम को अपना गुरु मानती हैं और कहती हैं- "मीडिया उन्हें अग्निपुत्री या मिसाइल वुमन की कोई भी संज्ञा दे या इससे संबोधित करे, लेकिन डॉ. कलाम की प्रतिभा और लगन के साथ देशप्रेम के आगे वे आजीवन नतमस्तक ही रहेंगी।" डॉ. कलाम के साथ उन्होंने अनेक वर्षों तक कार्य किया। वह अनुभव ही उनके लिए आज भी काम आ रहा है, जो उन्होंने डीआरडीओ में डॉ. अब्दुल कलाम के नेतृत्व में मिसाइल परियोजना में उनके साथ काम करते हुए प्राप्त किए थे।

कुशल गृहिणी

डॉ. टेस्सी थॉमस एक का दूसरा रूप और भी है। वे एक कुशल गृहिणी भी हैं। जब भी घर पर होती हैं तो कम से कम एक समय खुद खाना बनाती हैं। एक टीवी चैनल को तो उन्होंने समय बचाने के लिए अपनी रसोई से ही इंटरव्यू दे दिया था। उनके पति कोमोडोर सरोज कुमार भारतीय नौसेना में तैनात हैं। पुत्र का नाम तेजस है, जो भारत में स्वदेशी तकनीक से निर्मित हल्के लड़ाकू विमान 'तेजस' के नाम पर ही रखा गया है। टेस्सी थॉमस के माता-पिता विज्ञान पृष्ठभूमि से नहीं थे। पिता एक अकाउंटेंट और माता एक शिक्षिका थीं लेकिन शुरू से ही टेस्सी को गणित और विज्ञान में ही रूचि थी, जिसने उनको आज इस मुकाम तक पहुँचाया है।

पुरस्कार व सम्मान

एक महिला वैज्ञानिक होने के नाते किसी भी प्रकार की विशेष छूट या सुविधा का टेस्सी थॉमस हर समय विरोध करती हैं। उनका मानना है कि- "विज्ञान में प्रतिभा सर्वश्रेष्ठ होती है, यहाँ कोई जेंडर कमजोर या मजबूत नहीं होता बल्कि प्रतिभा ही उसे मजबूत बनाती है और विज्ञान में इसलिए कोई जेंडर नहीं होता है।" ये उनकी पंक्तियाँ या सूक्ति वाक्य है, जो दुनिया की सभी प्रयोगशालाओं में उनके नाम के साथ सुनाई या गाई जाती हैं।

2013 में भुवनेश्वर में आयोजित 'भारतीय विज्ञान कांग्रेस' के अधिवेशन को संबोधित करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने टेस्सी थॉमस को "भारत की वैज्ञानिक रत्न" की संज्ञा देते हुए ही देश की महिलाओं को विज्ञान के क्षेत्र में आकर काम करने का आह्वान किया था। डॉ. टेस्सी थॉमस की तुलना उन्होंने नोबेल पुरस्कार विजेता विजेता मैडम क्यूरी से कर डाली थी। डॉ. टेस्सी थॉमस को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। भारत के राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के हाथों उन्हें 'लाल बहादुर शास्त्री नेशनल अवार्ड-2012' से नवाजा गया है। साथ ही 2001, 2007, 2008 में डीआरडीओ की ओर से उन्हें विशेष तकनीकों के विकास के लिए पांच बार पुरस्कृत किया गया है। 'कल्पना चावला पुरस्कार', 'सुमन शर्मा पुरस्कार' जैसे वैज्ञानिक क्षेत्र के प्रतिष्ठित पुरस्कार और 'इंडिया टुडे वुमन ऑफ द ईयर का किताब' 2009 में दिया गया।

पांडिचेरी के रंग

भारती प्रधान
वरिष्ठ प्रबंधक (सूप्रौ)
आर एण्ड जी आर, मुंबई

मन तो हवा सा चंचल होता है, पल भर में यहां तो पल भर में वहां। बैंक में साथ लगी, अपनी बैचमेट सखियों से बात करते हुए, मन भाग के उस दौर में पहुंच जाता है, जब कॉलेज खत्म करके नए-नए नौकरी में लगे थे। अल्हड़ सी जवानी, सब हासिल कर लेने का हौसला और हर चीज में जमकर आनंद लेने का मजा।

वह दौर हम काफी पीछे छोड़ चुके हैं। बीस साल की नौकरी और जीवन के उतार-चढ़ाव में मेरी बैचमेट सखियां, कब सखियों से सिर्फ बैचमेट बन गई और कब तू से आप बन गई पता ही नहीं चला।

इतने वर्षों में एक आध बार सभी से लगभग मुलाकात हो ही चुकी है और कभी-कभार काम के सिलसिले में बातचीत भी होती रहती है। पर उस दिन चैताली और रश्मि से बात करते-करते, हम पुराने दिनों में पहुंच गए और मन बना लिया कि एक बार फिर से उन दिनों को जिया जाए।

पांडिचेरी में सभी का मिलना तय हुआ और एक व्हाट्सएप ग्रुप के जरिए सभी ने अपने आने-जाने और ना आ पाने का ब्यौरा साझा किया। बस शुरू हो गया कपड़े, चप्पल और अपनी सहेलियों के लिए कुछ भेंट खरीदने का सिलसिला। देखते देखते वह दिन भी आ गया जब मुझे मुंबई से चेन्नई जाना था। लेस वाली भूरे रंग की टॉप और नीली जींस पहनकर, मैं घर से निकली। दिसंबर की सुबह की हल्की ठंड थी। लोकल ट्रेन से हवाई अड्डे तक जाना था। ट्रेन लगभग खाली थी और ट्रेन के तेजी पकडते ही ठंडी हवाएं थपेड़े देने लगीं। हवाई अड्डे के वातानुकूल ने शरीर को थोड़ा और ठंडा कर दिया। लगने लगा, इस स्टाइल के चक्कर में तबीयत ना खराब हो जाए। खैर सुबह 10:30 बजे मैं चेन्नई पहुंच गई तय हुआ था कि मुझसे पहले पहुंची हुई मेरी सहेलियां मेरा स्वागत फूलों के हार के साथ करेंगी। हवाई अड्डे से बाहर निकल कर, मैं बेसब्री से रश्मि और चैताली का इंतजार कर रही थी, पर दूर से शालिनी को सफेद रंग की कढ़ाई वाले सूट में मेरी ओर आता देखना, मेरे लिए कुछ सुखद आश्चर्य था। उनके पीछे पीछे रश्मि और चैताली गुलाब के फूलों का बडा सा, हार, शॉल और मेरा नाम लिखा हुआ बोर्ड लेकर मेरी ओर आती दिखी। उन्हें देखते ही मैंने तुरंत वापस हवाईअड्डे के निकास से बाहर निकलने का नाटक किया और तीनों ने शॉल और हार के साथ मेरा स्वागत किया। शालिनी ने ढेरों फोटो खींचे। लोगों को लगा कि कोई बडी हस्ती का आगमन हुआ है। सबकी हैरत भरी निगाहें देखकर, मन में गुदगुदी-सी होने लगी। हमारी मस्ती का सिलसिला वहीं से शुरू हो गया। खिलखिलाते और मुस्कुराते हुए, हम अपने मित्र द्वारा भेजी हुई कार में बैठकर चेन्नई के बड़े मॉल में पहुंचे।

औरतों और खरीदारी का एक अलग ही रिश्ता है। अगर हम उदास हों तो खरीदारी हमारी उदासी को खुशी में बदल देती है और अगर खुश हो तो खरीदारी हमें सातवें आसमान पर पहुंचा देती हैं। बस! फिर क्या, बैचमेट सहेलियां एक-दूसरे से मिलकर यूं भी हवाओं में उड़ रहीं थीं। मॉल की हर चीज जैसे हमें जोर-जोर से बुला रही थी। हमने जरूरत ना होने पर भी काफी कुछ खरीदारी की। मॉल में घूम-घूम कर भरपूर आनंद लिया और निकल पड़े चेन्नई की रेशमी साड़ी खरीदने। चेन्नई सिल्क नामक दुकान की ढेरों साड़ियां में मन अटकते हुए आखिरकार चैताली ने खूबसूरत साड़ी खरीद ही ली। हमारी हंसी और खुशी इतनी संक्रामक थी कि वहां की महिला विकेता भी हमारी सखी बन गई घूमते-फिरते, हम रात को रश्मि के घर पहुंचे। शालू अतिरिक्त गद्दों और चादरों के साथ रश्मि के घर आई हमारे लिए इतना सोचना और इतना भारी समान लाद कर आना, यह देखकर शालू को गले लगा लेने का मन किया।

रश्मि ने एक और आश्चर्य संजो के रखा था। रात को बैचमेट बैंक के बाकी सहकर्मियों के साथ होटल में रात्रि भोजन था। हम सभी अपनी सुंदर साड़ियों में तैयार होकर होटल पहुंचे। सब से मिलना एक मेला सा लग रहा था। आखिर में शिल्पा

पहुंची और रश्मि ने उसका स्वागत भी शॉल ओढ़ा के किया, जैसा उसने हम सभी महिला सहकर्मियों का किया था। पुरुष सहकर्मी हमारी जिंदादिली पर अवाक् थे। पर हमारा तो धर्म है, बेरंग सी जिंदगी में रंग भरना। सभी से मिल कर मेल जोल बढ़ा कर लगा जैसे अपना एक परिवार चेन्नई में हो।

अगली सुबह हमें पांडिचेरी जाना था। रश्मि ने गाड़ी का इंतजाम कर रखा था। पर गाड़ी-चालक तमिल के अलावा कुछ भी ठीक से बोल नही पा रहा था। हमारे लिए एकदम सटीक चालक था। हम रास्ते भर खुल कर अपनी बातें करते और गाना सुनते पांडिचेरी पहुंचे। रास्ते में एक सुंदर से ढाबे पर खाना खाया, दक्षिण भारतीय पोडी-डोसा और कॉफी का स्वाद अब भी भुलाया नही जा रहा था।

पिछली सुबह के स्टाइल ने असर दिखाना शुरू कर दिया था और पांडिचेरी पहुंचने तक मुझे हल्का बुखार हो चुका था। भला हो शिल्पा का जो साथ में शॉल ले कर चली थी। उसकी शॉल मेरे बहुत काम आई पांडिचेरी शहर से दूर एक वीरान से इलाके में हम रुके थे। ऐसा लग रहा था जैसे किसी की नई-सी हवेली हो। हम तो चाहते ही थे की हमें परेशान करने वाला आस-पास कोई न हो। लोग क्या वहां तो मोबाइल नेटवर्क भी नही था। बच्चों के जैसे, सामान एक कोने पर छोड़ हमने पूरी हवेली को ऊपर से नीचे तक घूम लिया जैसे पूरी हवेली हमारी हो। सीढ़ी पर, छत पर, बरामदे में, आंगन में, हर जगह विभिन्न शैलियों में हमने कई तस्वीरें ली।

वहां से हम सुनहरे गुंबद वाली औरोविले मातृ मंदिर देखने को गए। अब तक बुखार ने मेरे पूरे शरीर को जकड़ लिया था, चलने की बिल्कुल ताकत नहीं थी। पर सहेलियों के साथ ने एक नए जोश का संचार कर रखा था। धूप में चलते-चलते, रास्ते में बरगद का बड़ा झुंड देख, वहीं सुस्ताने का मन कर रहा था। हम लोग दो-दो की टोली में थे। मैं और शालिनी सबसे पहले गुंबद तक पहुंचे, चैताली और रश्मि सबसे आखिर में। चूंकि औरोविले मातृ मंदिर में मरम्मत का कार्य चल रहा था, सो सारा सफर एक मैराथन ही लगा। पांडिचेरी, फ्रांस की एक उपनिवेश बस्ती है सो हमने फ्रांस का जायका लेने की सोची। व्हाइट टाउन का पिज्जा काफी मशहूर हैं सो व्हाइट टाउन ढूंढा गया। अब तक चैताली के पैर जवाब दे चुके थे। काफी ढूंढने के बाद, शालिनी ने रेस्टोरेंट ढूंढ निकाला। शालिनी में शायद एक खोजकर्ता की आत्मा बसती है। काफी कम दाम में हमें गजब का पिज्जा और संडे आइसक्रीम खाने को मिली।

थोडा आराम करके शाम को हम पांडिचेरी का समुद्री तट घूमने निकले। हमने विदेशी पोशाक यानी लॉन्ग मिडिस पहनी। सभी को हरदम साडी और सलवार कमीज से अलग कुछ और पहना हुआ देखना बहुत अच्छा लग रहा था। पांडिचेरी का समुद्र तट अत्यधिक खूबसूरत है। जहां सड़क से सटा हुआ एक तरफ समुद्र तट है, वहीं दूसरी तरफ फ्रांसीसी स्टाइल में बनी हुई बड़ी-बड़ी सुंदर इमारतें हैं। सड़क पर मीलों दूर चलते हुए हमने रात की रोशनी का आनंद लिया और वही एक रेस्तरां में फ्रांसीसी और दक्षिणी मूल का खाना खाकर हम होटल वापस लौट आए। वापस होटल के कमरे में बैठ कर ढेर सारी गपशप की, एक देसी हिंदी गाने गाकर अर्थ समझ, गुरु माता शिल्पा के मजेदार प्रवचन और शालू के लाए केक के साथ हमने क्रिसमस मनाया।

पांडिचेरी में हमारा अगला दिन था। हमने दिन की शुरुआत अयप्पा मंदिर से की। मंदिर के बाहर विभिन्न प्रकारों के फूलों, खश और तुलसी के पत्तों की मालाएं लगी हुई थीं। माला बनाने की कारीगरी और मनमोहक खुशबू मन मुग्ध कर दे रही थी। मंदिर के बाहर, एक बड़ा सा हाथी बंधा था, जिसके पैरों पर पायल व शरीर पर कई डिजाइन बनी हुई थी। पहली बार हाथी का पायल देखना मेरे लिए बहुत ही अनोखा था। मंदिर के अंदर एक रथ पर भगवान की मूर्ति को मंदिर की परिक्रमा कराई जा रही थी। वह दृश्य भी देखने लायक था। पूजा अर्चना करके वहां से हम लोग नाश्ते के लिए बाहर निकले। बाहर निकल कर हमने रास्ते पे लगी दुकानों से कुछ खरीदारी की। शंख खरीदने से पहले सबने उसे फूंक के देखा।

'ब्रेड एंड चॉकलेट" नामक जगह पर हम नाश्ता करने गए। रेस्टोरेंट बाहर से देखने में बहुत ही भव्य और किसी के निजी मकान के जैसा दिख रहा था। पहले तो हमारी हिम्मत नहीं हुई, यह सोच कर कि शायद बहुत महंगा रेस्टोरेंट होगा। परंतु शिल्पा के अनुरोध पर हम सभी नाश्ता करने गए। अंदर घुसते ही बेकरी थी और पहली मंजिल पर रेस्टोरेंट था। सीढियां चारों ओर सुंदर पेड पौधों से सुसज्जित थी। ऊपर छत पर बैठने की व्यवस्था थी। बहुत ही सुंदर सफेद रंग के टेबल कुर्सी और चारों ओर विभिन्न प्रकार के बड़े-बड़े गमलों में खूबसूरत पौधों से सजा हुआ रेस्टोरेंट था। हल्की धूप छनकर आ रही थी और कई विदेशी लोग वहां बैठकर नाश्ता कर रहे थे। देखते ही एहसास

हुआ कि बहुत महंगी जगह होगी। परंतु एक बार इसका भी अनुभव लेना चाहिए यह सोचकर हम लोग नाश्ता करने बैठे। मेनू में ऐसे-ऐसे नाम थे जो हमने जीवन में कभी नहीं सुने थे और हर आइटम में डली सामग्री शायद किसी दूसरे ग्रह से मंगाई गई थी। समझ नहीं आ रहा था, क्या मंगाया जाए। बहुत सोच सोच कर हमने तीन चीजें आर्डर की, परंतु खाना बहुत ही ताजा और स्वादिष्ट था। हमारी भूख और बढ़ गई और हमने चॉकलेट क्रॉसेंट आर्डर किया। हालांकि हम पांच लोग थे, पर हमने तीन ही ऑर्डर किया। खाना लाने में बहुत देरी हो रही थी, बहुत इंतजार के बाद उन्होंने चॉकलेट क्रॉसेंट लाकर दिया। रखते ही हम लोग उस पर टूट पड़े। तुरंत ही उसके टुकड़े-टुकड़े किए और बांट कर खा लिया। अभी हमने खाया ही था कि पीछे से वेटर, छुरी और कांटा लेती आई ताकि हम उसे काट के खा सकें परंतु टेबल पर प्लेट खाली देखकर उसकी भी हंसी छूट गई और हमारी भी हंसी छूट गई दोस्तों का साथ हो तो उम्र का अहसास ही नहीं रहता। ऐसा लग रहा था जैसे बचपन की बिंदास हवाओं ने हमें घेर लिया हो।

वहीं नजदीक में अरविंदो आश्रम था। अरविंदो आश्रम एकदम शांत और विभिन्न प्रकार के फूलों से सुसज्जित था। फूलों और अगरबत्ती की खुशबू चारों ओर फैली हुई थी। वहां बात करने की मनाही थी। इसलिए सब लोग शांति से ध्यान लगाए, कुछ देर वहां बैठे। मन को और आत्मा को शांति देने के लिए ऐसे पवित्र और शांत स्थान बहुत आवश्यक है।

फिर हमने पास के ही अरविंदो आश्रम की दुकान से अगरबत्ती, इत्र और सुगंधित मोमबत्ती खरीदी। वहां से हम अपने होटल लौट आए क्योंकि कुछ लोग उसी दिन-रात को वापस लौट रहे थे सो हम चेन्नई के लिए निकल पड़े। चेन्नई पहुंचकर हमने दक्षिण भारतीय भोजन किया और समुद्र तट पर कुछ देर समय व्यतीत कर के रश्मि के घर लौट आए। सबने अपनी लाई भेंट एक दूसरे को दी। कुछ देर गपशप की और भारी मन से सभी एक-एक करके अपने घर लौट गए।

इस छोटी सी मुलाकात में जहां हम अपने-अपने साथ एक दूसरे का प्यार ले आए वहीं कुछ सामान भी एक दूसरे के सामान में चला गया। पर अब हम मित्रता के ऐसे रंग में रंग गए हैं कि फिर से बैचमेट से सखियां बन गई हैं और यह तय हुआ है कि मुलाकात का ये सिलसिला जारी रहेगा। अब अगली मुलाकात जयपुर में होगी।

बेटियाँ

श्रेया शर्मा
सहायक प्रबंधक
मानसरोवर मध्यम मार्ग शाखा
अंचल कार्यालय, जयपुर

ईश्वर की सबसे सुंदर रचना है, बेटियाँ
दो घर की रौनक और सम्मान होती हैं, बेटियाँ
कभी चिड़ियाँ सी चहचहाती,
कभी नन्हों सी रूठ जाती हैं, बेटियाँ
भाई से लड़ती, सखियों के साथ खेलती,
बड़ी हो जाती हैं, बेटियाँ
फिर जाने कब सयानी हो जाती हैं, बेटियाँ।
फूलों सी कोमल पर शक्ति स्वरुपा हैं, बेटियाँ
साहस और विश्वास से अंतरिक्ष तक पहुँच जाती हैं, बेटियाँ
अब तो हर क्षेत्र में परचम लहरा रही हैं, बेटियाँ
परिवार के लिए हर कठिनाई से लड़ जाती हैं, बेटियाँ
बेटी होकर भी बेटे का फर्ज निभाती हैं, बेटियाँ।
एक साथ दो परिवारों का ख्याल रखती हैं, बेटियाँ
सबके सुख की चाह में अपना दुख भूल जाती हैं, बेटियाँ
त्याग और समर्पण की मूरत होती हैं, बेटियाँ
माँ - बाप की परछाई होती हैं, बेटियाँ
फिर भी न जाने क्यों पराई होती हैं, बेटियाँ?

लोकल ट्रेन का महिला डिब्बा

छवि सक्सेना
प्रबंधक (एफ.एक्स.पी.सी.)
मुंबई

यदि आप कभी मुंबई शहर आए हैं, तो एक बात तो पक्की है कि आपने यहां की स्थानीय लौह पथ गामिनी यानी लोकल ट्रेन के बारे में अवश्य सुना होगा और यदि आप यहां रहते हैं या कभी रहे हैं तब तो इसमें सफर भी अवश्य किया होगा! आपका उत्तर हां हो या ना, आज मैं आपको अपने लेखन के द्वारा ले चलती हूं इसी लोकल ट्रेन के "महिला डिब्बे" के अंदर जो अपने आप में एक विस्मित कर देने वाली दुनिया है! यकीन नहीं आया ना? ...मुझे भी नहीं था, इसमें सफर करने से पहले!

क्या आप कभी भीड़-भाड़ वाली जगह पर रहे हैं और आपके पास खाली जाया करने के लिए बहुत समय हो और साथ में बातें करने को ना कोई मित्र और न ही कोई मनोरंजन का साधन? ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे, जब इस समय आपका मोबाइल डेटा और साथ ही वॉयस कनेक्शन बेकार हो जाए और आप अपने सेल फोन के साथ केवल दो ही काम कर सकते हैं या तो उसमें खेल खेलना या फिर संगीत सुनना!

...मुंबई लोकल में आपका स्वागत है!

हालाँकि, जब से मैंने इसमें सफर करना प्रारंभ किया है तब से मैंने इस रोजमर्रा की परेशानी को नित नए तरीके से, हर रोज सुलझाया है...ऐसे ही किसी रोज मैंने लिखना चुना।

आमतौर पर, एक आरामदायक सीट पर बैठने के बाद, मैं बस अपने बैकपैक से अपना ईयरफोन निकालती हूं... जी हां, सही सुना आपने, बैकपैक! क्योंकि हैंडबैग लोकल ट्रेन यात्रा से मेरे पहले परिचय के साथ अतीत की बात हो गया!

फिर, सामान की अलमारियों पर बैग को ऊपर की ओर उछालते हुए, मैंने अपने पहले से डाउनलोड किए गए गीतों पर प्ले बटन को दबाया और फिर जैसे ही संगीत कानों में घुलना शुरू हुआ, मैंने अपने आसपास के लोगों के त्वरित स्कैन के लिए चारों ओर देखा (अपरिहार्य मानव स्वभाव!)

महिलाओं के डिब्बे में यात्रा करना इतना दिलचस्प और मनोरंजक हो सकता है, इसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी! मेरा मतलब है, लगभग 70-80 सीटों की एक ही जगह में ना जाने कितनी तरह की महिलाएं हैं .... कुछ किशोर - कॉलेज जाने वाली, कुछ कामकाजी, मेरी तरह... कुछ छोटी, कुछ मोटी, कुछ गुस्सैल, कुछ कभी मुस्कुराते हुए, कुछ नींद में, कुछ शायद नौकरी और परिवार के मुद्दों से तनावग्रस्त, कुछ अपनी दुविधाओं में उलझी हुई, कुछ चालाक, कुछ न्याय करने वाली, कुछ गैर-समायोजित, कुछ डरपोक, कुछ लोलिता प्रकार, कुछ अनाड़ी, कुछ बेदाग पोशाक वाली, कुछ आकर्षक श्रृंगार के साथ, कुछ मोहक नजरों के साथ, कुछ भूरी आँखों वाली, कुछ गुलाबी बूटों वाली, कुछ बदबूदार बालों वाली, कुछ चश्मा और नाक किताबों में घुसाए हुए, कुछ चलती ट्रेन में श्रृंगार में व्यस्त, कुछ मॉडल जैसी, कुछ घरेलू, कुछ अनुभवी, कुछ नवविवाहित, कुछ गर्भवती, सुंदर, स्फूर्ति भरी, कुछ थकी हुई, कुछ दुनिया और समाज से नाराज औरतें, कुछ लड़ाकू, कुछ कोमल ह्रदय, कुछ खिड़की के नजारों में खोई हुई, कुछ ट्रेन के दरवाजों पर झुकी हुई, कुछ फैशनपरस्त, कुछ घूरती हुई, कुछ दिवास्वप्न देखने वाली, कुछ भूखी-सुबह सुबह टिफिन बॉक्स से कुछ न कुछ निकाल के पेट पूजा में व्यस्त, कुछ निर्जलित-अपनी पानी की बोतलों पर चुस्की लेती हुई, कुछ प्रेम-पीड़ीत तो कुछ प्रेम प्रसंग में बेवजह मुस्कुराती हुई, कुछ नाजुक, कुछ सुगंधित केश-तेल वाली, कुछ मंत्रमुग्ध कर देने वाली, कुछ स्वाभिमानी, कुछ दिशाहीन ख्यालों में खोई खोई-सी, कुछ रोचक कहानी की किरदार जैसी, कुछ पास पड़ोस की गपशप में लीन, कुछ धार्मिक मंडली एक स्वर में भजन गायन करती हुई, कुछ बेखबर सी, कुछ दीन दुनिया की खबर सुनाती... कुछ शोरगुल वाली - बिना रुके बकबक करने वाली महिलाएं, कुछ चुपचाप देखने वाली, कुछ मित्रों के साथ ट्रेन वाली अंताक्षरी या लघु जन्मदिवस समारोह में उत्साहित, कुछ प्रचलित मोबाइल खेल "कैंडी क्रश" में तन्मयता से लीन, कुछ बोस और बोट हेडफोन पर संगीत में खोई हुई, कुछ पढ़ाई लिखाई में मगन, कुछ लैपटॉप पर जरूरी काम काज में अत्यंत परेशान, कुछ लाल लिपस्टिक में यूंही बेफिक्र इतराती हुई तो कुछ ऊँची एड़ी की चप्पलों में साथ वालों को जलाती हुई... कुछ कभी-कभी नवजात शिशुओं को बाहों में लिए, कुछ हाथों में आज्ञाकारी बच्चों के साथ, कुछ नीचे उतरने की हड़बड़ी में, कुछ अंदर जाने के लिए जोर-जोर से धक्का देती हुई... कुछ सोने के गहनों से लदी हुई हैं, कुछ हिप्पी गेटअप

वाली... कितना भी नजरें घुमाओ, हर बार कुछ नया ही आंखों के सामने होता है... जाहिर है कि सूची अंतहीन है! इससे पहले मैंने कभी भी ईश्वर की अनंत रचनाओं पर इतने विस्मय से विचार नहीं किया था!

उल्लेख करने के लिए शायद और भी बहुत कुछ बाकी हैं. ...पर एक खास तरह की आत्मविश्वास से पूर्ण महिलाओं की श्रेणी का उल्लेख किए बिना लॉकल ट्रेन के महिला डिब्बे का सफर अधूरा ही रह जाएगा... मैं बात कर रही हूं सदा गतिमान रहने वाली लॉकल ट्रेन की महिला वेंडर्स की जो किसी जादूगर की भांति महिलाओं से खचाखच भरे डिब्बे में अचानक प्रकट होती हैं अपनी रोजी-रोटी कमाने को... हाथ में हैंगर नुमा अपने सामान की पेटी या बैग लिए जिसमें विभिन्न प्रकार की घरेलू उपयोग या महिला शृंगार की तमाम वस्तुएं रहती हैं- कान की बालियों से लेकर मंगलसूत्रों तक, कुर्तियों से लेकर दुपट्टे और पाजामे तक, हेयरबैंड, क्लिप, हैंडबैग, रंगीन किताबें, रसोई के छोटे-मोटे उपकरण, छोटे मोटे पैकेटों में फल सब्जी, पढ़ाई लिखाई के लिए कलम, पेंसिल बॉक्स, खेल खिलौने, मोबाइल कवर, फ्रिज मैग्नेट, और कभी कभी तो गजरा, फूल माला इत्यादि। देखना अति रोचक होता है कि किस प्रकार ये मेहनती महिलाएं भीड़ में से अपना रास्ता बनाते हुए महिला डिब्बे के हर कोने तक पहुंच कर अपने सामान की बिक्री करती हैं। सराहनीय बात ये भी है कि समय के साथ प्रगतिशील हुई, ये शायद बेहद कम पढ़ी लिखी या बिल्कुल अनपढ़ सी महिलाएं जिन्होंने ना तो कहीं से कोई क्रय विक्रय का पाठ लिया है और न ही इनको किसी ने विपणन रणनीति ही सिखाई है, फिर भी बड़ी कुशलता से मोल भाव करते लोगों में मिनटों में अपना सामान बेचती हैं और फिर अपनी पूरी सामान की पेटी को फटाफट समेट कर अगले ही स्टेशन पर उतर जाती हैं, अगली ट्रेन के महिला डिब्बे में चढ़ने को। कभी-कभी इनमें से कुछ महिलाएं तो गोद में नवजात शिशु को अपनी साड़ी या दुपट्टे के मजबूत झूलेनुमा आंचल में लिए ये फुर्तीलापन दिखाते हुए ट्रेन में चढ़ती-उतरती हैं। आपको ये जान के शायद आश्चर्य होगा कि तेजी से बढ़ती तकनीक के अनुसरण में भी ये कहीं से पीछे नहीं हैं...आजकल के युवाओं में अपनी बिक्री को कायम रखने और बढ़ाने के लिए ये महिलाएं मोबाइल के माध्यम से डिजिटल भुगतान में भी कुशल हो गई हैं, जो बहुत ही प्रेरणादायक बात है।

कोई भी समाज तभी प्रगतिशील कहलाता है जब भौतिक और आर्थिक स्थिति के न्यूनतम स्तर से समाज प्रगति की ओर कदम बढ़ाता है...और कमरबंध में रुपयों का पाउच बांधे अपने परिवार का पालन पोषण करती ये प्रगतिशील महिलाएं, महिला समाज के उत्थान का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

...इन्हीं सब बातों पर विचार करते हुए शांति से बैठकर मैं यह लेख लिख रही थी और आस पास महिलाओं का आवागमन जारी था! तभी मुझे अपने स्टेशन का नाम पुकारते हुए "पुढील स्थानक...चर्चगेट" की घोषणा सुनाई दी और मैं अपने बैग को उठाए दरवाजे की ओर बढ़ गई...

अगले सफर तक अलविदा !! "तुमचा दिवस चांगला जावो!!"

क्या हर बार कहना जरूरी है ?

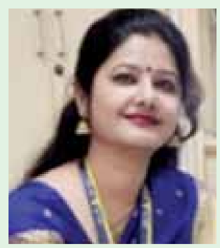

पल्लवी चक्रवर्ती
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय कोलकाता सेन्ट्रल

क्या हर बार कहना जरूरी है?
धीमा मुस्कुरा जाना, कनखियों से घूरना,
आँखों से बूंदें छलक जाना,
ठहाके लगाते - लगाते चुप हो जाना,
बस चुप रह जाने का कोई अर्थ नहीं?

क्या हर बार कहना जरूरी है?
घंटों यूहीं दीवारों में रेंगते सन्नाटे को टकटकाना,
लंबी ठंडी आह भरना,
लौटते - लौटते मुड़कर न देखना,
क्या इन एहसासों का कोई अर्थ नहीं?
क्या हर बार कहना जरूरी है?

क्यूं एहसासों का श्रृंगार करूँ?
क्यूं इन्हें श्लोकों, छंदों में जकड़ूँ?
क्यूं हर बार कहूँ?
कई बार चुप, सब कह देने से ज्यादा अर्थ देती है
क्या मेरी खामोशी, मेरी कविता नहीं?
क्या हर बार कहना जरूरी है?

शासकोत्तम राज्ञी

संगीता दलवी
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेमप्र कार्यालय, मुंबई

हमने वेदकालीन गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषियों की तथा अनुसूया, लोपामुद्रा जैसी ऋषि पत्नियों की, पंचकन्याओं की अनेक कहानियाँ सुनी हैं लेकिन आज ऐसी शासक बनी रानियों के बारे में सुनते हैं जिन्होंने राजगद्दी पर विराजमान अपने पतियों को ही नहीं, बल्कि अपनी प्रजा को भी घोर आपदा से बाहर निकाला और उनका पालन किया, उन्हें समर्थ एवं शक्तिशाली बनाया।

आइए, हम पहले सुनते हैं विश्पला रानी के बारे में, विश्पला का अर्थ ही है, प्रजा की पालनकर्ती एक नदी के तीर पर बसा हुआ, वह एक छोटा-सा राज्य था और उसके आस-पास उसी नदी के तीर पर अनेक छोटे-बड़े राज्य बसे हुए थे। सभी राज्य अपनी सुविधानुसार, इस नदी का पानी, उस पर बाँध बनाकर, बहते पानी को खेती की ओर मोड़कर मिल-बाँट कर प्रयोग में लाते थे और समृद्ध खलिहानों के साथ संपन्न व सुखी थे।

हमारी कहानी के राज्य के राजा खेल का विवाह हो गया और दैनंदिन राज्यव्यवहार के कार्यों की ओर से उसका ध्यान हट गया। वह विलासों में रत रहने लगा। जिन लोगों पर उसने नदी के पानी के उचित व्यवहार व देखभाल की जिम्मेदारी सौंपी थी, वे राजा का व्यवहार पहले की तरह न पाकर अर्थात् उसकी लापरवाही देखकर अपनी जिम्मेदारी से मुँह मोड़ने लगे। परिणाम वही हुआ कि आस-पास के राज्यों ने आपस में योजना बनाकर इस राज्य का पानी बाँध डालकर चुराया और उसे उसके हिस्से का पानी मिलने ही नहीं दिया। खेतों में पानी की किल्लत से फसल सूखने लगी, प्रजा को अनाज नहीं मिल पाया। न पीने को पानी, न खाने को अनाज। प्रजा बेबस हो गई। रानी ने बार-बार राजा को समझाने की कोशिश की, लेकिन विलासरत होकर उसने अनसुना कर दिया। जब राजा का ही ध्यान नहीं रहा तो अधिकारी वर्ग भी ज्यादा लापरवाह हो गया। जब खाने-पीने की कमी की आग में राजपरिवार समेत सभी चपेट में आ गए तो सबकी आँखें खुली और सब एक-दूसरे पर दोष लगाने में जुट गए। किसी ने कहा-"राजा के विवाह के बाद ही ये विपदाएँ आने लगी हैं, यह रानी अपशकुनी है, अपने पैरों से हम सबके लिए बदकिस्मती लेकर आयी है। आओ, प्रजाजनों पर भुखमरी की स्थिति लाने वाली इस रानी की ही बलि नरमेध यज्ञ में देकर हम देवताओं को प्रसन्न कर लेते हैं और इस भयानक आपदा से बचते हैं।"

रानी के पास दिन प्रतिदिन ये सारी खबरें आ रही थी, वह सारी बातें सुन रही थी। आखिरकार एक दिन उससे रहा नहीं गया और वह राजमाता के पास गयी लेकिन राजमाता कुछ भी सुनने के लिए तैयार ही नहीं थी। तब रानी राजगुरु के पास गयी और अपनी मनोव्यथा उन्हें सुनायी। उसने कहा-"आचार्य, मेरे पति अपने कर्तव्य से चूक रहे हैं, उन्होंने राज्यव्यवहार एवं राजनीति के महत्वपूर्ण कार्य, प्रजा के हित के कार्य स्वयं करने के बजाए अन्य लोगों पर छोड़ दिए हैं। अधिकारी एवं कर्मचारी अपना काम ठीक तरह से कर रहे हैं या नहीं, इसकी जाँच-पड़ताल भी वे नहीं कर रहे हैं। उन्होंने आस-पास के राजाओं के साथ झगड़ा करके उनसे दुश्मनी मोल ली है, जिससे वे भी सहायता नहीं कर रहे हैं। किसी भी कठिन स्थिति का सामना करने के लिए राज्य के गोदाम हमेशा अनाज से भरे हुए होने चाहिए। उन्होंने इसका ध्यान भी नहीं रखा है इसलिए यह अकाल की स्थिति आ गयी है। मेरा विवाह हो गया और ये सारी आपदाएँ आ गयी, लेकिन मैं इसके लिए दोषी कैसे हूँ, मुझे बदकिस्मत, फूटे कर्म की, अपशकुनी माना जा रहा है। मेरा इसमें क्या अपराध है? बिना किसी कारण मेरी बलि चढ़ायी जा रही है, अब आप ही कुछ उपाय कीजिए।"

आचार्य अगस्त्य ने कहा - "शकुन-अपशकुन, किसी के पैर रखते ही बुरा होना, लक्षण ठीक नहीं हैं - ये सारी बातें खुराफाती दिमाग के लक्षण हैं। इनका कोई आधार नहीं है, शास्त्रों में तो बिल्कुल ही नहीं है। रानी, तुम तो राजनीति और युद्धशास्त्र की शिक्षा प्राप्त कर चुकी हो, फिर क्या सोच रही हो? आगे बढ़ो और स्वयं सभी निर्णय ले लो।"

रानी ने निर्णय लिया, राज्य की स्त्रियों को इकठ्ठा किया और उन्हें उचित सैनिक शिक्षा देकर उनकी सेना बनाई कुशल जासूसों की फौज खड़ी कर दी। आस-पास के राज्यों में उन्हें

भेजकर वे उनसे नित्य गुप्तवार्ता पाती रही। उसने आस-पास के राजाओं से अनाज और पानी के लिए मदद मांगी, कुछ के पास इंसानियत की गुहार लगायी लेकिन किसी राजा ने उसकी विनती नहीं मानी, उल्टा यह कहा कि राजा अपने प्रजापालन के कर्तव्य से चूक गया है, अब वह अपना राज्य हमारे हवाले कर दे और अपनी हार मान ले।

राज्य में अराजक एवं अव्यवस्था छा गयी। एक दिन भूखी-प्यासी प्रजा भव्य राजमहल के सामने जमा हो गयी और राजा से अन्न की भिक्षा मांगने लगी। राजा अपनी प्रजा के सामने अपराधी बनकर खड़ा हो गया। उसकी गर्दन झुकी थी, वाणी मौन थी। प्रजा का असंतोष बढ़ता चला गया, अब वह रुकने के लिए तैयार नहीं थी। 'हमें अन्न दो नहीं तो हम तुम्हें पत्थर फेंककर कुचल डालेंगे'- ऐसी ध्वनियाँ चारों ओर से गूँजने लगी। राजा की आँखों के सामने मृत्यु तांडव करने लगी। तभी शोर को चीरते हुए एक कठोर ध्वनि आयी-"पीछे हटो, राजा ने तुम्हारी समस्या का निराकरण कर दिया है।"

प्रजाजन पीछे मुड़कर देखने लगे तो अनाज की बोरियों से भरी गाड़ियों की कतार-सी लगी थी। उनकी आँखें फटी की फटी रह गयी। भीषण युद्ध में अपना पाँव गँवा बैठी उनकी रानी शरीर पर हुए अनगिनत घावों को झेलती, किसी तरह अपने आप को संभालते हुए डँटकर खड़ी थी। उसके साथ खड़े थे - आचार्य अगस्त्य जो बड़े ही गर्व के साथ रानी को देख रहे थे। विश्पला अपनी स्त्री सेना के साथ आस-पास के राजाओं के अनाज के गोदाम लूटकर अपनी भूख से अधमरी प्रजा के लिए अनाज को बोरियों में भरकर लायी थी। सामोपचार से माने नहीं इसलिए उसने अपनी स्त्री सेना को लेकर अन्य राजाओं के साथ युद्ध किया था और उन उन्मत्त राजाओं को पराजित कर उनके धान के कोठार लूट लायी थी। स्त्री सेना ने अपनी रानी पर उपचार कर, उसके कटे हुए पाँव की जगह लोहे का पाँव लगाया था। राजा खेल एवं राजमाता आश्चर्यचकित होकर यह सब देख रहे थे। सबने अत्यानंद से रानी की जयजयकार की। विश्पलाविश अर्थात् सामान्यजन, उनकी पालनकर्ती इसलिए वह विश्पला बन अपने प्रजाजनों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हुई कठिन समय में उसका पूरा साथ देनेवाले आचार्य अगस्त्य ने प्रजाननों को रानी का उदाहरण देकर कहा- "बलि देकर, मंत्रतंत्र से कुछ मिलता नहीं है, किसी भी शास्त्र में इसका कोई आधार नहीं है। आत्मबल, मानवता के प्रति प्रेम और कर्तव्य का बोध - यही सच्चा बल है। इससे ही शौर्य का प्रस्फुटन होता है और युद्ध में विजय प्राप्त होती है।" इस तरह से अपशकुनी, बदकिस्मत ठहरायी गयी शूर विश्पला रानी अपनी वीरता और सूझ-बूझ से प्रजानन के बीच लोकप्रिय रानी बन गयी। वास्तविक रूप से वह एक उत्तम शासक रानी और प्रजापालिका बन गयी।

दूसरी कथा है ऐसी ही एक विद्रोही रानी शशीयसी की। एक वेदकालीन राज्य था जिसका राजा था तरंत। उसके राज्य में एक युवक था श्यावाश्र्व जो सुस्वभावी, बलिष्ठ तथा सुंदर था। उसे एक दार्भ्य नाम के धनवान, प्रतिष्ठित एवं सत्तासंपन्न व्यक्ति की पुत्री से प्यार हो गया। दोनों एक-दूसरे के प्रति आकृष्ट हो गए। पुत्री ने पिता से निश्चयभरे स्वर में कहा - "तात, मुझे इसी युवक से विवाह करना है।" पिता ने क्रोधित होते हुए कहा - "बिल्कुल नहीं, भले ही वह सुस्वभावी, सुंदर एवं अच्छी कदकाठी का क्यों न हो, उस अशिक्षित, निर्धन एवं अप्रतिष्ठित श्यावाश्र्व से मैं तुम्हें विवाह नहीं करने दूंगा।" बेचारा श्यावाश्र्व और उसकी प्रियतमा निराश व उदास हो गए। अब क्या करना चाहिए, इस असमंजस में पड़ गए। राजा के दरबार में जाए तो स्वयं राजा शराबी, कंजूस एवं दुष्ट प्रवृत्ति का था। वैदिक संस्कृति के विपरीत उंच-नीच, छोटा-बड़ा, ऐसा भेद करने वाली समाज रचना का वह समर्थक था। उसके राज्य में धन एवं अनाज आदि कुछ गिने-चुने लोगों की मुट्ठी में बंद था। प्रजा का सुख, कल्याण, विद्या, एकता, बंधुता आदि तो उसके राज्य से नदारद ही थे। अराजक एवं अव्यवस्था की स्थिति सर्वत्र व्याप्त थी।

एक भलमानस से श्यावाश्र्व का दुख और उदासी देखी नहीं गयी और उसने उसे रानी के पास जाने की सलाह दी। रानी ने उसके दुख का कारण पूछा, उसे धीरज दिया और स्थिति का सामना करने के लिए उसे प्रेरित किया। रानी ने प्रधान को बुलाकर उसके जैसे कितने युवा राज्य में हैं, उनकी खोज करने के लिए कहा। कुछ ही दिनों में उसे पता चला कि राज्य में ऐसे कई युवा हैं जिनके पास, धन, विद्या, काम इनमें से कुछ भी नहीं है और न ही वे उसे प्राप्त कर सकते हैं। सत्ता एवं धन जिनके हाथों में है, वे अधिकारी एवं व्यापारी अपने घर एवं गोदाम भरकर सामान्य जनता का आर्थिक शोषण कर रहे हैं। अन्न तो क्या पानी पीने के लिए भी उन्हें दर-दर भटकना पड़ता है क्योंकि पानी के स्त्रोत एवं भंडार उच्चपदस्थ, प्रतिष्ठित, धनवान लोगों के लिए आरक्षित रखे हुए हैं। इसके कारण सामान्य जनता लाचार एवं निर्धन है। राजा इस ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहा है। लेकिन ऐसी सामाजिक विषमता, राज्य एवं राजा दोनों के लिए हानिकारक है, यह रानी शशीयसी जान चुकी थी ।

जब श्यावार्श्व विद्यावती, बुद्धिमती रानी शशीयसी के पास पहुँचा तो रानी ने उससे राज्य में व्याप्त परिस्थिति की पूरी खबर ली और स्थिति का जायजा लिया। राज्य की दुर्दशा देखकर उसे बहुत बुरा लगा। उसे प्रजा के कल्याण की चिंता थी। फिर उसने मन ही मन कुछ सोचा और राजा के क्रोध की परवाह न करते हुए राजकोष से धन निकाला और उन पैसों को अच्छे आचार्यों को सौंपकर उनके माध्यम से विद्यालयों की स्थापना की। उसने अशिक्षित प्रजा की उचित शिक्षा की व्यवस्था की। धनवान एवं उच्च पद पर आसीन लोगों के धनसंचय एवं धनसंपदा पर मर्यादा लगायी। उनके पास से अतिरिक्त धन लेकर अलग-अलग व्यवसायों को शुरू किया जिससे प्रजा के लिए धनप्राप्ति के साधन जुटाए जा सकें। राजा का विरोध सहकर, अनाज के गोदाम प्रजा के लिए खुले कर दिए, जगह-जगह पानी के प्याऊ बनवाए। अन्नछत्रों की निर्मिती की, भूखी-प्यासी प्रजा को खाने के लिए अन्न एवं पीने के लिए पानी उपलब्ध हो गया। प्रजा के खुश हो जाने से राज्यलक्ष्मी भी प्रसन्न हो गयी, राज्य संपन्न होने लगा।

श्यावार्श्व जैसे कई युवक और स्त्रियाँ रानी की मदद के लिए आगे बढ़े। वे अच्छी विद्या पाकर छोटे-मोटे व्यवसाय करने लगे। श्यावार्श्व भी विद्यासंपन्न होकर व्यावसायिक बन गया। रानी ने राज्य की स्त्रियों में भी शिक्षा का प्रसार किया। शिक्षा एवं श्रम की दीक्षा पाकर राज्य में खेती और उद्योगों में बरकत आने लगी। राज्य में जैसे आमूलचूल परिवर्तन हो गया। दुर्भाग्यशाली राज्य संपन्न एवं समृद्ध बनने लगा। रानी शशीयसी ने इसे संभव कर दिखाया।

जैसे ही प्रजा शिक्षित हुई, वह राजनीति एवं राज्यव्यवहार जानने लगी। राजा एवं उच्च अधिकारियों के अन्याय का प्रतिकार करने लगी, जुल्मी राजव्यवहार का विरोध करने लगी। वह राजा के प्रति विद्रोह कर उठी और उनका नेतृत्व स्वयं रानी शशीयसी कर रही थी। रानी ने राजा को तुरंत समझाया कि मानव को मानवता के मंगल और कल्याण के लिए काम करना चाहिए, राजा को प्रजा का संरक्षण करना चाहिए। यदि ऐसा नहीं हुआ तो उसे राजगद्दी से हाथ धोना पड़ेगा। इस भयानक वास्तविकता से उसे अवगत कराया। राजा की आँखें अब खुल चुकी थी, उसे अपने शराबी, दुराचारी होने पर लज्जा आने लगी। अनुचित एवं अयोग्य अधिकारीवर्ग के हाथों की कठपुतली बनने पर अब उसे पछतावा होने लगा। उसने रानी शशीयसी और प्रजाजनों से माफी मांगी। इसके बाद सद् वर्तनी बन कर न्यायपूर्वक राज्य करने का वचन दिया। प्रजा ने रानी शशीयसी की जयजयकार की। उसकी सेवाभावना, शिक्षा प्रसार, कृषि एवं उद्योगों के विकास के लिए किए गए अविरत प्रयासों एवं कार्यों की स्तुति की। उसकी दानशीलता, निर्भयता को सराहा। शिक्षा आपको सुप्रतिष्ठित करती है। यह शशीयसी ने सबको बताया एवं जता भी दिया।

किन्तु इस सबके लिए कारण बना श्यावार्श्व अभी भी दुखी था, शिक्षित एवं धनवान होने के बाद भी दार्भ्य उसे अपनी कन्या का हाथ नहीं देना चाहता था। अपने उच्च जीवनमान एवं संस्कृति के ढांचे में श्यावार्श्व अपने आपको ढाल नहीं पायेगा ऐसा उसे लग रहा था। वह अपनी पुरानी आदते छोड़ नहीं पायेगा ऐसी उसको आशंका थी। दरिद्रता दूर होने पर भी अच्छे संस्कारों के बिना जीवनशैली में अच्छे परिवर्तन संभव नहीं है यह रानी जानती थी। उसने श्यावार्श्व को समझाया कि ज्ञान एवं धन व्यक्ति को प्रतिष्ठा देने वाले साधन जरूर हैं किन्तु उनका योग्य रूप से उपयोग किस तरह से करना है इसके लिए अच्छे संस्कारों का होना आवश्यक है। श्यावार्श्व जान गया कि योग्य गुणों के विकास के लिए मद, मोह, मत्सर जैसे षडरिपु को उसे त्यागना होना। दूसरों के लिए कष्ट सहने की आदत डालनी होगी, बुरी लतों से दूर रहना होगा, अपप्रवृत्तियों से बचना होगा। उसने अपने आप में ये परिवर्तन करना शुरु किया, अच्छी आदतों को अपने आचरण में लाया। उसके आचरण में सुयोग्य परिवर्तन देखकर, उसके दातृत्व को जानकर, दार्भ्य को उसके सुसंस्कारित मन एवं वर्तन का विश्वास हो गया। उसने अपनी कन्या का विवाह श्यावार्श्व से कर दिया और उन्हें आशीर्वाद दिया।

इस तरह रानी शशीयसी ने अपने राज्य, प्रजा, पति के रूप में राजा को अशिक्षा, आलस्य, अराजकता, अव्यवस्था से साक्षरता, उद्योगशीलता, सुराज्य एवं सुव्यवस्था की ओर मोड़ दिया और अपनी शासकोत्तमता होने का परिचय दिया।

ये दोनों कहानियाँ वेदकालीन स्त्रियों की होकर भी हमें आज के जमाने में शिक्षा, उद्योगशीलता, निर्भयता, आत्मबल, मानवता के प्रति प्रेम और कर्तव्य का बोध जैसे उच्च गुणों की शिक्षा लेने की सीख देती हैं और इन दो शासिकाओं की सर्वोत्तमता का अहसास कराती हैं ।

ये कहानियाँ महाराष्ट्र टाइम्स में छपी कहानियों पर आधारित हैं ।

मैराथन और मैं

रश्मि डोंगरे
सहायक महाप्रबंधक
बैंकिंग परिचालन विभाग, कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

सब पूछते हैं कि मैंने यह कब सोचा था कि मैं मैराथन दौड़ सकती हूँ। सच बताऊँ तो मैंने भी कभी नही सोचा था कि मैं कभी मैराथन दौरूंगी लेकिन एक बात तो थी कि स्कूल के दिनों से ही मुझे खो-खो, क्रिकेट, टेनिस, बैडमिन्टन और एथलेटिक गतिविधियों में रूचि थी। खो-खो तो मुझे जिला स्तर तक खेलने का अवसर भी मिला था। दोस्तों, मैरे दो फैन ग्रूप थे- कपिलदेव फैन ग्रूप और मेरी दोस्त का सुनील गावस्कर फैन ग्रूप। छुट्टी के दिन अपने फेवरेट स्पोर्ट्स स्टार के एलबम बनाना और दोस्तों को मैगजीन दिखाना, स्पोर्ट्स स्टार खरीदने के लिए अपनी पॉकेट मनी खर्च कर देना और उसके नवीनतम अंक के लिए दुकान के चक्कर लगाना, मेरी रूचि का विषय था। जिसके घर में टीवी है, उसके घर पर जाकर मैच देखना, मतलब अलग ही दिन थे।

पुणे से चेन्नै आने के बाद, मेरी पूरी लाइफ ही बदल गईं पुणे में परिवार के साथ थी, रिश्तेदार थे, सोशल लाइफ थी। कहते हैं ना कोई ख्याल रखने वाला साथ हो तो हम थोड़ा बेफिक्र हो जाते हैं। अब मुझे अकेले ही रहना था।

यह मेरे जीवन का गोल्डन जुबली वर्ष था और सभी महिलाओं के जीवन में एक संक्रमण का समय होता है। कार्य के लंबे घंटे, तनाव, घर से दूर, यह सब देखकर डॉक्टर ने पहले ही चेताया था कि स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना होगा, वजन कम करना होगा। पुणे में हमारा 12 महिलाओं का ट्रैकिंग ग्रूप था जिसकी लीडर मेरी दोस्त थी जो भारतीय स्टेट बैंक में कार्यरत थी। इनमें से 8-9 लोग भारतीय स्टेट बैंक के अधिकारी थे, हम सभी वहां शिवाजी महाराज द्वारा निर्माण किये गए किले पर ट्रैकिंग के लिए जाते थे, कुछ हिमालय पर भी ट्रैक करके आए थे इसलिए हम सभी शारीरिक रूप से दुरूस्त थे। बाद में कोविड के कारण सब बंद हो गया था। एक बात और बताना चाहूँगी कि कुछ लोग जीने के लिए खाते हैं और कुछ खाने के लिए जीते हैं। मैं दूसरी श्रेणी में हूँ एवं भोजनप्रेमी अर्थात फूडी हूँ लेकिन अब मुझे पहली वाली श्रेणी में जाना था जो काफी मुश्किल था।

एक समुद्र प्रेमी होने के कारण, चेन्नै आने से पहले यह तो तय था कि समुद्र के किनारे के पास ही निवास लेना है, ताकि मॉर्निंग वॉक समुद्र बीच पर ही कर लूँ। ऐसा अवसर तो कभी-कभी मिलता है ना जब अपनी पसंद की प्राकृतिक जगह पर रहने का मौका मिले, इसलिए शुरूआत तो मॉर्निंग वॉक से हुईं एक बार मेरे बचपन की मित्र ने मुझे देखा तो इतना चिढ़ाना चालू किया कि तुम और कितनी मोटी हो जाओगी? क्या कर रही हो, अपने साथ? बस तुम, खाना-पीना छोड़ दो! मर नही जाओगी! ओह माई गॉड! उसने मुझे सोच में डाल दिया कि यह सही कह रही है, कुछ तो करना ही होगा, खुद के लिए! अभी तो जीना है और, बेटा तो सेटल हो जाए, फिर मर भी गए तो भी चलेगा! कोशिश करती हूँ। कोई ऑफिशियल ट्रेनिंग नही ली लेकिन दोस्तों और गूगल ने गाइड किया। एक ही बात याद रखनी है, अपनी शारीरिक क्षमता के अनुसार प्रयास करना, दुस्साहस नही करना है, चोट लगने पर नही दौड़ना है। फिर वॉक के साथ, दौड़ना शुरू किया एवं जुलाई, 2022 में, पहला हाफ मैराथन पूरा किया। चेन्नै में जुलाई, 2021 में आने के बाद, अब तक 4 बार 10 किमी, 6 बार 21 किमी, 1 बार 25 किमी, 1 बार 32 किमी और फुल मैराथन 42 किमी पूर्ण किया।

इस यात्रा में, मुझे मेरी ही क्षमता का पता चला। जब आप दौड़ते हो, आप एक अलग ही दुनिया में चले जाते हो, आपकी सांस है, आपका मनपसंद संगीत है। सबसे महत्वपूर्ण बात जो मैने महसूस की कि आपके साथ दौड़ने वाले आपको, प्रेरित करते हैं, मनोबल बढ़ाते हैं, यहां किसी भी प्रकार से कोई भी नकारात्मक टिप्पणी, राजनीति, ना ही मनोबल तोड़ने वाले शब्द होते हैं! जैसे-जैसे आप आगे बढ़ते हैं, सारा तनाव एवं नकारात्मकता पीछे छूट जाती है। आप किस गति/चाल से दौड़

रहे हो, कोई मायने नही रखता है। आप दौड़ रहे हो, आप स्वयं को समय दे रहे हैं, आप अपना ख्याल रख रहे हो, यह अच्छी बात है। यहां सिर्फ सकारात्मकता है। जब आप फिनिश लाइन पार करते हो, आपकी संतुष्टि एवं आनंद, आपके चेहरे पर स्पष्ट झलकता है। आपका चेहरा दमकने लगता है। मैडल, आपके आत्मविश्वास में दुगुनी वृद्धि कर देता है तथा आप अगली मैराथन के लिए तैयार हो जाते हो।

सभी धावकों (रनर्स) को सैल्यूट जो प्रेरक एवं मनोबल बढ़ाने वाले हैं। याद रखिये, एक ही शख्स आपका ख्याल रख सकता है वो आप खुद हो।

यह देखा गया है कि ज्यादातर महिलाएं घर एवं ऑफिस की दोहरी जिम्मेदारियों के कारण खुद पर ध्यान ही नही दे पाती है लेकिन हर उम्र में आपको अपनी सेहत का ध्यान रखते हुए हमेशा खुश रहना है, तभी आप अपनी जिम्मेदारियां अच्छे से निभा पाएंगी। घूमना, दौड़ना या किसी भी प्रकार का व्यायाम आपको सकारात्मकता की ओर ले जाता है एवं आपके मन और शरीर को मजबूत बनाता है। अपने आपको खुश एवं स्वस्थ रखना केवल आपकी जिम्मेदारी है। रोज अपने लिए 1 घंटा देना मुश्किल नहीं है। कुछ कदम ऐसे भी उठाएं, लिफ्ट की जगह सीढ़ियों का उपयोग करें, पास में ही कहीं जाना हो तो पैदल ही निकल जाएं, घर में फर्श पर बैठ कर कार्य करें, अगर आप प्रतिदिन 5 बार सूर्य नमस्कार करते हो तो इससे अच्छा कोई व्यायाम नही है। अगर आपको संगीत पसंद है तो रोज 10 मिनिट आंखे बंद करके अपने मनपसंद गाने सुनें। अपनी रुचियों को बनाए रखें।

आप समस्त महिलाओं का इस रनिंग की दुनिया में स्वागत है। कृपया अपने जूतों के फीते बांधिये, दौड़ना शुरू कीजिये और अपने स्वरूप को बदल डालिये। आप प्रकृति प्रदत्त शक्तिशाली है। जीवन आपसे शुरू होता है। सब कुछ आपके संकल्प पर निर्भर करता है।

अंत में यही कहना चाहूँगी कि-

मन ही मन को जाने, मन की मन से प्रीत,
मन ही मनमानी करें, मन ही मन का मीत।

मन झूमे, मन बांवरा, मन की अद्‌भुत रीत,
मन के हारे हार है, मन के जीते, जीत।।

फिर भी सदा रही आभारी

प्रीति रावत
सहायक प्रबंधक
अंचल कार्यालय, देहरादून

मुझे महलों की ख्वाहिश नहीं,
मैंने मिट्टी से भी रिश्ते बनाए हैं,

मुझे नकारा गया लाख बुद्धिमता के स्तर पर लेकिन मैंने,
कल्पना चावला बन कर अंतरिक्ष में झंडा लहराया है,

मुझे शरीर से कमजोर घोषित किया कई लोगों ने,
लेकिन मैंने फोगाट बन कर धोबी पछाड़ का मजा चखाया है,

आज की लड़की हल्की नहीं सब पर भारी है,
घूंघट ओढ़ती है घर भी चलाती लेकिन सबकी फिर भी
आभारी है,

हिसाब किताब सँभालने में अव्वल होती है नारी,
पुरुष बुनियाद तो दीवार है घर की नारी,

वसुधैव कुटुम्बकम् की वसुधा है नारी,
काँटों में सुसज्जित सुमना है नारी,

करती कितने एहसान लेकिन एहसानों की
मुहताज नहीं है नारी,
घूँघट से जितनी दबी उतनी उठती गयी नारी,

नवरात्रों में नौदुर्गा बनी,
प्रकृति बन कर सबको सहेजती रही नारी,

प्यारी बिटिया बन कर, कभी माँ कभी बहन बनकर
सींचती रही कुटुंब की क्यारी, फिर भी सदा रही आभारी
ये नारी !

उसने विश्वास किया... वह कर सकती थी और इसलिए उसने किया

सुधा श्रीनिवासन
सहायक प्रबंधक
मासंप्र, कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

मैं, सुधा श्रीनिवासन, अपनी यात्रा आप सभी से साझा करना चाहूंगी। मैं अपने जीवन के मध्यकाल में अपनी चार इंद्रियों के साथ (नेत्रहीन) जीने के लिए मजबूर हो गई थी। बैंक में नियमित कार्य के अलावा, मुझे समाज के साथ जुड़कर जीने के लिए प्रोत्साहित किया गया। मुझे विभिन्न केंद्रीय और राज्य सरकार के संस्थानों में एक विशेषज्ञ व्यक्ति के रूप में व्याख्यान देने का अवसर प्राप्त हुआ, इनमें से प्रमुख निम्न है:

* नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर विजुअली हैंडीकैप- पूनमल्ली
* बहुविकलांगता वाले व्यक्तियों के सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय संस्थान-एनआईईपीएमडी
* साइंस सिटी (बिडला प्लैनेटोरियम) में 'बधिर और मूक' छात्रों को संबोधित करना
* 'राज्य वाणिज्य शिक्षा के राष्ट्रीय संस्थान', चेन्नै - राज्य सरकार के संस्थान, के वरिष्ठ छात्रों के लिए मेरे सत्रों के माध्यम से अतिरिक्त मूल्यवर्धन शिक्षा देना
* विकलांगों के लिए गैजेट विकास में आईआईटी, मद्रास को अपने विचारों से योगदान देना
* वरिष्ठ नागरिक घरों और अन्य पुनर्वास केंद्रों में भावनात्मक पुनर्वास के बारे में समझाया
* चेन्नै और पांडिचेरी के विभिन्न स्कूल और कॉलेज के छात्रों के लिए व्याख्यान दिए

मैंने बैंक का प्रतिनिधित्व करते हुए 'पोधिगाई' (दूरदर्शन) में 'प्रेरणा' पर बात की और वीमेन अचीवर्स प्रोग्राम में से एक में, एक विशेष साक्षात्कार भी दिया है। सकारात्मक प्रगति करते हुए, मैंने निम्नलिखित पुरस्कार हासिल किए:-

* तमिलनाडु सरकार द्वारा सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी पुरस्कार
* सर्वश्रेष्ठ महिला अचीवर - एनएफईडी
* उत्कृष्ट महिला उपलब्धि - जीएसआर-सेंट्रल इंस्टीटयूट ऑफ साइंटिफिक रिसर्च

शिक्षण क्षेत्र के लिए डॉ एमजीआर जानकी कॉलेज फॉर वुमेन, अड्यार में इवा का सम्मान किया गया।

विकलांग व्यक्तियों के समान अवसर के लिए राष्ट्रीय संघ-मुंबई ने विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ मेरे काम की सराहना करते हुए 'लालजी मेहरोत्रा पुरस्कार' से भी सम्मानित किया।

मुझे लायंस क्लब ऑफ सेंट्रल मद्रास द्वारा उनके 'हेलेन केलर डे' पर शंकर नेत्रालय में 'द नाइट ऑफ द ब्लाइंड' प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

एक दिव्यांग व्यक्ति होने के नाते मुझे समाज में विशिष्ट पहचान पसंद है, वैसे ही जैसे कि बहरा होने के बावजूद बीथोवेन का संगीत, अंधे होने के बावजूद जॉन मिल्टन की कविताएँ, कई चुनौतियों के बावजूद हेलेन केलर की सेवाएं।

संक्षेप में, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में विविध प्रकार की चुनौतियां एवं बाधाएं होती हैं। यह हमारे हाथ में है कि हम अपने जीवन को सकारात्मक रूप से दिशानिर्देशित करें ताकि हमारा पर्यावरण बेहतर और खुशहाल बन सके।

वैदिक भारत के नारीवाद के प्रतीक

श्वेता गंगिरेड्डी
प्रबंधक (राजभाषा)
कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

गार्गी वाचकनवी

महान भारतीय संत गार्गी दुनिया में नारीवाद के शुरुआती प्रतीकों में से एक थी। 9वीं से 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व में, उत्तरी भारत में, मिथिला के पास जन्मी गार्गी, एक जन्मजात दार्शनिक थीं। वह वैदिक साहित्य की एक प्रसिद्ध प्रतिपादक थीं।

गार्गी ऋषि वचक्नु की पुत्री थीं और बचपन से ही ज्ञान के प्रति उनकी विशेष रुचि थी। उसकी मां इस विचार के खिलाफ थी। वह चाहती थी कि युवा गार्गी विवाह करे और गृहिणी बने। लेकिन गार्गी के मन में बौद्धिक और आध्यात्मिक लक्ष्य प्रभावी थे। उन्हें वेदों और पुराणों को सीखने में बहुत रुचि थी। वह बुद्धि संपन्न थीं और चारों वेदों के जटिल दर्शन में शीघ्र ही पारंगत हो गई थी।

यहाँ तक कि वे पुरुष भी जो बुद्धि में उसके बराबर बनने का प्रयास करते थे, इस क्षेत्र में उसके ज्ञान को पार नहीं कर सके। उन्हें गार्गी ऋषि के रूप में जाना जाता है, जिसका उल्लेख ऋग्वेद में है। अपने गहरे ध्यान के माध्यम से, उन्होंने ऋग्वेद के कुछ मंत्रों को कंठस्थ कर लिया था। दर्शन पर उनके विचार इतने ऊँचे माने जाते हैं कि उनका उल्लेख उपनिषदों में भी मिलता है। गार्गी ने सभी के अस्तित्व की उत्पत्ति पर सवाल उठाते हुए कई भजनों की रचना की थी।

जब विदेह के राजा जनक ने एक 'ब्रह्मयज्ञ'- एक दार्शनिक बैठक का आयोजन किया था, तो उस यज्ञ में गार्गी की भागीदारी करने का अनुमान लगाया गया था। गार्गी ने 'आत्माओं' पर कई प्रश्न प्रस्तुत करके उस समय के सबसे बड़े ऋषि याज्ञवल्क्य को भी चुप करा दिया था।

माना जाता है कि राजा जनक प्रतिवर्ष अपने यहां शास्त्रार्थ करवाते थे। एक बार जनक ने श्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानी की परीक्षा लेने के लिए एक शास्त्रार्थ सभा का आयोजन किया।

उन्होंने शास्त्रार्थ विजेता के लिए सोने की मुहरें जड़ित 1000 गायों को दान में देने की घोषणा कर रखी थी। उन्होंने कहा था कि शास्त्रार्थ के लिए जो भी पधारे हैं उनमें से जो भी श्रेष्ठ ज्ञानी विजेता बनेगा वह इन गायों को ले जा सकता है। निर्णय लेना अति दुविधाजनक था क्योंकि अगर कोई ज्ञानी अपने को सबसे बड़ा ज्ञानी माने तो वह ज्ञानी कैसे कहलाए?

ऐसी स्थिति में ऋषि याज्ञवल्क्य ने अति आत्मविश्वास से भरकर अपने शिष्यों से कहा, 'हे शिष्यों! इन गायों को हमारे आश्रम की ओर हांक ले चलो।' इतना सुनते ही सब ऋषि याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करने लगे। याज्ञवल्क्य ने सबके प्रश्नों का यथाविधि उत्तर दिया।

उस सभा में वेदज्ञ स्त्री गार्गी भी उपस्थित थी। याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करने के लिए गार्गी उठीं और पूछा कि हे ऋषिवर! क्या आप अपने को सबसे बड़ा ज्ञानी मानते हैं, जो आपने गायों को हांकने के लिए अपने शिष्यों को आदेश दे दिया?

याज्ञवल्क्य ने कहा कि मां! मैं स्वयं को ज्ञानी नहीं मानता परन्तु इन गायों को देख मेरे मन में मोह उत्पन्न हो गया है।

गार्गी ने कहा कि आपको मोह हुआ, लेकिन यह इनाम प्राप्त करने के लिए योग्य कारण नहीं है। अगर सभी सभासदों की आज्ञा हो तो में आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहूंगी। अगर आप इनके संतोषजनक जवाब दे पाएं तो आप इन गायों को निश्चित ही ले जाएं।

सभी ने गार्गी को आज्ञा दे दी। गार्गी का प्रश्न था, 'हे ऋषिवर! जल के बारे में कहा जाता है कि हर पदार्थ इसमें घुलमिल जाता है तो यह जल किसमें जाकर मिल जाता है?'

गार्गी का यह पहला प्रश्न बहुत ही सरल था, लेकिन याज्ञवल्क्य प्रश्न में उलझकर क्रोधित हो गए। बाद में उन्होंने आराम से और ठीक ही कह दिया कि जल अन्तत: वायु में ओतप्रोत हो जाता है। फिर गार्गी ने पूछ लिया कि वायु किसमें जाकर मिल जाती है और याज्ञवल्क्य का उत्तर था कि अंतरिक्ष लोक में।

पर गार्गी याज्ञवल्क्य के हर उत्तर को प्रश्न में बदलती गई और इस तरह गंधर्व लोक, आदित्य लोक, चन्द्रलोक, नक्षत्र लोक, देवलोक, इन्द्रलोक, प्रजापति लोक और ब्रह्मलोक तक जा पहुंची और अन्त में गार्गी ने फिर वही प्रश्न पूछ लिया कि यह ब्रह्मलोक किसमें जाकर मिल जाता है?

इस पर गार्गी पर क्रोधित होकर याज्ञवल्क्य ने कहा, 'गार्गी, माति प्राक्षीर्मा ते मूर्धा व्यापप्त।' अर्थात गार्गी, इतने प्रश्न मत करो, कहीं ऐसा न हो कि इससे तुम्हारा मस्तक फट जाए।

अच्छा वक्ता वही होता है जिसे पता होता है कि कब बोलना और कब चुप रहना है और गार्गी अच्छी वक्ता थी इसीलिए क्रोधित याज्ञवल्क्य की फटकार चुपचाप सुनती रही।

दूसरे प्रश्न में गार्गी ने अपनी जीत की कील ठोंक दी। उन्होंने अपने प्रतिद्वन्द्वी यानी याज्ञवल्क्य से दो प्रश्न पूछने थे तो उन्होंने बड़ी ही लाजवाब भूमिका बांधी।

गार्गी ने पूछा, 'ऋषिवर सुनो। जिस प्रकार काशी या अयोध्या का राजा अपने एक साथ दो अचूक बाणों को धनुष पर चढ़ाकर अपने दुश्मन पर लक्ष्य साधता है, वैसे ही मैं आपसे दो प्रश्न पूछती हूँ।' गार्गी बड़े ही आक्रामक मूड में आ गईं।

याज्ञवल्क्य ने कहा– हे गार्गी, पूछो।

गार्गी ने पूछा, 'स्वर्गलोक से ऊपर जो कुछ भी है और पृथ्वी से नीचे जो कुछ भी है और इन दोनों के मध्य जो कुछ भी है, और जो हो चुका है और जो अभी होना है, ये दोनों किसमें ओतप्रोत हैं?'

गार्गी का पहला प्रश्न 'स्पेस' और दूसरा 'टाइम' के बारे था। स्पेस और टाइम के बाहर भी कुछ है क्या? नहीं है, इसलिए गार्गी ने बाण की तरह पैने इन दो प्रश्नों के जरिए यह पूछ लिया कि सारा ब्रह्माण्ड किसके अधीन है?

याज्ञवल्क्य ने कहा– एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गी' यानी कोई अक्षर, अविनाशी तत्व है जिसके प्रशासन में, अनुशासन में सभी कुछ ओतप्रोत है। गार्गी ने पूछा कि यह सारा ब्रह्माण्ड किसके अधीन है तो याज्ञवल्क्य का उत्तर था– अक्षरतत्व के! इस बार याज्ञवल्क्य ने अक्षरतत्व के बारे में विस्तार से समझाया।

इस बार गार्गी अपने प्रश्नों के जवाब से इतनी प्रभावित हुई कि जनक की राजसभा में उसने याज्ञवल्क्य को परम ब्रह्मिष्ठ मान लिया। इसके बाद गार्गी ने याज्ञवल्क्य की प्रशंसा कर अपनी बात खत्म की तो सभी ने माना कि गार्गी में जरा भी अहंकार नहीं है। गार्गी ने याज्ञवल्क्य को प्रणाम किया और सभा से विदा ली। गार्गी का उद्देश्य ऋषि याज्ञवल्क्य को हराना नहीं था।

जैसे कि पहले ही कहा गया है कि गार्गी वेदज्ञ और ब्रह्मज्ञानी थी तो वे सभी प्रश्नों के जवाब जानती थी। यहां इस कहानी को बताने का तात्पर्य यह है कि अर्जुन की ही तरह गार्गी के प्रश्नों के कारण 'बृहदारण्यक उपनिषद्' की ऋचाओं का निर्माण हुआ। यह उपनिषद वेदों का एक हिस्सा है।

ऋषि गार्गी प्राचीन हिंदू ग्रन्थों में पाए जाने वाले नारीवाद की सबसे पुरानी प्रतीक थीं। उन्हें वेदों और उपनिषदों में बड़े पैमाने पर उद्धृत किया गया है। यह गौरवशाली और प्रगतिशील पुराने वैदिक युग का प्रतिबिंब है, जहां महिलाएं खुद का उत्थान कर सकती हैं और महान ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकती हैं।

लीलावती

भास्कर पृथ्वी के सबसे अच्छे गणितज्ञों में से एक थे। उन्हें गणित और ज्योतिष के क्षेत्र में गहरा ज्ञान था। भास्कर की पुत्री लीलावती बुद्धिमान और सुन्दर दोनों थी जो एक दुर्लभ संयोजन था। भास्कर अपनी बेटी की जिज्ञासा से आशंकित थे। छोटी बच्ची ने अपने पिता से कई प्रश्न पूछे और इस तरह बहुत ज्ञान प्राप्त किया।

जैसे-जैसे वह बड़ी हुई, भास्कर ने लीलावती की शादी करने का फैसला किया। इस प्रक्रिया में भास्कर ने लीलावती की कुंडली देखी। जब उन्हें पता चला कि लीलावती का विवाह किसी विशेष शुभ मुहूर्त पर नहीं हुआ तो उनका वैवाहिक जीवन सुखी नहीं रहेगा तो उन्होंने इस बारे में लीलावती को नहीं बताया क्योंकि वह अपनी बेटी को चोट नही पहुँचाना चाहते थे। उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए, सभी व्यवस्थाएं की कि लीलावती का विवाह शुभ मुहूर्त में हो। यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह इस विशेष समय को याद न करे, उसने पानी से भरे एक बर्तन के तल पर एक छोटे से छेद वाला एक प्याला रखा, ताकि शुभ मुहूर्त की शुरुआत में प्याला डूब जाए। उन्होंने लीलावती को उसके के पास न जाने की चेतावनी दी।

जब भास्कर आसपास नहीं थे, लीलावती, अपनी जिज्ञासा को रोक नहीं पाई और यह देखने चली गई कि उसके पिता ने क्या योजना बनाई है। जब लीलावती यंत्र के निकट गई, तो वह निकट से देखने के लिए आगे झुकी। उसकी नथ से एक छोटा सा मोती पानी में गिर गया। वह जल्दी से वापस चली गई ताकि उसके पिता को पता न चले कि वह क्या कर रही है। पानी में गिरे छोटे मोती ने भास्कर द्वारा की गई गणना को उलट दिया और शादी हो गई, लेकिन शुभ मुहूर्त में नहीं।

नियति के अनुसार, विवाह के कुछ दिनों बाद लीलावती के पति की मृत्यु हो गई भास्कर अपनी विधवा बेटी को वापस अपने घर ले आए। लीलावती के चेहरे का प्रारंभिक आकर्षण खो चुका था। वह दिन-प्रतिदिन की सामान्य गतिविधियों में उदासीन लग रही थी। वह तालाब के किनारे बैठी शून्य में देख रही थी और रो रही थी। वह ज्यादातर समय चुप ही रहती थी। भास्कर को अपनी खूबसूरत बेटी में ये बदलाव देख पाना बहुत मुश्किल हो रहा था।

उसने उसे उसकी उदास स्थिति से बाहर निकालने का एक तरीका सोचा। उन्होंने लीलावती के सामने उनके आसपास की चीजों के बारे में अंकगणितीय समस्याएं रखीं और उनसे समस्याओं का समाधान खोजने को कहा। लीलावती, वह प्रतिभाशाली लड़की थी, जो उसके सामने आने वाली सभी समस्याओं को हल कर देती थी।

लीलावती का मन जो अपने पिता की गणितीय समस्याओं

को हल करने में लगा हुआ था, फिर कभी उदास नहीं हुआ। ऐसा माना जाता है कि भास्कराचार्य ने उन सभी समस्याओं को एकत्रित किया जो उन्होंने अपनी पुत्री के लिए रची थीं और उन्हें तेरह अध्यायों में व्यवस्थित किया। उन्होंने अपनी प्रिय पुत्री के नाम पर इस कृति का नाम लीलावती रखा।

ऐसा माना जाता है कि लीलावती दी गई हर जटिल समस्याओं को हल कर सकती थी जो अब पाइथोगोरस प्रमेय का उपयोग करके हल की जाती हैं। इस प्रकार, लीलावती भारत की पहली प्रतिष्ठित महिला गणितज्ञों में से एक बन गईं।

मैत्रेयी

ऋषि मैत्रेयी को उत्तर वैदिक काल की एक महान भारतीय दार्शनिक माना जाता था। हालाँकि उनकी पहचान के संबंध में दो अलग-अलग वर्णन हैं। एक मत के अनुसार वह एक अद्वैत दार्शनिक थीं और उन्होंने शादी नहीं की थी। दूसरी कहानी यह है कि वह ऋषि याज्ञवल्यक की दो पत्नियों में से एक थीं। सत्य इन दो विचारों का योग प्रतीत होता है। उन्हें वेदों की विद्वान ब्रह्मवादिनी के नाम से जाना जाता है।

मैत्रेयी, ऋषि मैत्री की पुत्री थीं और उन्हीं के नाम पर उनका नाम रखा गया। वह ऋषि गार्गी की भतीजी भी थी। मैत्रेयी का जन्म पूर्वी भारत के मिथिला में राजा जनक के शासन के समय हुआ था। बहुत छोटी उम्र से ही उन्हें उनके पिता द्वारा सभी शास्त्रों की शिक्षा दी गई थी और वे भौतिक सुखों के प्रति अनासक्त थी और उच्च आध्यात्मिक अवस्था तक पहुँच चुकी थी।

आध्यात्मिक ज्ञान की अपनी खोज में मैत्रेयी याज्ञवल्यक ऋषि की शिष्या बन गईं लेकिन याज्ञवल्यक एक गृहस्थ ऋषि थे जैसा कि उस समय आम था। उनका विवाह कात्यायनी से हुआ था और उनके तीन पुत्र भी थे। लेकिन जब कात्यायनी ने मैत्रेयी की आध्यात्मिक भक्ति और अधिक ज्ञान प्राप्त करने के उनके उत्साह को देखा, तो वह अपने पति से शादी करवाने के लिए तैयार हो गईं। कात्यायनी की इस कृपापूर्ण सहमति ने मैत्रेयी के आध्यात्मिक विकास को बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया।

मैत्रेयी प्रकृति से इतनी अधिक आध्यात्मिक थी कि उनके याज्ञवल्यक के आध्यात्मिक कद और ज्ञान में कई गुना वृद्धि हुईं मैत्रेयी ने ऋग्वेद में 10 सूक्तों की रचना की।

एक गृहस्थ संन्यासी के रूप में रहने के कई वर्षों के बाद, एक समय ऐसा आया जब याज्ञवल्यक ने फैसला किया कि सांसारिक संपत्ति को त्यागने और भौतिक संसार को त्यागने का यह सही समय है। उन्होंने मैत्रेयी को बुलाया और उन्हें अपने निर्णय के बारे में बताया। इसके बाद उन्होंने कहा कि वह अपनी संपत्ति को अपनी दोनों पत्नियों के बीच बराबर बांट देंगे। इस पर मैत्रेयी ने उनसे एक प्रश्न किया, 'यदि आप दुनिया की सारी संपत्ति मेरे चरणों में रख दें तो क्या मैं अमर हो जाऊंगी?'

याज्ञवल्यक उसके प्रश्न से प्रभावित हुए और उत्तर दिया कि धन के माध्यम से अमरत्व प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

मैत्रेयी ने कहा 'मुझे ऐसा कुछ भी नहीं चाहिए जो मुझे अमरता प्रदान न करे। परन्तु मैं उन साधनों को जानना चाहती हूँ जिनके द्वारा मैं अमरता प्राप्त कर सकती हूँ।'

याज्ञवल्यक ने उत्तर दिया, 'यदि आप किसी व्यक्ति का प्रेम प्राप्त करते हैं तो परमात्मा की कृपा प्राप्त होती है। केवल परमात्मा का ध्यान करो और तुम्हें सत्य का बोध होगा।'

'परमात्मा सबके अंदर है और सब परमात्मा में रहते हैं। इसलिए यदि आप परमात्मा के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं तो आपको हर चीज के बारे में ज्ञान प्राप्त होगा।'

लेकिन यदि आप परमात्मा को जानना और समझना चाहते हैं, तो आपको इंद्रिय सुखों से दूर रहना होगा और इंद्रियों को नियंत्रित करना होगा।

'जिसे तुम अमरत्व कहते हो वह शाश्वत है और जिसे हम अपनी आँखों से देखते हैं वह अस्थायी है। भौतिक या सामाजिक कोई भी वस्तु जो हमें सुख देती है, धन कहलाती है।'

याज्ञवल्यक ने इन शब्दों के साथ अपना प्रवचन समाप्त किया।

'जब तक सीमित वस्तुओं के पीछे के अनंत अस्तित्व को अच्छी तरह से नहीं समझा जाता है, तब तक किसी भी सीमित वस्तु को पूरी तरह से जाना या समझा नहीं जा सकता है।'

याज्ञवल्यक आगे मैत्रेयी को शाश्वत अविनाशी स्वयं और तीनों लोकों में मौजूद अस्तित्व, आनंद और विचारों के बारे में बताते हैं। वह अद्वैत दर्शन के चूडामणि या मुकुट रत्न को दोहराते हैं, जो यह है कि सभी आनंद का मूल स्वयं है और स्वयं के अलावा कुछ भी मौजूद नहीं है।

एक बार जब उन्होंने आत्मा और अमरता प्राप्त करने के मार्ग पर याज्ञवल्यक के प्रवचन को सुना तो मैत्रेयी शाश्वत आनंद पाने के मार्ग पर चल पडीं। उसने आध्यात्मिक ज्ञान की गहरी समझ प्राप्त करके जन्म और मृत्यु के अंतहीन चक्र से खुद को मुक्त किया और मोक्ष या अमरता प्राप्त की।

मैत्रेयी वर्तमान पीढ़ी की महिलाओं के लिए अनुसरण करने का एक आदर्श हैं। उन्होंने दिखाया कि दूसरों से प्रेम पाने के लिए स्वयं से या आत्मा से परिचित होना महत्वपूर्ण है।

उन्होंने उदाहरण देकर यह भी दिखाया कि केवल वेदों में दिखाए गए मार्ग को सुनने और अनुसरण करने व उनका अभ्यास करने से ही कैसे महिलाएं ज्ञान की ऊंचाइयों को हासिल कर सकती हैं ।

हाड़ी रानी

कविता
प्रबंधक (राभा)
अंचल कार्यालय, उदयपुर

राजस्थान के वीरों की गाथाओं के चर्चे चहुँ ओर होते आए हैं। बप्पा रावल, राणा सांगा, महाराणा प्रताप पृथ्वीराज चौहान, गोरा-बादल, वीर दुर्गादास, अमरसिंह राठौड़, जैसे अनगिनत नाम जिनकी वीरता को सम्पूर्ण विश्व नमन करता है। इन वीरों को जन्म देने वाली माताओं या कह लें कि सिंहनियों की महिमा अतुल्य है।

अनेकों वीरांगनाओं और माताओं ने इस धरती के इतिहास, विचार और कला में अपना भरपूर योगदान दिया है। मीराबाई के द्वारा लिखे गये साहित्य की बात करें या हाड़ी रानी द्वारा दिये गये सर्वोच्च बलिदान की या फिर सुन्दरता की मूरत रानी पद्मिनी की जिसने अपने स्वाभिमान तथा धर्म की रक्षा हेतु हजारों रानियों, वीरांगनाओं के साथ अपने प्राणों की आहुति दे दी।

हाड़ी रानी

"चुण्डावत मांगी सैनाणी, सिर काट दे दियो क्षत्राणी"

राजस्थान में गाया जाने वाला यह गीत हाड़ी रानी के शौर्य एवं अमर बलिदान को दर्शाता है। मेवाड़ के स्वर्णिम इतिहास में हाड़ी रानी का नाम अपने स्वर्णिम बलिदान के लिए अंकित है। जब मेवाड़ पर महाराणा राजसिंह (1652 - 1680 ई.) का शासन था, इनके सामन्त सलुम्बर के राव चुण्डावत रतन सिंह हुआ करते थे, जिनकी हाड़ा राजपूत सरदार की बेटी से शादी हुई थी। लेकिन शादी के सात दिन बाद ही राव चुण्डावत रतन सिंह को महाराणा राजसिंह का सन्देश प्राप्त हुआ था, जिसमें उन्होंने राव चुण्डावत रतन सिंह को, दिल्ली से औरंगजेब की सहायता के लिए आ रही अतिरिक्त सेना को रोकने का निर्देश दिया था। राव चुण्डावत रतन सिंह, संदेश प्राप्त होते ही युद्ध के लिए रवाना हो गए।

युद्ध के दौरान ही उन्होंने अपनी पत्नी के नाम एक पत्र भिजवाया, "प्रिय मैं यहां शत्रुओं से लोहा ले रहा हूं। अंगद के समान पैर जमाकर उनको रोक दिया है। मजाल है कि वे जरा भी आगे बढ़ जाएं। यह तो तुम्हारे रक्षा कवच का प्रताप है, पर तुम्हारी बड़ी याद आ रही है। पत्र वाहक द्वारा कोई अपनी प्रिय निशानी अवश्य भेज देना। उसे ही देखकर मैं मन को हल्का कर लिया करूंगा।"

हाड़ी रानी पत्र को पढ़कर सोच में पड़ गयीं। युद्धरत पति का मन यदि मेरी याद में ही रमा रहा, उनके नेत्रों के सामने यदि मेरा ही मुखड़ा घूमता रहा तो वह शत्रुओं से कैसे लड़ेंगे। विजय श्री का वरण कैसे करेंगे? उसके मन में एक विचार कौंधा। वह सैनिक से बोलीं, "वीर! मैं तुम्हें अपनी अंतिम निशानी दे रही हूं। थाल में सजाकर सुंदर वस्त्र से ढककर अपने वीर सेनापति के पास पहुंचा देना। किन्तु इसे कोई और न देखे। वे ही खोल कर देखें। साथ में मेरा यह पत्र भी दे देना।" हाड़ी रानी के पत्र में लिखा था, "प्रिय, मैं तुम्हें अपनी अंतिम निशानी भेज रही हूं। तुम्हारे मोह के सभी बंधनों को काट रही हूं। अब बेफिक्र होकर अपने कर्तव्य का पालन करें, मैं तो चली स्वर्ग में तुम्हारी बाट जोहूंगी।" पलक झपकते ही हाड़ी रानी ने अपने कमर से तलवार निकाल, एक झटके में अपने सिर को उड़ा दिया। वह धरती पर लुढ़क पड़ा। सिपाही के नेत्रों से अश्रुधारा बह निकली।

कर्तव्य कर्म कठोर होता है। सैनिक ने स्वर्ण थाल में हाड़ी रानी के कटे सिर को सजाया। सुहाग के चूनर से उसको ढका। भारी मन से युद्ध भूमि की ओर दौड़ पडा। उसको देखकर हाड़ा सरदार स्तब्ध रह गया, उसे समझ में न आया कि सिपाही के नेत्रों से अश्रुधारा क्यों बह रही है? धीरे से वह बोला, "क्यों यदुसिंह। रानी की निशानी ले आए?" सिपाही ने कांपते हाथों से थाल उनकी ओर बढ़ा दिया। हाड़ा सरदार फटी आंखों से पत्नी का सिर देखता रह गया। उसके मुख से केवल इतना निकला, "उफ्फ हाय रानी। तुमने यह क्या कर डाला। संदेही पति को इतनी बड़ी सजा दे डाली। खैर, मैं भी तुमसे मिलने आ रहा हूं।"

हाड़ा सरदार के मोह के सारे बंधन टूट चुके थे। वह शत्रु पर टूट पड़ा। इतना अप्रतिम शौर्य दिखाया कि उसकी मिसाल मिलना बड़ा कठिन है। जीवन की आखिरी सांस तक वह लड़ता रहा। औरंगजेब की सहायक सेना को उसने आगे नहीं बढ़ने दिया।

इस विजय का श्रेय आज भी राजस्थान के अंचलों में हाड़ी रानी को उनके अमर बलिदान की यशोगाथाओं में दिया जाता है, जिसके चलते इसी वीरांगना के नाम पर राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थान पुलिस में एक महिला बटालियन का गठन किया गया। गठन के बाद इस महिला बटालियन का नामकरण इसी वीरांगना के नाम पर हाड़ी रानी महिला बटालियन रखा गया है।

कल्पना दत्त - वीर महिला

नीलू साव
सहायक प्रबंधक (राभा)
अंचल कार्यालय, बारासात

अन्य क्षेत्रों की भांति भारत के स्वतंत्रता संग्राम में पुरुषों की भांति महिलाओं का विशेष योगदान रहा है। उन्होंने न केवल अंग्रेजों से लोहा लिया बल्कि अपने शौर्य एवं पराक्रम के बल पर उन्हें दांतों तले चने चबवा दिये। कल्पना दत्त का जन्म 27 जुलाई, 1913 को चटगांव के श्रीपुर गाँव में हुआ था। विभाजन के पश्चात चटगाँव वर्तमान में बांग्लादेश का हिस्सा है। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा चटगाँव से पूरी की एवं 1930 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात कलकत्ता में आगे की पढ़ाई जारी रखी। कलकत्ता के मैथ्युन कॉलेज में उन्होंने विज्ञान में दाखिला लिया। इसी दौरान कल्पना प्रसिद्ध क्रांतिकारियों की जीवनी पढ़कर प्रभावित हुईं और शीघ्र ही कुछ करने को आतुर हो उठीं। वह छात्र संघ से भी जुड़ती गईं। इसी दौरान उनकी मुलाकात प्रीतिलता वाड्डेदार तथा वीणा दास से हुई और उनकी रूह को यह भी भनक न लगी कि कब वह स्वतंत्रता की लडाई में कूद पडीं।

18 अप्रैल, 1930 ई. को चटगांव शस्त्रागार में लूट की घटना होते ही कल्पना दत्त कोलकाता से चटगांव चली गईं और क्रांतिकारी सूर्यसेन के दल से संपर्क कर लिया। सूर्यसेन अर्थात मास्टर दा कल्पना दत्त से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उन्हें "अग्निकन्या" नाम दे दिया। कल्पना भी मास्टर दा से इतनी प्रभावित हुई कि वे उनके संगठन "इंडियन रिपब्लिकन आर्मी" में शामिल हो गईं। संगठन में शामिल होने के पश्चात कल्पना कलकत्ता से विस्फोटक सामग्री संगठन को पहुंचाती रहीं। वह गुप्त रूप से संगठन को हथियार भी पहुंचाने लगी जिसमें उनका साथ उनकी साथी प्रीतिलता वाड्डेदार भी देती थीं।

कल्पना दत्त ने सूर्यसेन से बंदूक चलाने का प्रशिक्षण रात के अंधेरे में लिया। कल्पना दत्त और प्रीतिलता वाढेदार के पराक्रमी रूप को देखकर उन्हें "यूरोपियन क्लब" में बम फेंकने की जिम्मेदारी सौंप दी गईं इस योजना के तहत इन्हें पुरुष भेष धारण करना पड़ा। परन्तु ब्रिटिश पुलिस को इसकी भनक लग गई और कल्पना दत्त को गिरफ्तार कर लिया गया परन्तु अभियोग सिद्ध न होने के कारण कल्पना दत्त को रिहा कर दिया गया एवं उनके घर पर पुलिस का पहरा बैठा दिया गया। कल्पना पुलिस को चकमा देने में सफल हुई और दो साल तक अंडरग्राउंड रह कर सूर्यसेन की सहायता करती रहीं। 1933 ई. में कुछ समय तक पुलिस और क्रांतिकारियों के मध्य सशस्त्र मुकाबला होने के पश्चात कल्पना पुलिस की गिरफ्त में आ गईं, मुकदमा चला और फरवरी 1934 ई. में सूर्यसेन एवं तारकेश्वर दस्तीकार को फांसी दे दी गई और 21 वर्षीय कल्पना दत्त को आजीवन कारावास की सजा हो गईं

1937 ई. में जब प्रथम बार प्रदेशों में भारतीय मंत्रिमंडल बने तब महात्मा गांधी ने क्रांतिकारियों को रिहा करने हेतु एक अभियान चलाया। उसी अभियान के तहत कल्पना 1939 ई. में जेल से बाहर आ गईं। जेल से बाहर आने के पश्चात उन्होंने आगे की पढ़ाई हेतु अपना दाखिला कलकत्ता में करवाया। स्नातक की डिग्री लेने के पश्चात वह "भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी" में शामिल हो गईं और 1943 में उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव पूरन चंद जोशी से विवाह कर लिया और वह कल्पना जोशी के नाम से भी जानी जाने लगीं। इसी समय बंगाल में अकाल का साया मंडरा रहा था। इस दौरान कल्पना ने बढ़-चढ़कर अकाल पीड़ितों की सेवा की। बाद में कल्पना बंगाल से दिल्ली आ गईं और देश की राजनीति में भी अपना सक्रिय योगदान दिया। वह "इंडो सोवियत सोसायटी" में काम करने लगीं। सितंबर, 1979 ई. में कल्पना दत्त को वीर महिला की उपाधि से सम्मानित किया गया। कल्पना जोशी के दो पुत्र थे- चाँद जोशी एवं सूरज जोशी। चाँद जोशी एक पत्रकार के रूप में उभर कर सामने आये। कल्पना दत्त ने दिल्ली में 8 फरवरी, 1995 को इस दुनिया को अलविदा कह दिया। चाँद जोशी की पत्नी मानिनी ने **"डू एंड डाई: चटग्राम विद्रोह"** नामक एक उपन्यास भी लिखा। भारतीय फिल्म जगत ने भी उनकी वीरता को अनदेखी नहीं कर पाया और सन् 2010 में "आशुतोष गोवारिकर" के निर्देशन में उनपर एक फिल्म "खेले हम जी जान से" बनाई गई।

महिला सशक्तिकरण

मधुमिता सेठी
मुख्य प्रबंधक
अंचल कार्यालय, कोलकाता सेन्ट्रल

मैं औरत हूँ
माँ बन प्यार करती हूँ,
प्रकृति बन सृजन करती हूँ,
तो काली बन विनाश भी कर सकती हूँ।

नर और नारी, संसार रूपी रथ के दो पहिये हैं जिसमें दोनों की भूमिका अहम है, किन्तु हमारी 'पुरुष प्रधान सोच' ने उसकी वास्तविक छवि कभी उभरने ही नहीं दी। 'सशक्तिकरण' का अर्थ – स्वावलंबन, अपने जीवन के महत्वपूर्ण मुद्दों की स्वयं मालकिन होना, जैसे हर पुरुष स्वयं अपने फैसले लेना चाहता है उसे किसी की दखलअंदाजी पसंद नहीं। संदर्भ का उद्देश्य पुरुषों की आलोचना करना नहीं, बल्कि स्त्री जो भूमिका निभाती है, उसके अनुसार समाज में उसे उतनी ही इज्जत और स्वयं के मुद्दे पर खुद लड़ने का हक चाहिए। वह नहीं चाहती कि पुरुष कभी भाई, चाचा, पति, समाज या बेटे के नाम पर या कोई महिला ही इस प्रकार की सोच उस पर थोपे।

प्रत्येक वर्ष महिलाओं के सम्मान, उनके जज्बे को सलाम करने, समाज में उनकी स्थिति की मजबूती को लेकर जागरूकता फैलाने हेतु अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, मदर्स डे जैसे अवसरों को मनाते हैं परन्तु वर्षों से चली आ रही परिपाटी का अर्थ क्या है? क्या एक दिन महिलाओं, माताओं, पुत्रियों को समर्पित करना काफी है? जिस समाज में दुर्गा, काली, सरस्वती के रूप में नारी पूजनीय हो, जिस समाज में नीता अंबानी, इंदिरा नुई, अवनी चतुर्वेदी, स्मृति मंदाना, सुधा मूर्ति जैसे प्रेरणा स्त्रोत मौजूद हैं, वहां बलात्कार, हिंसा, दहेज के लिए उत्पीड़न जैसी स्थितियाँ कैसे पनप सकती हैं? यह एक ऐसा प्रश्न है जो सभी के दिमाग में आता है।

प्रश्न उठता है कि महिलाओं की स्थिति इतनी पिछड़ी क्यूँ है? कई जगहों में स्थिति और भी गंभीर है। सर्वप्रथम कारण है 'पुरुष प्रधान सोच', जो अपने अहम और सामाजिक रीति-रिवाज के नाम पर महिलाओं के पैरों को बेडियों से जकडती है। यह 'पुरुष प्रधान सोच' वर्तमान में कुछ पिछड़ी महिलाओं में भी मौजूद है- बेटा ही घर का दीपक है – घरेलू हिंसा का मूल कारण है। कई स्थानों मे स्वयं महिलाएँ ही आत्म सम्मान की कमी के कारण खुद को पिछडा बनाए रखती हैं – वे पर्दे में रहकर, खुद को पुरुष से कम आंकती हैं।

"महिलाओं की स्थिति देश के विकास को सूचित करती है" – जवाहर लाल नेहरू। किसी समाज की उन्नति या आधुनिकता उस देश की सैन्य शक्ति, तकनीकी योग्यता के साथ-साथ वहाँ की महिलाओं की स्थिति से मापते हैं। महिलाओं को अपने स्वावलंबन हेतु खुद आगे बढ़ना होगा। कोई उसका होकर नहीं लड़ेगा, उसे स्वयं अपनी स्थिति के प्रति जागरूक बनना होगा, उसे अपने अधिकार अपना हक जानना होगा और उनके लिए लड़ना होगा। निसंदेह स्थिति आज थोड़ी बेहतर हुई है। महिलाएँ आगे बढ़ रहीं हैं लेकिन ये जागरूकता, तरक्की गाँव-गाँव तक पहुँचानी होगी तभी साक्षरता बढ़ेगी, बलात्कार कम होंगे। इसकी पहली सीढ़ी महिलाएं खुद हैं – उन्हें खुद जागरूक होना होगा। सरकारी कानून मौजूद हैं किन्तु उचित कार्यान्वयन की कमी है। अभिभावक बचपन से ही अपनी पुत्रियों को जागरूक करवाएं कि समाज में उसकी जगह कहाँ है? बेटों को, महिलाओं का सम्मान करने की शिक्षा दें। आज की स्त्री न केवल पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला सकती है, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ सकती है। उसमें उन्मुक्तता, सृजन एवं सबलता का एहसास है।

महाश्वेता देवी

चेतना शर्मा
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, आसनसोल

जीवनः

महाश्वेता देवी बीसवीं सदी के अंत और इक्कीसवीं सदी की शुरुआत से भारत की अग्रणी साहित्यकारों में से एक थीं। अपनी लेखनी से आदिवासियों को वाणी प्रदान करने वाली बांग्ला भाषा की श्रेष्ठतम लेखिका महाश्वेता देवी का जन्म बंगाल के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। 14 जनवरी 1926 को ब्रिटिश भारत में बांग्लादेश के ढाका में जन्मी महाश्वेता देवी, कवि और उपन्यासकार मनीष घटक की बेटी और प्रसिद्ध फिल्म निर्माता ऋत्विक घटक की भतीजी थीं। उनकी मां भी एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता और लेखिका थीं।

इनकी शिक्षा-दीक्षा शान्ति निकेतन में पूर्ण हुई, जहां से इन्होंने बी.ए. आनर्स के साथ अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया। 1947 में इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन (इप्टा) के संस्थापक सदस्य और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता विजन भट्टाचार्य से उनका विवाह हुआ। विवाहोपरान्त महाश्वेता देवी ने अपना जीवन समाज सेवा में लगा दिया, साथ ही इनका लेखन कार्य भी चलता रहा। इनका विवाह सम्बन्ध बहुत दिनों तक नहीं चल सका। सन् 1962 में उन्होंने अपने पति से अलग होने का फैसला किया। अपने पति को तलाक देने के उनके फैसले को उस समय कई लोगों द्वारा एक साहसिक कदम के रूप में देखा गया।

इन्होंने कई विषयों पर अपनी लेखनी चलायी, जिसके लिए यह राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी हैं। सुश्री देवी ने उस मध्यम वर्ग के बंधनों को त्याग दिया था जिसमें उनका जन्म हुआ था और उन्होंने सादगी से रहना चुना था। अक्सर अपनी प्रजा के साथ देश भर में घूमते हुए उन्होंने शोध किया। 100 से अधिक उपन्यासों और लघु कथाओं में, उन्होंने भारत के आदिवासी समुदायों और माओवादी विद्रोहियों, वेश्याओं और खानाबदोशों, भिखारियों और मजदूरों के बारे में लिखा। उन्होंने जातिगत उत्पीड़न, भूमि हड़पने, लोगों के अधिकारों के दमन और औद्योगिक बंदी पर लिखा। उन्होंने कहा, "मैं जनता के लिए लिखती हूं। मैं जितना संभव हो उतने लोगों तक पहुंचना चाहती हूं।" महाश्वेता देवी एक महान् लेखिका ही नहीं, समाज सेविका भी रही हैं। उन्होंने महिलाओं, आदिवासियों, दलितों, भूमिहीन मजदूरों और प्रवासियों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ीं।

रचनाएं एवं पुरस्कारः

1980 के दशक के अंत और 1990 के दशक की शुरुआत तक, उन्होंने खुद को एक साहित्यिक शक्ति के रूप में स्थापित कर लिया था। उनकी रचनाओं में झांसी की रानी, नदी, प्रेमतारा, मध्यारातेर गान, हजार चौराशीर मां, अरण्येर अधिकार, अवलांत कौरव, चौटी मुंडा एवं तारा तीर, पतालक, सत्य, असत्य, श्री गणेश महिमा, मिलुर जन्य, मास्टर साहब, कहानी-सप्तपर्णी अग्नि गर्भ, मूर्ति घटक, अमृत संचय आदि प्रमुख हैं। इनके उपन्यास, बाल-साहित्य, लघु कहानी, नाटक, प्रबन्ध, पाठ्यपुस्तक, अनुवाद सहित 172 पुस्तकें हैं।

समान अधिकार वाली लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता रहीं महाश्वेता देवी ने कई उपन्यासों, निबंधों और लघु कथाओं के द्वारा 1996 में ज्ञानपीठ पुरस्कार, भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान प्राप्त किया।

महाश्वेता देवी की पुस्तक पर आधारित गुड़िया फिल्म को अन्तर्राष्ट्रीय पाक फिल्म महोत्सव में दिखाया गया। इन्हें 32 ज्ञानपीठ पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। श्रीमती महाश्वेता देवी को 28 मार्च 1997 को दिल्ली के विज्ञान भवन में 2.50 लाख रुपये प्रशस्ति पत्र के साथ "वाग्देवी" पुरस्कार से नवाजा गया। 1998 में इन्हें 1 लाख रुपये का यास्मीन पुरस्कार, 1997 में फिलीपींस सरकार द्वारा रमन मेग्सेसे पुरस्कार, पत्रकारिता, संवाद एवं रचनात्मक कला के लिए प्रदान किया गया।

1997 का नेताजी पुरस्कार, 1998 का टैगोर साक्षरता पुरस्कार, वर्ष 2000 का पी.सी. चन्द्रा पुरस्कार भी इन्हें मिला है। पद्मश्री से सम्मानित महाश्वेता देवी ने 2001 में टीटू मीर नामक पुस्तक लिखी है जोकि अपनी सहज भाषा शैली के कारण विशेष लोकप्रिय रही है।

निधनः

28 जुलाई, 2016 को 91 वर्ष की आयु में दिल का दौरा पड़ने से कोलकाता में उनका निधन हो गया।

मेहरुन्निसा परवेज और नारी उत्थान संघर्ष

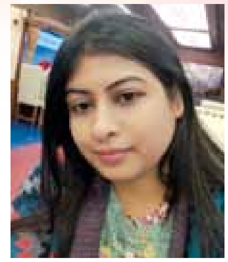

सबिता
सहायक प्रबंधक
अंचल कार्यालय, कोलकाता उत्तर

साठोत्तर हिन्दी कथाकारों में मेहरुन्निसा परवेज का नाम शुमार है। मात्र 19 वर्ष की आयु में ही उनकी पहली कहानी 'पांचवीं कब्र' का प्रकाशन कमलेश्वर द्वारा संपादित पत्रिका 'नई कहानियां' में हुआ। तब से लेकर आज तक उनकी रचनाशीलता बनी हुई है। अब तक इनके 14 कहानी संग्रह और 5 उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से समाज की विभिन्न विकृतियों को हमारे सामने रखा है। उनके साहित्य में विमर्शों के खाके के बाहर के जीवन के अनुभवों को भी स्थान मिला है। उनकी व्यक्तिपरक संवेदनाओं के क्षितिज में जीवन के कई दृश्य शामिल हैं। एक महिला कथाकार होने के नाते इनके कथा साहित्य में भी महिलाओं से जुड़ी समस्याओं का विशेष रूप से चित्रण है। मेहरुन्निसा परवेज ने जिस समय साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण किया उस समय साहित्यिक रचनाओं में अनेक परिवर्तन शामिल हो रहे थे। साठोत्तर कथाकरों ने अपनी रचनाओं में निजी अनुभूतियों को भी स्थान दिया, साथ ही वे अपने परिवेश को भी अभिव्यक्त कर रहे थे। उनमें एक नई मूल्यपरक दृष्टि का विकास हुआ और उनकी तटस्थ एवं निर्वैयक्तिक दृष्टि ने समाज की ज्वलंत समस्याओं, परिवर्तनशीलता के सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्वों एवं मनुष्य की विकृतियों-विशेषताओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया। परवेज जी की रचनाओं में भी इन सूक्ष्म तत्वों का समावेश हुआ है। उनके रचना संसार को बेहतर समझने के लिए उनके परिवेश एवं जीवन के कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं का अवलोकन कर लेना उचित होगा।

परवेज जी का जन्म 10 दिसंबर, 1944 को मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले के बहेला नामक ग्राम में हुआ। पिता का सरकारी विभाग में नौकरी के कारण स्थानांतरण होता रहता था जिससे इनकी प्रारंभिक शिक्षा एक स्कूल में न होकर कई स्कूलों में हुई मुख्य रूप से उनका बचपन बस्तर और वहाँ के आदिवासियों के बीच गुजरा है जिसका प्रभाव उनके साहित्य पर भी दिखाई पड़ता है। परवेज जी का विवाह मात्र 15 वर्ष की आयु में रऊफ परवेज के साथ हुआ। रऊफ उर्दू के शायर थे। मेहरुन्निसा परवेज के पिता प्रगतिशील विचार के थे किंतु ससुराल कट्टरपंथी विचारवाला था। परवेज जी को शादी के लगभग 10 वर्ष तक बच्चा नहीं हुआ। फलतः ससुराल में उनका अपमान होने लगा। बाद में उन्हें एक पुत्र प्राप्त हुआ जिसका नाम सलीम था। परवेज जी और उनके पति रऊफ के बीच अनबन बनी रही और अंततः दोनों का तलाक हो गया। तलाक के बाद वह लगभग बेसहारा थी फिर भी वह अपने मनोबल से आगे चल पड़ी। परवेज जी ने 35 वर्ष की आयु में दूसरा विवाह श्री भागीरथ प्रसाद से किया।

परवेज जी ने समाज के निर्बल और शोषितों की स्थिति सुधारने के लिए मात्र कलम ही नहीं उठाई बल्कि प्रत्यक्ष रूप से ठोस कार्य भी किए। विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए उन्होंने निःस्वार्थ भाव से समाजसेवा का कार्य किया। वर्ष 1974 में वे बस्तर जिले की बाल एवं परिवार कल्याण परियोजना की अध्यक्ष रहीं। उन्होंने आदिवासी महिलाओं को अधिकारों के प्रति जागरूक एवं आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने हेतु प्रयास किया। उन्होंने बस्तर में रुकमणि देवी आश्रम की स्थापना में अथक परिश्रम कर एक सशक्त महिला विकास केंद्र के रूप में उसे विकसित किया। सन् 1993 से 1996 तक मध्यप्रदेश में पिछड़ा वर्ग आयोग की सदस्य रहीं। उन्होंने बांछड़ा जातियों की लड़कियों की वेश्यावृत्ति बंद करवाने हेतु प्रयास किया। उन तक सरकारी योजनाओं, स्वास्थ्य परीक्षण की सुविधा आदि को पहुँचाने के प्रयास किए। समाज के दुर्बल घटकों की समस्याओं को अपने साहित्य में प्रस्तुत कर उनकी दुर्दशा की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया है। वर्तमान में वे मध्यप्रदेश के राज्यपाल की अध्यक्षता में गठित 'मध्यप्रदेश महात्मा गांधी ट्रस्ट' की न्यासी हैं। वे समाज कल्याण, हिंदी-उर्दू भाषाओं के उत्थान, महिला एवं बाल विकास तथा कमजोर वर्ग के उत्थान में संलग्न प्रदेश एवं देश की कई संस्थाओं में सक्रिय हैं।

परवेज जी का साहित्य नारी शोषण, वेदना और उपेक्षा का साक्षी है। उनका नारी मन पुरुष-प्रधान समाज द्वारा नारी शोषण

के लिए बनाए गए विधि, रीति, संस्कारों का विरोधी है। उनकी उदार संवेदना सभी जाति, वर्ग, वर्ण, धर्म की नारियों के साथ है। इसलिए उनके साहित्य में सभी धर्म, जाति विशेष कर बस्तर की आदिवासी महिलाओं के आंसुओं से भरे जीवन को करुणा, दया, सहानुभूति के साथ वाणी दी गई परवेज जी नारी सम्मान एवं नारी के अधिकारों की प्रबल समर्थक हैं। उनके साहित्य के नारी पात्र अपने सम्मान एवं अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ते हुए दिखाई देते हैं। नारी की वेदना, घुटन तथा छटपटाहट को उन्होंने अत्यंत संवेदनशीलता से उजागर किया है। पुरुष-प्रधान समाज में नारी को व्यक्तिगत स्तर पर स्वेच्छा से चयन का अधिकार नहीं था; न शिक्षा का, न नौकरी का और न ही आर्थिक स्वतंत्रता का। समाज में इसका निर्णय केवल पुरुष ही कर सकता था। उसकी इच्छा के बिना वह घर की चौखट भी पार नहीं कर सकती थी। पर्दे के पीछे अपना दु:ख भोगती रही। इनकी रचनाओं में स्त्री-पुरुष के बीच की कृत्रिम दीवार को तोड़कर नारी को पुरुष के समान जीने की प्रेरणा दी गई है। साथ ही ऐसे पुरुष की छत्रछाया से नारी मुक्ति का आह्वान किया गया है। कई रचनाओं में नारी स्वतंत्रता के लिए विरोध के तीव्र स्वर पाए जाते हैं। ऐसी नारियाँ नौकरी कर आर्थिक क्षेत्र में स्वावलंबी हैं, स्व-इच्छा से प्रेम विवाह करती हैं, पुरानी मान्यता और रूढियों का विरोध करती हैं। इस प्रकार वे रचना और समाज सेवा के माध्यम से समाज में नारी को पुरुष के समान अधिकार और स्व-चयन का अधिकार दिलाने का प्रयत्न कर रही हैं।

परवेज जी के कथा साहित्य में नारी जीवन से संबंधित विभिन्न सामाजिक विकृतियों पर प्रकाश डाला गया है। शिक्षा न होने के कारण स्त्री अंधेरे में पड़ी रहती है, उसके लिए दुनिया के साथ कदम मिला कर चलना मुश्किल होता है, वह अपने अधिकारों के प्रति अनभिज्ञ एवं उदासीन होती है और जीवन में आई आकस्मिक समस्याओं का सामना नहीं कर पाती है, अत: परवेज जी स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हर संभाव प्रयास कर रहीं हैं। इसके साथ ही उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से दहेज प्रथा और अनमेल विवाह का विरोध किया है जो स्त्री के जीवन को नष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन सभी पारंपरिक समस्याओं के अतिरिक्त उनके साहित्य में स्त्री जीवन के अनछुए पहलुओं को उजागर किया गया है जो एक स्त्री जीवन के सामान्य जीवन को बर्बादी के मोड़ पर लाकर खड़ा कर देती है। इस संदर्भ में उनकी कहानी 'सूकी बयड़ी' की दो महत्वपूर्ण घटनाओं को उद्धृत करना समीचीन होगा।

कहानी का शीर्षक 'सूकी बयड़ी' प्रतीकात्मक रूप से नीमड़ा की बडी बेटी थोरा के जीवन को व्याख्यायित करता है। नीमड़ा की तीन बेटियां और एक बेटा है- थोरा, होरा, फूलाँ और टेसूआ। थोरा और होरा की शादी एक साथ एक ही घर में होती है। थोरा सांवली है जबकि होरा गोरी। थोरा का सांवलापन उसकी जिंदगी की खुशियों को गहरा आघात पहुँचा रहा है। वस्तुत: यह हमारे पुरुष वर्चस्ववादी समाज की मानसिकता है जिसमें पुरुष का रूप, रंग, शारीरिक बनावट चाहे जैसी भी हो किंतु उसे पत्नी के रूप में किसी अप्सरा का ही सपना आता है। पुरुष वर्चस्ववादी मानसिकता स्त्रियों के गुणों की अपेक्षा रूप और रंग को अधिक महत्व देती है। थोरा भी इस मानसिकता की भेंट चढ़ती है। शादी की पहली रात को ही उसके हृदय पर आघात होता है। उसका पति कोठरी में घुसते ही कहता है "तेरी बईण तो राणी रूपमती है। मेरा भाई बड़ा भाग्यवान है।"

वस्तुत: हमारे समाज में लड़कियों के लिए सांवलापन विशेषकर कालापन किसी शारीरिक अपंगता जितना ही बड़ा अभिशाप है। ऐसी लड़कियों के जन्म पर दु:ख और अफसोस जताया जाता है। शरीर का यह रंग लड़कियों को हीन महसूस करने को बाध्य करता है, उनके आत्मविश्वास को खत्म करता है और उनके व्यक्तित्व को बेरहमी से कुचलता है। कई बार यह अभिशाप तो उसे मृत्यु के मुंह में भी धकेल देता है। हालांकि वर्तमान में अपने अधिकारों के प्रति जागरूक महिलाओं के दस्ते ने समाज की इस मानसिकता पर आघात किया, जिसका प्रभाव हमें बाजारू उत्पाद से लेकर फिल्मी दुनिया तक देखने को मिलने लगी है। हिंदुस्तान युनिलीवर कंपनी को अपने उत्पाद 'फेयर एंड लवली' का नाम बदल कर 'ग्लो एंड लवली' करना पडा। फिल्मी दुनिया के गानों में प्रेमिका की तारीफ में शब्द 'चौदवीं का चाँद' और 'गोरी है तू हद' से चलकर 'साँवली सलोनी' तक आ गई है। फिर भी अभी तक इस मानसिकता का पूर्ण रूप से निराकरण नहीं हुआ है।

'सूकी बयड़ी' की थोरा की समस्या केवल उसके सांवलेपन पर खत्म नहीं होती है। शादी के बाद उसकी बहन होरा मां बनती है, लेकिन थोरा को कोई बच्चा नहीं होता है। उसके पति को बहाना मिलता है और वह एक दूसरी स्त्री ले आता है। सौत के आने से थोरा का जीवन शून्य हो जाता है। उसके पति का अब उसके प्रति कोई फर्ज नहीं। थोरा दिनभर कोठरी में कैद रहती है। बहन उसको वहीं खाना दे जाती है। वास्तव में हमारे समाज ने विवाह पश्चात एक स्त्री का अंतिम लक्ष्य संतान उत्पन्न करना ही निर्धारित कर दिया है और यदि ऐसा

नहीं हुआ तो उसे महसूस कराया जाता है कि उसका जीवन व्यर्थ हो गया है। किसी दंपति को बच्चा नहीं होने के कई कारण हो सकते हैं, किंतु प्रथम दृष्टया इसके लिए स्त्री में दोष होना मान लिया जाता है, जिससे एक विवाहिता की स्थिति ससुराल में दयनीय हो जाती है। परिवार में उसकी भागीदारी और सम्मान कमतर होने लगते हैं। मध्यवर्ग और उच्चवर्ग तो इलाज के माध्यम से अधिकतर इस समस्या से निदान पा लेते हैं या कई बार पुरुषों की अक्षमता का पता लग जाता है, किन्तु निम्नवर्ग की स्त्रियां सहज ही इसका शिकार होती हैं। थोरा की भी स्थिति ऐसी ही है, क्योंकि उसके पति को दूसरी पत्नी से भी संतान प्राप्त नहीं होती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मेहरुन्निसा परवेज के साहित्य सृजन का मूलाधार अपनी संवेदनाओं, अनुभवों एवं विचारों को दूसरों तक अधिकाधिक पहुँचाने की चाह है। उनकी निजी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति उनकी रचना निर्माण का मूल मंत्र है। परवेज जी ने उपन्यास, कहानी, लेख, संस्मरण आदि लिखते हुए एवं 'समरलोक' त्रैमासिक पत्रिका का संपादन करते हुए अपने साहित्य की यात्रा आज भी जारी रखी है। स्वस्थ सामाजिक व्यवस्था की अभिलाषा और यातना से मुक्ति पाने की छटपटाहट ही इनके लेखन का आधार है। अपने लेखों के माध्यम से उन्होंने विशेष रूप से आदिवासियों की स्थिति एवं समस्याओं पर प्रकाश डाला है। संस्मरणों में उन्होंने अपने बचपन की कुछ घटनाओं को मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। परवेज जी का विविध विषयों पर लिखा गया साहित्य, समाज के दुर्बल एवं पीड़ित घटकों के प्रति संवेदनशीलता एवं सहानुभूति को प्रकट करता है।

परवेज जी को अपने लेखन एवं सामाजिक कार्यों के लिए कई पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं, और इस यात्रा में उन्हें वर्ष 2005 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा "पद्मश्री" से सम्मानित किया गया। लेखन कार्य में उन्हें वर्ष 1980 में 'कोरजा' उपन्यास के लिए मध्यप्रदेश सरकार का 'अखिल भारतीय महाराजा वीर सिंह जूदेव' राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इस उपन्यास को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ से भी सम्मान प्राप्त हुआ। सन् 1995 में उन्हें 'सुभद्रा कुमारी चौहान' पुरस्कार मिला। सन् 1995 में ही उत्तर हिंदी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण' सम्मान से अलंकृत किया गया। 'भारत भाषा भूषण' सम्मान उन्हें वर्ष 2003 में प्राप्त हुआ। साहित्यिक पत्रिका 'समर लोक' के संपादन के लिए वर्ष 2003 में 'श्री रामेश्वर गुरू पुरस्कार' प्राप्त हुआ। सितंबर, 1999 में लंदन में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी भाषा एवं साहित्य की विशिष्ट सेवाओं के लिए उन्हें सम्मानित किया गया।

अहमियत

शिप्रा सचान
सहायक प्रबंधक
कल्याणपुर शाखा, कानपुर

जिन्होंने देखा है अपनी मांओं को
पिताओं की पुरानी कमीजों से
अपने कपड़े सिल कर पहनते,
वे जानती हैं तनख्वाह की
एक एक पाई जोड़कर रखना,
क्या अहमियत रखता है !
जिन्होंने देखा है अपनी मांओं को
सब्जी-भाजी का मोल भाव करते,
मुट्ठी में बंधे पैसों को मन ही मन गिनते,
वे जानती हैं,
डायरी में हिसाब जोड़ते वक्त आए
दस रुपये का फर्क ढूंढ पाना
क्या अहमियत रखता है!
जिन्होंने देखा है अपनी मांओं को ,
सबसे आखिर में थाली लगाते,
बच्चों की छोड़ी तरकारी चाव से खाते,
वे जानती हैं, चादर के आकार
और पैरों को पसारने के बीच
सामंजस्य बैठाना
क्या अहमियत रखता है !

एक कहानी मेरी भी...

सुनीता मिंज
प्रबंधक
देवघर अंचल

"एजी! सुनती हो, चाय दो न!"
"दे रही हूं बाबा..लो चाय बन गई"

दोनों बैठ कर चाय पीने लगते हैं। तनुजा कुछ रोमांटिक होती है।

"वे दिन कितने अच्छे थे जब हम दोनों खूब घूमा करते थे। तुम भी ऑफिस से जल्दी आ जाते थे, कितना ख्याल रखते थे मेरा तुम राहुल!"

"खयाल अब भी मुझसे ज्यादा कोई नहीं रखता है तुम्हारा।" राहुल बोलता है।

"ये तो मैं देख ही रही हूं", तनुजा बोलती है।

"आज रविवार है, कितना सुकून है। देखो शाम हो गई, अभी भी तुम छुट्टी के मूड में ही हो। क्या तुम्हें कल स्कूल नहीं जाना है?" तनुजा लाडली से कहती है। "चलो सानू तुम भी अपना होमवर्क कर लो, कल स्कूल जाना है।"

राहुल डाइनिंग में बैठकर टी.वी. देखने लगता है। सानू भी टी.वी. पर कार्टून देखने की जिद्द करने लगता है। राहुल छुट्टी की शाम को इतमीनान से टी.वी. एन्जॉय करना चाहता है, उसमें वह कोई दखल अंदाजी बर्दाश्त नहीं करना चाहता है। वह गुस्से में सानू को एक थप्पड़ जड़ देता है।

वह चिल्लाता है- "तुम्हारा सानू रात को टी.वी. तक सुकून से देखने नहीं देता है। आज तो छुट्टी के दिन भी बाहर का सारा काम किया और ये है तो"...

मैं भी कहां चुपचाप बैठती.. "मैं भी तो किचन में ही हूँ। तुम हो कि बच्चे को तुरंत थप्पड़ मार देते हो।"

"देखो, तुम बहुत चिल्लाती हो, बच्चे को यहां से ले जाओ। मैं कुछ नहीं जानता।" राहुल कहने लगता है।

"रुको, मैं खाना बना लूं। चलो सब खाना खा लो..।"

तनुजा सबको खाना परोसती हैं। सभी डायनिंग हॉल में बैठकर खाना खाने लगते है। तनुजा भी भोजन करने लगती है।

दोनों बच्चे लाडली और सानू सोने चले जाते हैं। तनुजा दोनों बच्चों को सुलाने लगती है। फिर उसे याद आता है.. राहुल सोने चले गए हैं।

"आपने प्रेशर वाली दवा नहीं ली है।" वह राहुल को आवाज लगाती है.. "सुनते हो दवा ले लो"।

वह नहीं सुनता है। हां! उसके खर्राटों की जोर-जोर से आवाज जरूर तनुजा के कानों में जाने लगती है। वह झट से प्रेशर की गोली और एक ग्लास पानी लेकर राहुल को नींद से जगाने लगती है।

वह जोर से चिल्लाता है- "तुम मुझे सोने नहीं देती हो।" तनुजा बोलती है - "अच्छा दवा ले लो।" वह दवा लेकर फिर सो जाता है और खर्राटे की आवाज फिर आने लगती है।

लाडली सो गई है...सानू भी सोने की कोशिश कर रहा है.. तनुजा उसे सुलाने की कोशिश कर रही है। वह भी जम्हाई ले रही है, नींद जोरों से आ रही है।

सानू को सांस लेने में दिक्कत की बीमारी है। उसे खांसी शुरू हो गई है। वह सो नहीं पा रहा है। उसे वह इनहेलर कराती है, फिर वह किसी तरह सो जाता है। तनुजा फिर अपने मोबाइल में अलार्म लगाकर सोने चली जाती है।

सुबह तड़के मोबाइल का अलार्म सुनकर वह उठ जाती है। फिर वह अपना सारा काम करके लाडली को उठाने लग जाती है। लाडली उठती है फिर तनुजा लाडली को स्कूल के लिए तैयार करती है। तनुजा किचन में जाती है, उसका टिफिन बनाती है.. लाडली मम्मी को बाय करके स्कूल चली जाती है। तनुजा किचन में दुबारा जाती है सबके लिए नाश्ता बनाने में लग जाती है। राहुल मोर्निंग वॉक करके आता है। ऑफिस की तैयारी करता है।

कुछ देर के बाद राहुल कहता है- "लाओ, जल्दी नाश्ता लाओ, तुम्हारा रोज यूं ही लेट होता है। ऑफिस जाने में देर हो जाएगी।"

तनुजा बोली "मैं भी तो ऑफिस जाऊंगी। आज तो थोड़ा जल्दी ही जाना है। ऑफिस में बॉस आने वाले हैं।"

राहुल बोला - "मैं कुछ नहीं जानता, तुम जल्दी नाश्ता लाओ, तुम्हारा ऑफिस तो नजदीक है।"

तनुजा नाश्ता लाती है। राहुल नाश्ता करता है। अरे.. सानू को भी स्कूल भेजना है.. वह अभी तक उठा नहीं.. तनुजा उसे उठाती है.. उसे तैयार करवाती है। राहुल सानू को स्कूल छोड़ते हुए अपने ऑफिस की ओर निकल जाता है।

तनुजा को देर होने लगती है..वह नाश्ता न करके ऑफिस टिफिन लेकर चली जाती है।

तनुजा ऑफिस पहुँच कर मौसमी से कहती है- "देखो न,

बॉस के आने का समय हो गया है। मैं आज नाश्ता भी नहीं कर पाई हूं.."

मौसमी कहती है– "ये तो तुम्हारी रोज की आदत है!"

तनुजा बोलती है.. "कार्यक्रम का संचालन मुझे ही करना है, उसकी भी तैयारी करनी है। थोड़ी देर में ही बॉस आ जाएंगे।"

ऑफिस के सारे स्टाफ बॉस के स्वागत में लग जाते हैं। तनुजा कार्यक्रम का इंतजाम बहुत अच्छे तरीके से करती है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन बहुत ही धूमधाम से होता है। सभी लोग इकट्ठा हो जाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का बड़ा-सा बैनर भी लग गया। मंच पर मुख्य अतिथि के रूप में बॉस के अलावा स्थानीय विधायक जी भी पधारे हैं। सबने अपने-अपने भाषण में महिलाओं के योगदान, उनकी कार्यक्षमता को लेकर बड़ी-बड़ी बातें की और महिला कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। अंत में केक काटकर और उपस्थित सभी महिला कर्मचारियों को गिफ्ट देकर तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कार्यक्रम का समापन हुआ।

अगले दिन तनुजा ऑफिस पहुंचती है। वह अपने काम में जुट जाती है। तभी उसके बॉस का कॉल आता है..." तनुजा.. मुझे एक कार्यक्रम में जाना है..सारा डाटा पीपीटी में बनाकर तुरंत दो..आज शाम को ही अटेंड करना है।"

वह चुप रहती है। जी सर, जी सर, बस कहती है।

एक घंटे बाद ही तनुजा के पास बॉस के असिस्टेंट का फोन आता है– "साहब जो बोले हैं, हो गया क्या?"

"कर रही हूं, थोड़ा समय दीजिए..' वह बोली।

"नहीं साहब बोले हैं जल्दी करने के लिए, अभी चाहिए।"

"ठीक है.." तनुजा कहती है।

थोड़ी देर में घर से दाई का कॉल आता है– "सानू, बाबू! स्कूल से बहुत पहले ही आ गया है मैडम..उसकी तबीयत ठीक नहीं है, खूब तेजी से खांस रहा है। खांसी का कफ सिरप भी दिया है, ठीक नहीं हो रहा है।"

"अच्छा! ऐसा करो कि उसे इनहेलर दे दो। उसे सुलाने की कोशिश करो।" तनुजा कहती है।

"आप ऑफिस से आ जाती तो अच्छा होता", दाई कहती है।

"नहीं, मैं नहीं आ सकती, अर्जेंट काम आ गया है।" तनुजा बोलती हुई चुप-सी हो जाती है।

तनुजा पीपीटी बनाने में लग जाती है। बार-बार बॉस के यहां से फोन आने के बाद वह पीपीटी बनाकर ई-मेल कर देती है।

बॉस का असिस्टेंट फोन पर कहता है, "धन्यवाद मैडम, आपने दे दिया। साहब बहुत बैचेन हो रहे थे, उन्होंने कहा कि – बहुत देर कर दी।"

उस शाम तनुजा को ऑफिस से घर जाने में थोड़ी देर हो जाती है। वह घर आने पर देखती है कि राहुल घर आ चुका होता है। वह बच्चे के पास बैठा है। सानू बहुत तेजी से खांस रहा है।

तनुजा तेल गर्म करके उसके पूरे बदन पर लगाती है, फिर दवा खिलाती है।

राहुल तनुजा से बोलता है "चाय जल्दी बनाओ, कुछ नाश्ता लाओ, बहुत देर हो गई"

तनुजा किचन में जाती है सबके लिए नाश्ता बनाकर लाती है। सब चाय पीते हैं।

राहुल तनुजा से कहता है, "अरे बताओ, आज बजट में क्या-क्या हुआ.."

मैं कुछ नहीं जानती, तनुजा की आवाज किचन से आती है।

"मैं तो न्यूज चैनल देख रहा हूं, थोड़ा विस्तार से जान लूं।" राहुल कहता है।

तनुजा लाडली से कहती है, "कल से तुम्हारी परीक्षा शुरू हो रही है। क्या तैयारी की है, थोड़ा देखूँ?"

"मां! मैं तब से पढ़ाई तो कर रही हूँ, कल इंग्लिश का इग्जाम है। मैंने अभी कार्टून भी नहीं देखा है। तुम भी तो.. रोज पीछे पड़ जाती हो! मैं अब जा रही हूं कार्टून देखने।"

राहुल लाडली से बोला – "तुम मम्मी के मोबाइल पर कार्टून देखो, मैं अभी न्यूज देख रहा हूं।"

लाडली मम्मी से उसका मोबाइल छीन लेती है। तनुजा रात का डिनर बनाने किचन में जाती है।

राहुल चिल्लाता है, "जल्दी खाना लाओ, नींद आ रही है। सुबह जल्दी उठना है, कल मुझे ऑफिस जल्दी जाना है। तुम समझती नहीं हो।"

'लाई बाबा, थोड़ा इंतजार करो!'

तनुजा भोजन लाकर सबको परोसती है...राहुल खा रहा है, तनुजा भी अपना खाना ले रही है।

तनुजा के मोबाइल पर तभी कॉल आता है। लाडली अपनी मम्मी को मोबाइल देकर कहती है, "लो तुम्हारे बॉस का फोन आया।"

"सर बोलिये, सर।"

"आज का प्रोग्राम तो बहुत बढ़िया रहा। तुम्हारी पीपीटी भी अच्छी रही, बस एक दो स्लाइड में डाटा कुछ मिस्टेक था", बॉस ने कहा।

तनुजा बोलती है, "सर, समय बहुत कम था!"

यह सुनते ही बॉस थोड़ा गुस्से में आ जाते हैं, "तो क्या एक पीपीटी बनाने में दस दिन का समय लगता है! तुम्हारा तो बस यूं ही।"

बॉस फोन काट देते हैं। तनुजा थोड़ा तनाव में आ जाती है।

वह मोबाइल रखकर खाने जाती है। राहुल खाते हुए बोलता है, "आज-कल क्या हो गया है तुमको! सब्जी ठीक बन नहीं रही है तुम्हारी! आज फिर सब्जी में नमक कम डाला है।"

तनुजा सुनकर चुपचाप खाने लगती है...!

गीतांजलि श्री - हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर

अर्चना पुरोहित
प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, जयपुर

दो 'गीतांजलि' ये साबित कर चुकी हैं की अब ये नाम साहित्य के लिए बहुत शुभ है।

एक में गीत है, और दूसरी स्वयं में गीत है.....

हिन्दी की मशहूर उपन्यासकार और कवयित्री 'गीतांजलि श्री' के उपन्यास 'रेत समाधि' के अंग्रेजी अनुवाद को इस साल के बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। अमेरिका में पढाने वाली और प्रसिद्ध अनुवादक डेजी रॉकवेल ने इस उपन्यास का 'टूम्ब ऑफ सैंड' के नाम से अंग्रेजी में अनुवाद किया।

गीतांजलि श्री का जन्म 12 जून 1957 को उत्तर-प्रदेश के मैनपुरी जनपद में हुआ। गीतांजलि की प्रारंभिक शिक्षा उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों में हुई उन्होंने दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज से स्नातक और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से इतिहास में एम.ए. किया। उनकी पहली कहानी 'बेलपत्र' 1987 में हंस में प्रकाशित हुई थी। अब तक उनके पाँच उपन्यास 'माई', 'हमारा शहर उस बरस', 'तिरोहित', 'खाली जगह', 'रेत-समाधि' प्रकाशित हो चुके हैं और पाँच कहानी संग्रह - 'अनुगूंज', 'वैराग्य', 'मार्च, 'माँ और साकूरा', 'यहाँ हाथी रहते थे' और 'प्रतिनिधि कहानियां' प्रकाशित हो चुकी हैं। 'माई' उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद 'क्रॉसवर्ड अवार्ड' के लिए नामित अंतिम चार किताबों में शामिल था। 'खाली जगह' का अनुवाद अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन भाषा में हो चुका है। गीतांजलि श्री ने अपने लेखन में वैचारिक रूप से स्पष्ट और प्रौढ़ अभिव्यक्ति के जरिए एक विशिष्ट स्थान बनाया है।

दिल्ली की हिंदी अकादमी ने उन्हें 2000-2001 के साहित्यकार सम्मान से अलंकृत किया है। 1994 में उन्हें अपने कहानी संग्रह अनुगूँज के लिए यू.के. कथा सम्मान से सम्मानित किया गया। इनको 'इंदु शर्मा कथा सम्मान', 'द्विजदेव सम्मान' के अलावा जापान फाउंडेशन, चार्ल्स वॉलेस ट्रस्ट, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की फेलोशिप भी मिली है। ये स्कॉटलैंड, स्विट्जरलैंड और फ्रांस में 'राईटर इन रेजडिंसी' भी रही हैं। रेत समाधि द्वारा लेखिका गीतांजलि श्री अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार जीतने वाली पहली हिंदी लेखिका बन गई हैं।

'रेत समाधि' उपन्यास कथा शिल्प की बंधी बंधाई परिपाटी को तोड़कर एक सरल प्रवाह में बहता है। सभी पात्र घटनाओं और संवादों से परे हैं। इस किताब में पारंपरिक तत्व नहीं हैं, वो सारे बंधन को तोड़ने के बाद ऐसे लिखा गया है जैसे कि मन सोचता है, यहां से उड़कर वहां, फिर जाने कहाँ कहाँ.....। रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाओं को अनूठे बिंब के माध्यम से कथा की अनंत गहराइयों तक प्रस्तुत करना, पात्रों की सांकेतिक उपस्थिति, घटनाओं का संदर्भ संवादों के माध्यम से प्रस्तुत कर लेखिका ने लेखन के कैनवास पर रचना का अद्भुत संसार रचा है।

रेत समाधि अमूर्तन मन और दुनिया का विशाल ताना बाना है। मानव मन ईश्वर की सबसे जटिल रचना है और कहते हैं कि मन की थाह सबसे कठिन है, उसका कोई पारावार नहीं है। मन के अधूरेपन के मायने बहुत अजीब होते हैं वो जितना खाली होना चाहिए उतना ही भरा होना चाहिए। लेखिका ने इस उपन्यास में मानव मन के सभी आयामों को दर्शाया है। साधारण रोजमर्रा की घटनाओं में असाधारण तत्वों से एक ऐसी बुनावट की है जिसे अद्भुत कारीगरी से बनाया गया है।

'रेत समाधि' की मुख्य नायिका 80 वर्ष की एक वृद्ध महिला "चंद्रप्रभा" है जिसके पति की मृत्यु हो चुकी है। इस मौत के बाद वृद्धा नायिका डिप्रेशन का शिकार हो जाती है। उसकी झुंझुलाहट इतनी ज्यादा है कि वो अपने कमरे से बाहर भी नहीं निकलना चाहती है। परिवार के सदस्य उसको डिप्रेशन से बाहर निकालना चाहते हैं पर वो समझ ही नही पाते कि वो उसकी मदद कैसे करें? डिप्रेशन से जूझती अम्मा के भीतर एक गहरा अतीत है जो वो अपने पीछे पाकिस्तान छोड़ आई थी और जीवन के अंतिम पड़ाव में वो फिर से उस अतीत से मिलना चाहती है।

बंटवारे से पहले पाकिस्तान में अम्मा की शादी अनवर से होती है, दोनों एक खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे होते हैं। विभाजन की त्रासदी में वो बिछड़कर भारत आ जाती हैं, जहां उसकी शादी एक नए परिवार में हो जाती है। जहाँ वो बेटे, बहूएं, नाती, पोतों से भरा पूरा संसार बसाती हैं। फिर अचानक उसके पति की मृत्यु के बाद उसे अपना अतीत याद आता है। मुख्य कथा की अनुषंगी कई कथाएं चलती हैं और अम्मा की

कहानी से अनेक किरदार जुड़ते जाते हैं। उपन्यास में बताया गया है कि शादी, बच्चे और परिवार होते हुए भी एक स्त्री अपने भीतर एक खालीपन महसूस करती है और उसमें कुछ अतिरिक्त होने का भाव बना रहता है।

जीवन क्या है, कहाँ है, ये तो सबको पता है लेकिन इसका अंत किन दशाओं में होगा ये कोई नहीं जानता, ये जिज्ञासा उन सभी स्त्रियों के अंदर है जिनका मन ऐसे ही भटकता है, किसी बेचैन बंधन में, किसी चारदीवारी के भीतर। इन सबके भीतर एक चंचल लड़की रहती है जो आसमान, बादल, चांद और हवा से दोस्ती करना चाहती है इसलिए कि वो मन के सहारे निस्सीम तक उड़ना चाहती है। इस कहानी में एक किस्म का हास्य है, साथ ही एक जादुई रहस्यवाद है, एक अजीब सी खुशी भी है। ये सब मन को दो हिस्सों में बांटने के लिए पर्याप्त है। उपन्यास में त्रासदी भी बहुत साफ नजर आती है कि ऐसी स्त्रियाँ जो उन नियमों के भीतर कैद है और उसकी सारी कामनाओं की सीमाएं पहले से तय हैं जिसे पूरी उम्र निकालनी है इस जंजाल से निकलने के लिए ताकि वो एक निर्विघ्न उड़ान पर जा सके।

गीतांजलि का यह उपन्यास साहित्य विधा में अ-कहानी के आस-पास ठहरता है। जैसे लेखिका ने तय किया हो कि जो वो नहीं कहती और नहीं सोचती या जिसे उन्होंने नहीं लिखा या कहा, यह उस सब अनकहे की भी एक कहानी है जो बेहद महत्वपूर्ण है। तस्वीर का जो पहलू नहीं दिखाई देता वो भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना उसका दृश्य भाग है। बहरहाल, मैंने इस उपन्यास को अभी पढ़ा है और पाया कि इसमें लेखन की नई छटा है, इसकी कहानी, घटनाक्रम, इसकी संवेदना सभी को निराले अंदाज में प्रस्तुत किया गया है। ये संसार कभी बहुत चिर-परिचित लगा है कभी बिल्कुल अनजान। मैं यह पूरे गर्व से कह सकती हूँ कि यह एक बेहतरीन लेखिका द्वारा लिखी गई बेहतरीन किताब है।

नई पी.ओ.

मनीषा घोष
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, चण्डीगढ

सारा स्टाफ आज प्रसन्न था
शाखा में नई पी.ओ. को ज्वाइन करना था।
डबल एम.ए.व संगीत विशारद की डिग्री लिए
आंखों में नए सपने संजोए नई पी.ओ.
समस्त स्टाफ उसका स्वागत करता
हैवी पोस्टिंग सीट पर उसे बैठाता
उसके मृदुल व्यवहार और विशेष तत्परता ने
सबका दिल जीता
कस्टमर की जुबान पर शिवानी ही रहता
कहती, रूरल पोस्टिंग पूरी करूंगी
तभी तो आगे बढूंगी।
शाखा में रहकर उसने
एम.बी.ए. व सी.ए.आई.आई.बी. पूरा किया
कहती, पढना मेरी हॉबी है
व ओवरसीज पोस्टिंग मेरा सपना है।
स्थानांतरण पर मैं अन्यत्र आ गई
बैंकिंग कार्यों में उसे भूल गई
शिवानी का कभी-कभी मैसेज आता
मैं उसे आगे बढ़ने के लिए मोटिवेट करती।
एक दिन रूपाली ने खुश हो बताया
व अपनी दीदी की शादी तय हुई
कह मुझे बुलाया।
मैने खुश हो सबको बताया।
दीपाली भी उसकी जैसी बडी गुणी है
छोटी बहन की तरह बैंकर है
दोनों बहनों ने अपने माता-पिता को
एक होण्डा सिटी दी है।
पूरे मुहल्ले मे बेटियों का गुणगान है।
सब जगह उनका सम्मान है।
अचानक ही एक दिन फोन घनघनाया
दु:खी आंसुओं के सैलाब में उसने बताया
दीदी की शादी टूट गई
कह उसका गला भर्राया
दूल्हे के घर वालों को
दीपाली की नौकरी पर आपत्ति है
दीपाली ने निर्णय लिया और
ऐसे दूल्हे को छोड़ दिया।
ज्योतिष कहते हैं लड़की मांगलिक है
जल्दी विवाह संभव नहीं है
माता पिता बेबस व लाचार हैं
पर मैं जानती हूं वह दहेज की शिकार है
कोई पैसे का दानव सिर पर सवार है
अजगर की तरह निगल रहा परिवार है।
मेरा मन बुझ गया, एकांत में बैठ गया
बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ का नारा है
सड़कों पर मशाल जलाने वाले
नौजवान कहां हैं?

संस्मरण - अविस्मरणीय क्षण

रानी कुमारी
सहायक प्रबन्धक, सीएपीसी
दिल्ली शाखा

उस दिन सुबह से ही सब व्यस्त थे। जब मैं उठी तो मैंने देखा छोटे मामाजी कुछ सामान लेकर तेजी से बाहर जा रहे थे। मेरा छोटा भाई भी काफी व्यस्त था, किसी ने उसे आवाज लगाई थी। वह भागा-भागा जा रहा था। मैं आँखें मीचते हुए बाथरूम की तरफ फ्रेश होने जा रही थी कि रास्ते में पापा, मम्मी से कुछ बात कर रहे थे। पापा ने मुझे देखा और कुछ कहा नहीं बस हल्की सी मुस्कुराहट दी। मुझे समझ नहीं आया वो हंसी थी या रोना। क्योंकि पापा की आँखें नम सी थी। तभी मम्मी मेरे पास आई, दोनों हाथों से मेरे चेहरे को पकड़ा और अजीब से भाव के साथ मेरे माथे को चूमा और नजरें चुराते हुए बोली जा बेटा जल्दी से ब्रश करके नहा ले, फिर गौरी पूजन भी करना है। मैं बाथरूम गई, ब्रश किया और फ्रेश होकर बाहर निकली अब कपड़े लेकर नहाने जाऊँगी। इतने में नानी ने आवाज दी, अरे बेटा इधर आओ जरा। मैं कपड़े को बगल की कुर्सी पर रख नानी के पास गई, नानी ने मेरा हाथ पकड़ कर अपने पास बैठाया और बोली सुन बेटा ससुराल में सबका मान रखना, पल्लू सर पे हमेशा रखना, सबसे प्यार से बातें करना। धीरे बोलना, धीरे चलना और किसी को भी डांटकर नहीं बोलना, तभी मेरी छोटी बहन किचन से निकल कर आई और बोली हाँ दीदी किसी को डांटना नहीं सब मेरे लिए बचाकर रखना और कहकर उसने झूठी हंसी में अपने सारे दाँत दिखा दिये (लेकिन आँखों में आँसू साफ दिख रहे थे) और वापिस किचन में भाग गयी। इधर मेरा चचेरा भाई आया और मेरे बाल खींचकर बोला दीदी कौए ने आपके बाल खींच लिए, मैंने कहा - आह! उसने बोला रुको दीदी उसकी ये हिम्मत अभी कौए के बच्चे को बताता हूँ और वह दौड़ते हुए छत पर चढ़ गया। मैं और नानी दोनों हंसने लगे। फिर मैं नहाने चली गयी। नहाकर बाहर निकली तो मम्मी ने कहा, तू तैयार हो मैं चाची, मामी वगैरह को बुलाती हूँ गौरी पूजन कर लेना। विदाई का मुहूर्त 1:15 का है, सब जल्दी-जल्दी करना है, 8:30 अभी ही बज गए हैं। मैं भी अपने कमरे में गई, साड़ी पहनी, आज ससुराल से आई दूसरी साड़ी पहननी थी। वह काफी भारी साड़ी थी, मैंने आधी साड़ी लपेट कर मम्मी को आवाज लगाई, मम्मी जल्दी आओ, मम्मी दौड़ी आयीं। मैंने कहा - "मम्मी ये साड़ी तो बला है, बंध ही नहीं रही है, मुझसे नहीं होता तुम पहना दो।" मम्मी मुस्कुराने लगी। मम्मी ने कहा - "छोड़ मैं पहनाती हूँ" और मैंने छोड़ दिया। फिर मम्मी ने तुरंत ही अच्छे से बांध दिया। तभी मामी और चाची भी आ गई, कहने लगी माँ-बेटी का मिलन हो रहा है क्या? मैंने कहा मिलन क्या होगा, मामी ये साड़ी तो मुसीबत है। चाची ने चुटकी लेते हुए कहा - बाबू अब तो ससुराल में साड़ी ही पहनना होगा। मैंने कहा - हाँ, लेकिन मैं वहाँ रहूँगी तभी तो। थोड़े दिनों में ही वापिस आ जाऊँगी, ऑफिस से ज्यादा छुट्टी नहीं मिली है। मैं तो बस ऐसे ही ससुराल जा रही हूँ, रहूँगी तो यहीं। वास्तव में मेरी पोस्टिंग मेरे घर के पास ही थी, इसलिए मैंने सोचा हुआ था कि रोना-धोना कुछ नहीं करूंगी। ऐसा सोचा था कि थोड़े दिन की आउटिंग है बस।

फिर चाची से कहा चलो-चलो पूजा शुरू करो। फिर बाकी तैयार हो लेना। फिर सबने भगवती गीत शुरू किया और मौसी मुझे गौरी पुजाने लगीं। सारी पूजा होते हुए 10:15 हो ही गया। फिर मौसी ने कहा अब एक काम कर मैं कुछ फल और काजू देती हूँ, पहले खा ले वरना खा नहीं पाएगी, लेट पहले ही हो रखा है और मेरे माथे को चूम कर चली गईं। तभी मेरी छोटी बहन की कुछ दोस्त जो पड़ोस में रहती हैं वे आईं - दीदी आप तैयार हो गईं, मैंने कहा - कहाँ यार अभी तो मम्मी साड़ी पहना के गईं हैं फिर गौरी-पूजन अभी ही खत्म हुआ है। तभी कुछ याद करते हुए मैंने कहा - अभी तक रेखा की बच्ची भी नहीं आई है उसको फोन करती हूँ, इतने में उसकी

आवाज सुनाई दी – नमस्ते अंकल, रानी कहाँ है? पापा ने कहा – वहाँ घर में है बेटा। वो अंदर आईं मैंने कहा – आ गयी मैडम, बड़ी जल्दी आई। उसने कहा – अरे लेट हो गयी यार सॉरी। तभी मौसी कुछ खाने के लिए लेकर आयीं और रेखा से बोली अच्छा हुआ बेटा तुम आ गई अब अच्छे से तैयार कर दे मेरी सोना को और फिर से मम्मी की तरह मेरा मुंह पकड़कर चूमा और चली गई। रेखा ने कहा – चलो मैडम अब तुम खाओ और मैं तुम्हारा हेयर स्टाइल करती हूँ उसने अच्छे से सुंदर सा स्टायलिश जूड़ा बनाया और गजरा लगाने वाली थी कि मामी आई, उन्होंने कहा – रुको–रुको इसमें कुछ देना है। फिर 500 रुपए के नोट दिये और कहा जूड़े के अंदर अच्छे से क्लिप लगा दो। हम दोनों एक दूसरे को देखने लगे। रेखा ने कहा – ऐसा है क्या? चलो ठीक है। रानी तेरे जूड़े की कीमत 500 रुपए है, जो खोलेगा उसे मिलेगा मतलब तेरी ननद को। फिर हम दोनों हंसने लगे। बाहर पापा छोटू पर गुस्सा हो रहे थे, जल्दी से काम नहीं किया जाता, 12:00 बज गए हैं। छोटू बेचारा, हाँ पापा जी कहता हुआ दौड़ रहा था। आँगन में और भी औरतें आ गई थी। नानी सबको सामान दिखा रही थी जो विदाई में दिया जा रहा था। मामी साड़ी गिन कर किसी को बता रही थी। 50 साड़ियाँ हैं, ये तो मेरी बेटी पता नहीं कब पहनेगी सूट भी दिये हैं वह दूसरी ट्रॉली में है। मैं लगभग तैयार हो चुकी थी। सब मुझे देखने आ रहे थे । बस कोई कुछ कह नहीं रहा था। तब हमारे पड़ोस में रहने वाले मनीष के दो दोस्त (मनीष मेरा बड़ा भाई – परीक्षा की वजह से विदाई में नहीं था) भी आ गए। दीदी आप तो मस्त लग रही हैं। मानस ने कहा, बंटी ने बस ब्युटीफूल का सिंबल उँगलियों से दिखाया और रोने लगा। मैं उन्हें देखकर हंसी – क्यों रो रहा है पागल, मैं कहीं नहीं जा रही हूँ और मैं भी रोने लगी फिर और मानस मुझे पकड़ कर रोने लगा। बिना कुछ बोले, तभी रेखा भी पीछे से सुबक पड़ी और मुझे पकड़ लिया। छोटू मानस को बुलाने आया तो वो भी रोने लगा और रोते रोते मानस को बोला भैया चलिये सामान चढ़ाना है। तभी चाचा ने आवाज लगाई छोटू, मानस कहाँ हो जल्दी आओ। दोनों आँसू पोछते हुए निकले। सभी रोने लगे। नानी मेरे पास आई और मुझे पकड़ कर कहने लगी बेटा ठीक से रहना बस और जोर–जोर से रोने लगी। एक बज गया था, सारा सामान जा चुका था, पापा ने कहा रानी बाहर आओ। चलो बेटा, मुहूर्त निकल रहा है। तभी मम्मी, मौसी कमरे में आयीं और मम्मी ने कहा रोना नहीं बेटा तू तो यहीं रहेगी और कहते कहते रोने लगी। फिर मौसी मुझे और मम्मी दोनों को बाहर ले गईं। मेरे मुंह से कुछ नहीं निकल रहा था। पापा ने कहा गाड़ी में बैठना है कोई पानी लेकर आओ। मेरी छोटी बहन पानी लेकर आई मैं मम्मी से कह रही थी, मम्मी मैं न जाऊँ तो नहीं चलेगा क्या? मैं यहीं रह जाऊँ ऐसा नहीं हो सकता, पता नहीं मैं ऐसा क्यूँ कह रही थी जबकि मुझे मालूम था कि ऐसा नहीं हो सकता। उसने (छोटी बहन) मुझे पानी दिया और खुद फूट–फूट कर रोने लगी, दीदी मत जाओ। मैंने मुश्किल से एक घूंट पीया। कार के गेट के पास नानाजी खड़े थे मैंने उन्हें प्रणाम किया और फिर छोटे और बड़े मामा को प्रणाम किया। सबने कहा बैठो–बैठो देर हो गई है, मैंने कहा पापा कहाँ है। पापा कार की दूसरी तरफ मेरे पति से कुछ बातें कर रहे थे। पापा आए, मैंने पापा को प्रणाम किया और उनके सीने से लगकर रोने लगी। पापा मैं नहीं जाऊँगी, मैं नहीं जाऊँगी, पापा रोकते रोकते खुद भी रो पड़े। पहली बार पापा को रोते देखा था। नहीं बेटा तू कहीं नहीं जा रही है, तू यहीं रहेगी। बस कुछ दिन की बात है और ये कहते हुए रोते जा रहे थे। किसी ने मुझे अलग करके गाड़ी में बिठाया और गेट बंद किया। मैं बहुत रोई, पहली बार लगा अब घर छूट गया अब बचपन छूट गया। वो दिन है और आज का दिन है जब भी जाती हूँ माँ तो देखते ही रो देती हैं लेकिन पापा नजरें चुराते हैं और हर बार लौटते समय पापा किसी न किसी काम में व्यस्त हो जाते हैं। 8 वर्षों में उनकी आँखों की नमी मैंने हर बार मिलते समय और वापिस आते समय देखी है। ऐसे ही होते हैं पापा, रोते हैं पर किसी को आँसू दिखा भी नहीं सकते। ये मेरे जीवन के वे लम्हें हैं जिन्हें मैं कभी न भूल पाऊँगी।

महिला सशक्तिकरण - अवधारणा एवं आवश्यकता

प्रियंका
अधिकारी
सिविल लाईन्स शाखा, सीतापुर

पुरुष और नारी के बिना सृष्टि की कल्पना भी कर पाना संभव नहीं है। सृष्टि की मूल प्रकृति और प्रवृत्ति परिवर्तनशीलता है, जिसमें नित्य नवीनता का संचार बिना इन दोनों के सहयोग के संभव नहीं है। अत: दोनों में से किसी एक का भी अशक्त होना एक स्वस्थ एवं सामर्थ्यवान सृष्टि और समाज के निर्माण के लिए घातक हो सकता है।

"या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता।।"

देवी अर्थात नारी, शक्ति स्वरूप में ही सृष्टि में विद्यमान है। जो तत्व सृष्टि में पूर्ण ऊर्जा एवं शक्ति के रूप में विद्यमान हो, फिर उसे सशक्त करने की आवश्यकता क्यों पड़ी? यह अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विचारणीय प्रश्न है। जब हम इस तथ्य पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि हमारी सनातन संस्कृति में स्त्रियां पूर्ण सशक्त थी एवं उन्हें अपने जीवन से सम्बंधित निर्णय लेने का अधिकार भी प्राप्त था। उनके बच्चों को उनके नाम से ही जाना जाता था जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को कौशल्या नंदन, लीला धाम श्री कृष्ण को देवकीनंदन और यशोदा नंदन एवं भीष्म पितामाह को गंगा पुत्र आदि। शिक्षा पर भी उनका पूर्ण अधिकार था गार्गी, अपाला, घोषा तथा मैत्रेयी आदि कुछ प्रमुख नाम है। आदि शंकराचार्य और मंडन मिश्र के शास्त्रार्थ में उनकी पत्नी के शास्त्रार्थ का भी उल्लेख मिलता है अर्थात हम यह कह सकते हैं कि हमारी नारी शक्ति किसी भी प्रकार किसी भी क्षेत्र में कहीं भी कमजोर नहीं थीं।

विदेशी आक्रांताओं के आगमन के पश्चात धीरे-धीरे हमारी महिलाओं को सुरक्षित और संरक्षित रखने के उद्देश्य से उन्हें घर की दहलीज़ में ही रखा जाने लगा। घर में भी एक नारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। "बिनु घरनी, घर भूत का डेरा" यह उक्ति नारी की उपयोगिता को प्रतिष्ठित करती है। हमारी संस्कृति में नारियों को अपना वर स्वयं चुनने का अधिकार था वह अपनी इच्छा अनुरूप अपने वर का चयन कर सकती थी। धीरे-धीरे यह दायित्व कन्या के अभिभावक निभाने लगे और उन्हें इस मामले में बोलने का कोई अधिकार भी नहीं दिया गया था।

युग परिवर्तन के साथ ही स्त्रियों को उपभोग की वस्तु समझा जाने लगा। पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों को दोयम दर्जे का नागरिक माना जाने लगा जिसका परिणाम यह हुआ कि एक स्वस्थ समाज के निर्माण के बजाए पुरुष मानसिकता को प्रबलता प्रदान करने वाले समाज का निर्माण होने लगा स्त्रियों पर अत्याचार एवं उत्पीडन की घटनाएं भी होने लगी। इस प्रकार के वातावरण में जहां जीवन जीना एक अभिशाप बनता जा रहा था एवं स्त्रियों को उपभोग की वस्तु व जनसंख्या वृद्धि में सहायक एक उपकरण समझा जाने लगा, तब आवश्यकता पड़ी महिलाओं को पुन: सशक्त बनाने एवं उन्हें उनका अधिकार दिलाने की। देश में महिलाओं को सशक्त बनाने की अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता थी। महिला सशक्तिकरण अर्थात महिलाओं की आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक या आर्थिक शक्ति में वृद्धि करना एवं उन्हें निर्णय लेने की स्वत्रंत्रता प्रदान करना। जिसका परिणाम यह है कि आज महिलाओं के कदम धरती से अंतरिक्ष तक अनेक गतिविधियों में अपनी सर्वश्रेष्ठ छाप छोड़ने में सफल हुए हैं। भारत में महिलाएं शिक्षा, राजनीति, मीडिया, कला व संस्कृति, सेवा क्षेत्रों, विज्ञान व प्रौद्योगिकी के सभी क्षेत्रों में भागीदारी करती हैं। कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स अंतरिक्ष के क्षेत्र में किसी से अछूता नाम नहीं है। खेलकूद के क्षेत्र में पीटी उषा से लेकर सानिया मिर्ज़ा एवं साक्षी मलिक तक इस क्षेत्र के अनेक महत्वपूर्ण नाम है। वर्तमान में हमारी महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण सहित ऐसे अनेक नाम हैं जो राजनीति के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाए हुए हैं। अब महिलाओं को अपने बारे में निर्णय लेने की पूर्ण आजादी है और वह अपने कर्तव्य एवं दायित्व का भली-भांति निर्वहन कर पाने में सक्षम भी हैं। हम यह कह सकते हैं कि नारी का तुम करो सम्मान, इसमें सारे देव विद्यमान। ऐसी उक्तियाँ यथार्थ में चरितार्थ होनी चाहिए जिससे कि समाज में महिलाओं को यथोचित सम्मान मिले जिसका प्रारम्भ हमारे घर के आंगन से ही हो सकता है और इसमें हमारी माताओं बहनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

स्वाधीन स्त्री की पराधीनता

कमलेश कँवर
प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, गुवाहटी

हमारा समाज हमेशा से ही पुरूष प्रधान समाज रहा है और इस सामाजिक व्यवस्था के कारण हमेशा से ही स्त्रियों को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ा, जो कि वर्तमान में भी जारी है। समकालीन परिस्थितियों के कारण स्त्रियों पर कई बन्दिशें लगाई गईं और उन्हें पराधीनता की जंजीरों में जकड़ा गया। भारत सोने की चिड़िया कहलाने वाला देश था जिसके कारण कई विदेशी आक्रान्ताओं ने यहाँ आकर हमारे देश को लूटा। विदेशी आक्रान्ता हमारे देश की सम्पत्ति के साथ-साथ हमारे देश की स्त्रियों पर भी कुदृष्टि डालते थे जिससे बचने के लिए नारी को परदे में रहना पड़ा और इसका असर उनकी शिक्षा, उनकी स्वतंत्रता पर पड़ा। पति की मृत्यु होने पर स्त्रियों को सती कर दिया जाता था अथवा उन्हें एक कमरे में रूखे-सूखे भोजन एवं पानी के साथ बंदी बना दिया जाता था। इन सब परिस्थितियों ने नारी की स्थिति को दयनीय बना दिया था। पूर्व सामाजिक पद्धति के अनुसार शादी-विवाह दूर-दूर प्रदेशों में हुआ करते थे और संसाधनों का भी अभाव होता था जिससे माता-पिता अपनी बेटी की विदाई के समय कुछ जरूरत का सामान, मुद्रा, कपड़े, खाने-पीने की वस्तुएं, उपहार इत्यादि अपनी खुशी से साथ दिया करते थे ताकि रास्ते में कोई परेशानी ना आए और जब वो अपनी गृहस्थी बसाए तो नई गृहस्थी के लिए जरूरत का सामान उनके पास हो लेकिन समय के साथ इस व्यवस्था को दहेज-प्रथा जैसी कुप्रथा में परिवर्तित कर दिया गया और कई स्त्रियां इस कुप्रथा के कारण बलि चढ़ गईं। धीरे-धीरे कई समाज-सुधारकों के प्रयासों से स्त्रियों का उत्थान हुआ और परिणामस्वरूप आज की नारी सामने आई है जो शिक्षित है आधुनिक विचारधारा से युक्त अपने अधिकारों के लिए लड़ने में सक्षम है। पूर्व में दूसरों पर निर्भर नारियों के साथ हुए अत्याचारों एवं दुर्गति से सबक लेते हुए, आज के माता-पिता ने अपनी लड़कियों को शिक्षित बनाते हुए अपने पैरों पर खड़ा करने की कोशिश की है ताकि वे आत्म-निर्भर बनें और आवश्यकता की स्थिति में उसे हाथ फैलाना ना पड़े एवं वह अपना भरण-पोषण खुद कर सके किन्तु इस तथ्य में कितनी वास्तविकता है, यह एक स्त्री से बेहतर कोई नहीं समझ सकता। आज की स्त्री शिक्षित है, अपने अधिकारों से भली-भांति परिचित है और अपना व अपने परिवार का पालन-पोषण करने में भी सक्षम है, यह सब आज की नारी को स्वाधीन तो बनाते हैं लेकिन स्वाधीन होते हुए भी आधुनिक नारी पराधीनता की जंजीरों में जकड़ी हुई है जिससे उसके लिए निकलना असंभव सा प्रतीत होता है। एक बेटी, बहु, पत्नी और विशेष रूप से माँ के रूप में स्त्री अपनी पराधीनता की जंजीरों को नहीं तोड़ सकती है। इन सभी भूमिकाओं को निभाने में एक स्त्री अपने अस्तित्व को तलाश करनें में मानसिक तनाव का भी सामना कर रही है। एक पुरूष की अपेक्षा में एक स्वाधीन नौकरीपेशा स्त्री अपने आपको साबित करने के लिए चार गुना मेहनत और काम करती है। वह अपनी नौकरी के साथ दूसरों की भावनाओं-जिम्मेदारियों और स्त्रियों के प्रति लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करते हुए सभी को संतुष्ट करने का प्रयास तो कर रही है लेकिन वह स्वयं कितनी संतुष्ट है, वह स्वयं भी नहीं जानती है। आज की आधुनिक स्त्री स्वाधीन होने के लिए और अपने पति का घर चलाने में सहायिका के रूप में नौकरी करती है। वह अपने पति के समान काम एवं वेतन होने के पश्चात भी घर के अन्य काम-जैसे खाना बनाना, कपड़े धोना, साफ-सफाई करना और बच्चे संभालने जैसे सभी कार्य करती है। जब स्त्री एक संयुक्त परिवार में रह रही होती है, तब चाहे परिवार में कितनी भी अन्य स्त्रियां घर में रहती हो लेकिन बाहर नौकरी करने वाली स्त्री को दूसरों को संतुष्ट करने के लिए घर पर रहने वाली अन्य स्त्रियों के समान अथवा उनसे अधिक काम करना पड़ता है। स्त्रियां कितनी भी स्वाधीन क्यों ना हो लेकिन दूसरों की खुशी के लिए उन्हें सुबह देर से उठने का अधिकार नहीं होता है। एक नौकरीपेशा स्वाधीन स्त्री अपने ऑफिस और घर-परिवार के बीच समय का तालमेल बनाने के लिए देर से सोती है और जल्दी उठती है जिससे उसकी नींद भी पूरी नहीं होती है और ना ही वह दिन में अपनी नींद पूरी कर पाती है जिसके कारण उसमें थकान और स्फूर्ति की कमी होती है। सुबह जल्दी उठकर साफ-सफाई करने के बाद सभी

के लिए भोजन बनाने के पश्चात ऑफिस के लिए विलम्ब होने के कारण उसके लिए स्वयं नाश्ता करने का भी समय नहीं होता है लेकिन कोई इस ओर ध्यान नहीं देता लेकिन किसी कारणवश घर के काम में कोई कमी रह जाती है तब उसे अप्रिय बातें सुनने को मिल ही जाती हैं। उसकी तुलना घर में रहने वाली गृहणियों से की जाती है जिसके कारण उन्हें हर एक काम करना पड़ता है जो हर स्त्री करती है। वह साप्ताहिक अवकाश के दिन आराम करेंगी इस प्रतीक्षा में अपने आपको समझाती है लेकिन यह साप्ताहिक अवकाश भी उसका अपना नहीं होता उस दिन उसे अपना 100 प्रतिशत देना होता है। उसे साबित करना होता है कि उसे तरह-तरह के पकवान बनाने आते हैं क्योंकि सभी के लिए पुरुष रोज ऑफिस जाते और थकते हैं लेकिन स्त्रियां अपना समय काटने के लिए अपने शौक पूरा करने के लिए ऑफिस जाती हैं। स्त्रियां नहीं थकती हैं क्योकि वो स्त्री होती हैं। इसलिए अवकाश का दिन उसे परिवार वालों को और घर के कामों को देना चाहिए। इस बात की किसी को परवाह नहीं होती है कि आज के समय में अपना परिवार चलाने एवं उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्त्री और पुरुष दोनों का नौकरी करना आवश्यक है और स्त्रियां पुरुषों के समान थकती हैं। स्त्रियों के भी खाने पीने और आराम करने का ध्यान रखा जाना चाहिए।

वर्तमान में अधिकांशतः घरों में जहां स्त्रियाँ नौकरी कर रही हैं, वहां साफ-सफाई जैसे कामों के लिए सहायिका रखी जाती है लेकिन आज भी कई घर ऐसे हैं जहां रसोई-घरों में इनका प्रवेश वर्जित होता है। लोगों की धारणा होती है कि घर में स्त्रियों के होते हुए भी कामवाली के हाथ का खाना खाएंगे तथा पुराने जमाने की परम्परा एवं रुढ़िवादिता को आधुनिक युग में थोपा जाता है। लेकिन एक तरह से नौकरी करने वाली स्त्रियां इन सहायिकाओं पर भी पराधीन हो जाती हैं ताकि उन्हें कहीं तो थोड़ा आराम मिले। लेकिन ये सहायिका का काम करने वाली भी तो स्त्री होती है और वो भी अपना घर-परिवार का भरण-पोषण करने के लिए दूसरों के घर काम करके पैसा अर्जित करती है। घर-घर में झाड़ू-पोछा करने के साथ-साथ वह अपने घर का भी सारा काम करती है। यही नहीं, ये स्त्रियां अपने घर में घरेलू हिंसा का शिकार भी होती हैं। कहने को ये सहायिकाएं भी स्वाधीन हैं परन्तु वे स्वयं के लिए नहीं जी सकतीं, उन्हें तो छुट्टियां भी बड़ी मुश्किल से मिलती हैं। इन सहायिकाओं पर अन्य स्वाधीन स्त्रियां जो पराधीन होती हैं।

स्वाधीन स्त्रियों की दशा और भी संघर्षमयी तब हो जाती है जब वे एक माँ के रूप में अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करती हैं। जब एक माँ अपने नवजात बच्चे को छोड़कर ऑफिस जाती है तो ये बच्चे और माँ दोनों के लिए कष्टदायी होता है। अपने पीछे से अपने बच्चे के लालन-पालन के लिए वो घर के दूसरे सदस्यों पर निर्भर हो जाती है। अधिकतर घरों में स्वाधीन स्त्रियों के सास-ससुर और माता-पिता द्वारा बच्चों का लालन-पालन किया जाता है। कई बार बच्चों के लालन-पालन के लिए आया भी रखी जाती है लेकिन अपने बच्चे को किसी आया के भरोसे छोडना आसान नहीं होता है, आया के साथ घर के अन्य सदस्यों का भी साथ होना आवश्यक होता है। इसके लिए भी एक स्त्री ही अपने माता-पिता अथवा सास-ससुर पर पराधीन होती ना कि एक पुरूष। अपने बच्चों का किसी संरक्षक की देखरेख में लालन-पालन हो, इसके लिए एक स्त्री कई तरह की वेदनाओं से गुजरती है। वो कोशिश करती है, कोई उससे नाराज ना हो, इस कोशिश में वह सभी की अपेक्षाओं के अनुसार स्वयं को ढालने का प्रयास करती है और सभी को संतुष्ट करना चाहती है। वह घर, ऑफिस और बच्चों को समय देते-देते अपने लिए समय नहीं निकाल पाती है, उसे पता ही नहीं चलता कि वह एक मशीन बन कर रह गई है। उसकी खुशी क्या है, वह क्या करना चाहती है। उसने अपने-आप पर कब ध्यान दिया शायद उसे याद ही नहीं रहता है। यहां तक बच्चों की देख-रेख, घर-परिवार, रिश्तेदारों की अपेक्षाओं हेतु उसे यदि ऑफिस से छुट्टी लेनी पडती है तो यह भी उसके लिए आसान नहीं होता है क्योंकि ऑफिस में वह कोई माँ, बहू या पत्नी नहीं होती है। वह सिर्फ एक कर्मचारी होती है जिसका काम केवल कम्पनी द्वारा निर्दिष्ट कार्यों को पूरा करना होता है। उसे अपनी छुट्टियां मांगने के लिए अपने बॉस के आगे गिड़गिड़ाना होता है क्योंकि बॉस तो बॉस होता है। उसे किसी स्त्री के घर-परिवार से कोई मतलब नहीं होता है। घर-परिवार और ऑफिस के बीच तालमेल बनाते हुए, एक स्त्री बीमार होना भी भूल जाती है क्योंकि बीमार होने पर भी वो छुट्टी नहीं ले सकती है वो अपनी छुट्टियां अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए बचाना चाहती है। इन सभी के बीच एक स्वाधीन स्त्री की यह मनोदशा हो जाती है कि आखिर उसका अस्तित्व क्या है, क्या वह वास्तव में स्वाधीन है, घर में वह परिवार-वालों के तरीके से ना चले तो अमर्यादित हो जाती है और मर्यादा का पालन करें तो पराधीनता की जंजीरों में जकड़ ली जाती है। कितना मुश्किल होता है, एक स्वाधीन स्त्री का सभी को संतुष्ट करना। क्या सच में यह स्त्रियों की स्वाधीनता है या एक तरह से पराधीनता।

नारी हूँ मैं ......

रंजना भदौरिया
प्रबंधक (राजभाषा)
हैदराबाद

नारी हूँ मैं ....
मृदुल हास सी।

अखिल ब्रह्माण्ड नियंता की
सृजन कल्पना हूँ मैं,
प्रारम्भ हूँ, अंत भी
निर्माण हूँ, विध्वंस भी
पूरक पुरुष की, स्वतंत्र भी हूँ मैं।।

नारी हूँ मैं..........
पाषाण हूँ, तरल भी
स्निग्ध हूँ, गरल भी
प्रकृति हूँ, झनकार भी
नियति हूँ, निर्विकार भी
जड़ और चेतन भी हूँ मैं।।

नारी हूँ मैं..........
अवयव सौन्दर्य से
परास्त हुई मैं बार-बार।
आस्था की सहज प्रकृति के कारण
छली गयी मैं कितनी बार।
जिसने कपट किया है मुझसे
उसका प्रत्युत्तर हूँ मैं।।

नारी हूँ मैं..........
अंतहीन अनुभव यात्रा के
बाधाएँ अनगिनत डगर की
धात्री हूँ, अबला नहीं
सशक्त हूँ, निर्बला नहीं।
अपरिमित स्रोत दया, करुणा का
प्रतिघाती का प्रचण्ड वेग हूँ मैं।।

नारी हूँ मैं...................

ऐ स्त्री

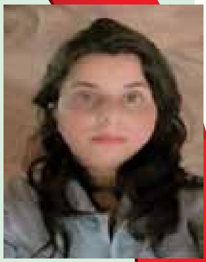

अश्विनी श्रीवास्तव
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, अमृतसर

वह तीर है, तलवार है,
वह जीने का आधार है।
अँधेरे के समय रौशनी बन
जीवन करती उद्धार है।
वह प्यार है, वह त्याग है,
वह संघर्ष है, बुलंद दीवार है।
वह करुणा है, वह ममता है,
वह वात्सल्य की अनुपम क्षमता है।
वह शून्य है, वह विशाल है,
वह भूत, वर्तमान, भविष्य तीनों काल है।
वही तीर है, वही भाल है,
वह शिव की शक्ति है,
वह हर आस्था की भक्ति है।
वह हर कदम अग्रणी है,
पूरा समाज है उससे,
वह सबके लिए मणि है।
वह सिया-राम है,
वही राधा-कृष्ण है,
वही मातृ-पिता है।
उससे ही यह धरा, उससे ही हवा,
उससे ही नदियाँ तमाम हैं।
उसकी हर महानता आम है।
ऐ स्त्री तुझे सलाम है।।
ऐ स्त्री तुझे सलाम है।।

वो नारी है...

ऋतु दाधीच
सहायक प्रबंधक
एम ए पी सी, उदयपुर

कभी पुष्पवल्ली सरीखी कोमल,
तो कभी दरख्तों सी मजबूत,
कभी शैल सी अटल अडिग,
तो कभी रेती सरीखी फिसलती सी,
वो नारी है,

ना समझो तो एक अबूझ पहेली सी,
और समझो तो मां की प्यारभरी लोरी सी!
कभी ढेरों आजमाइशों समक्ष डटी सी,
तो कभी कंटक वन में मूर्छित सी,
कभी गीली मिट्टी की सौंधी सी खुशबू वो,
तो कभी वक्त आने पर,
बारूद के उग्र एहसास सरीखी वो,
वो नारी है,

कभी सलिल सी अपंकिल वो,
तो दरकार पड़ने पर सुनामी भी वो।
कभी औरों के लिए संजीवनी सी,
तो कभी खुद के लिए भी वो मरती सी,
कभी वृन्तपुष्प सी सौम्य वो,
तो कभी उसी पुष्प के पीछे छिपे कांटों सी वो,
वो नारी है,

कभी है गृहलक्ष्मी वो,
तो कभी काल कराल काली भी वो।
आजमाइशों की कसौटी पर खरी उतर कर भी,
शिकवे-शिकायतों का बोझ,
दिल पर रखकर हर पल मरती वो,
कभी कपोलों की लाली तले,
कभी अपनी मुस्कुराहट के पीछे,
जाने कितने दर्द है छिपाए,
वो नारी है,

दिल में टीस, आँखों में नमी लिए,
हर तूफान में भी डटी रहेगी वो!
सीरत कभी आँधी जैसी,
तो कभी पुरवाई सी मद्धम,
कुछ के लिए छिछले पानी सी,
तो कुछ के लिए अथाह सागर सी,
कुछ गहरी सी, कुछ प्रगाढ सी,
वो नारी है,

किसी एक सोच के साँचे में नहीं ढलेगी!

मैं नारी हूँ

अंशु
लिपिक
गांधीधाम शाखा

अब लोगों ने मुझे, आंकना शुरू कर दिया है।
उनकी नजरों में, मैं अब भी बर्बाद हूँ क्योंकि।।

मैं अबला नादान नहीं हूँ, दबी हुई पहचान नहीं हूँ।
स्वाभिमान से जीती हूँ, रखती अंदर खुद्दारी हूँ।।

मैं रणभूमि की महाकाली, ना कमजोर, ना बेचारी हूँ।
मैं देवी हूँ, मैं धरा हूँ, मैं हवा हूँ और फिज़ा हूँ।।

सशक्त हूँ, साकार हूँ, इस जीवन का आधार हूँ।
ये बंदिशें, ये बेडियाँ, मुझे ना रोक पाएंगी।।

इरादों को चीरकर, ये खुद ही टूट जाएंगी।
मैं सागर से भी गहरी हूँ, तुम कितने कंकड़ फेंकोगे।

चुन चुन कर आगे बढ़ूँगी मैं, तुम मुझको कब तक रोकोगे।
मैं बोझ नहीं बनना चाहती, मैं सोच से आगे जाउंगी।

तुम तोड़ो तो जंजीर मेरी, मैं जग में नाम कमाऊँगी।।

मैं प्रेम हूँ, मैं पूजा हूँ, मैं ही आस्था और विश्वास हूँ।
तमाम टूटी हुई उम्मीदों की, मैं ही एकमात्र आस हूँ।।

सबको मैंने अपनाया है, सबका बोझ उठाया है।
अपना सब कुछ न्यौछावर कर, हर दु:ख में साथ निभाया है।।

ना रोक सकेगा कोई मुझको, हर जरूरतों से जरूरी हूँ।
मत समझना आधी अधूरी, मैं खुद में ही पूरी हूँ।।

बस इक प्रेम भरी मुस्कान और सच्चे प्यार पे, मैं वारी हूँ।
मैं नारी हूँ, मैं नारी हूँ।।

स्त्री

शालिनी शुक्ला
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्र महाप्रबंधक
कार्यालय, मेरठ

न बांधो किन्हीं बेड़ियों व जंजीरों में
न रोको रीति रिवाजों से

न कहो कि ममता की पराकाष्ठा हो तुम
न कहो कि नारी, बस आस्था हो तुम

न जताओ कि पढ़ने दिया है तुमको
न सुनाओ कि कर्तव्य निभाना है तुमको

न बनाओ श्रद्धा और संयम का पर्याय
न सिखाओ चूल्हे, चौके का व्यवसाय

न सपनों की तिलांजलि को त्याग बताओ
न लक्ष्मण रेखा का डर दिखाओ

न समर्पण की सीमा बताओ
न परमात्मा के सरीखे बैठाओ

रहने दो स्त्री, बस स्त्री
निर्मल, उन्मुक्त, बंधनमुक्त स्त्री

नारी भाव

विमला मीना
व.प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, मुंबई (पश्चिम)

नारी हूं, हां मैं नारी हूं
हम से है संसार सारा,
हम ही जननी हैं,
हम ही ताकत हैं।

नारी हूं, हां मैं नारी हूं
महिला सशक्तिकरण के केन्द्र में
हम ही तपती हैं,
हम ही संघर्ष करतीं हैं,
हम ही तप कर
आत्मविश्वास प्राप्त करती हैं।

नारी हूं, हां मैं नारी हूं
हम ही अर्धांगिनी हैं,
हम ही दुर्गा हैं
हम ही चण्डी हैं।

नारी हूं, हां मैं नारी हूं।

आपके लिए विशेष ....

इंड महिला शक्ति - 555 दिन (जमा खाता)

- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (08.03.2022) पर महिला ग्राहकों और कर्मचारियों के लिए विशेष दर के साथ 555 दिनों की निश्चित परिपक्वता अवधि वाले नए फिक्स्ड मैच्योरिटी मीयादी जमा उत्पाद "इंड महिला शक्ति-555 दिन" को लॉन्च किया गया।
- न्यूनतम 5,000/- रुपए, अधिकतम सीमा 2 करोड़ रुपए से कम।
- ब्याज दर - 7% प्रति वर्ष एवं वरिष्ठ महिला नागरिकों के लिए अतिरिक्त 0.50% प्रति वर्ष।

एसएचजी शक्ति (ऋण उत्पाद)

- कृषि से संबंधित गतिविधियां जैसे मछली पालन, मधुमक्खी पालन, कुक्कुट, पालन, पशुधन, पालन, ग्रेडिंग, छंटाई, एग्रीगेशन, एग्रो, इंडस्ट्रीज, डेयरी, फिशरी, एग्री क्लीनिक और एग्री बिजनेस केंद्र, खाद्य और कृषि प्रसंस्करण, आदि सेवाओं से संबन्धित कार्यों के लिए स्वयं सहायता समूहों को दिया जाता है।
- बिना किसी संपार्श्विक प्रतिभूति के प्रत्येक समूह को रु. 10.00 लाख से अधिक और रु. 20.00 लाख तक की ऋण राशि, क्रेडिट गारंटी कवरेज के साथ।

एसएचजी निर्मल (ऋण उत्पाद)

- मौजूदा एसएचजी के लिए उपलब्ध है।
- WASH (वॉटर, सेनिटेशन, हाईजीन) संबंधी गतिविधियों के लिए।
- प्रति समूह रु. 20,000/- से रु. 3.00 लाख तक।
- ओवरहेड पानी की टंकी और शौचालयों के निर्माण।
- सैनिटरी नैपकिन निर्माण इकाइयों की स्थापना के लिए दिया जाता है।

एसएचजी गृहलक्ष्मी (ऋण उत्पाद)

- कम से कम 1 वर्ष और उससे अधिक की अवधि से सक्रिय / अच्छे ट्रैक रिकॉर्ड वाले स्वयं सहायता समूह जो आर्थिक गतिविधियों में सम्मिलित हैं।
- समूह के 18 से 60 वर्ष की आयु वर्ग के सदस्यों के लिए।
- आवेदक के पास टाइटल डीड/पट्टा पासबुक/कानूनी रूप से वैध दस्तावेज/उपयुक्त राजस्व प्राधिकारी द्वारा जारी आवंटन पत्र होना चाहिए।
- अधिकतम ऋण सीमा रु.1,00,000/- प्रति सदस्य।

इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD
आपका अपना बैंक, हर कदम आपके साथ
YOUR OWN BANK, ALWAYS WITH YOU

PRADHAN MANTRI JAN-DHAN YOJANA
MERA KHATA BHAGYA VIDHATA

Azadi Ka Amrit Mahotsav

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

आईबी एमएसएमई सखी (ऋण उत्पाद)

- महिला एसएचजी सदस्यों को उद्यमी बनने में सहायता प्रदान करने के लिए यह ऋण सुविधा है।
- यह सुविधा निर्माण/कारोबार/सेवा इकाइयों को स्थापित करने के लिए दिया जाता है।
- समूह के 18 से 65 वर्ष की आयु वर्ग के सदस्यों के लिए।
- अधिकतम ऋण सीमा रु. 4,00,000/- प्रति सदस्य।

मुद्रण दिनांक : 06.03.2023

कॉर्पोरेट कार्यालय: 254-260, अव्वै षण्मुगम सालै, रायपेट्टा, चेन्नै - 600 014
1800 425 000 00 www.indianbank.in हमें फॉलो करें: